मासिक ई-पत्रिका | भोजपुरी | 2015 जुलाई, अंक 6

आखर

एगो डेग भोजपुरी साहित्य खाति

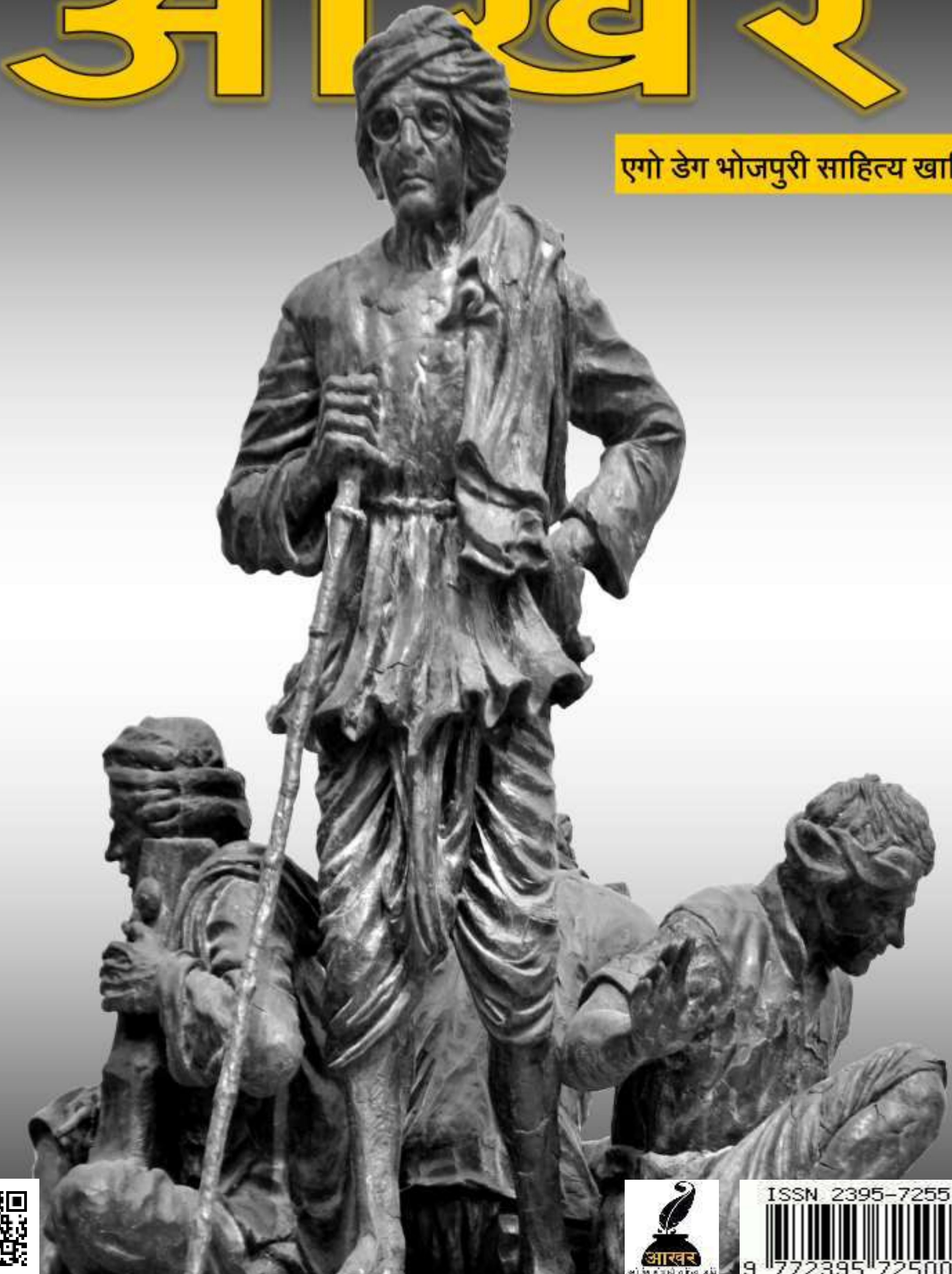

ISSN 2395-7255
9 772395 725004

प्रकाशन / संपादन मंडल :
संजय सिंह , सिवान
देवेंद्र नाथ तिवारी , वर्धा
शशि रंजन मिश्र , नई दिल्ली
नबीन कुमार , दुबई

तकनीकी -एडिटिंग, कम्पोजिंग
अश्विनी रूद्र , न्यू यॉर्क
अनिमेष कुमार वर्मा , अबू धाबी
छाया चित्र सहयोग
स्वयम्बरा बक्सी , पी. राज सिंह,
चेतन कुमार

आखर पता
ग्राम पोस्ट- पंजवार (पोखरी)
सिवान , बिहार 841509
क़ानूनी सलाहकार
ललितेश्वर नाथ तिवारी , पटना

ISSN: 2395 –7255

आखर

वर्ष: 2015, जुलाई । अंक 6 । **ई - पत्रिका**
सब पद अवैतनिक बा।

गजलगोई के कसौटी पर रंगमहल
गुरचरण सिंह

लोकगीत मे बरखा रितु
राजगृह सिंह

जिनगी नरक हो गईल बा
प्रमोद कुमार तिवारी

बतकूचन
सौरभ पांडे

लय आ भोजपुरिया
उदय नारायण सिंह

सेनूर
बृजभुषण चौबे

समीक्षा : लोक-नाटक "बेटी वियोग"
मुन्ना कुमार पांडे

भिखारी ठाकूर
अतुल कुमार राय

परामर्श मंडल
प्रभाष मिश्र , नासिक
अतुल कुमार राय , बनारस
धनंजय तिवारी , मुंबई
चंदन सिंह , पटना
बृज किशोर तिवारी , सोनभद्र
सुधीर पाण्डेय , दुबई
पंडित राजीव , फ़रीदाबाद
अजित तिवारी , दिल्ली
अमित मिश्रा, डुमराव

प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरुरी नइखे की संपादक के विचार लेखक के विचार से मिले । लेख पे विवाद के जिमेदारी लेखक के बा।

संपर्क : आपन मौलिक रचना , लेख ,कविता , फोटो , विचार आखर के ईमेल-आईडी aakharbhojpuri@gmail.com पे भेज सकेनीं। सुविधा खातिर रचना हिंदी यूनिकोड में ही भेजीं।

मुख्य पृष्ठ छाया/आवरण : अनिमेष कुमार वर्मा , पी. राज सिंह

www.aakhar.com | facebook/Aakhar | Twitter: @aakharbhojpuri

आखर के फुलवारी

आपन बात :	आखर जमात	4
बतकूचन :	सौरभ पाण्डेय	5
सामंजस्य :	समता सहाय	8
बिदेसिया के पाति – 6 :	निराला	9
भिखारी ठाकुर के रामसुहाग सिंह जी से बतकही :	निराला (प्रेषक)	10
कुरीति के खिलाफ लोक जागरण के नाटक 'बेटी वियोग':	मुन्ना पाण्डेय	13
भिखारी ठाकुर :	अतुल कुमार राय	17
लोकगीत में बरखा रितु :	प्रो॰ राजगृह सिंह	19
बख़रा :	अजित कुमार तिवारी	22
लाल ईंटा :	अश्विनी रुद्र	24
मंगल पाण्डेय : सपूत माँ भारती के :	जलज कुमार अनुपम	29
का सांचो हमनी के जिनगी नरक हो गइल बा ? :	प्रमोद तिवारी	31
परमवीर– शहीद "अब्दुल हमीद ":	आखर परिवार	33
दंगा (लघुकथा) :	डा॰ उमेश जी ओझा	34
तुलसीदास: तुलसी-जयन्ती आ अपना बचपन से जुडल संस्मरण :	ज्योत्सना प्रसाद	35
दू गो कविता :	चंद्रभूषण पाण्डेय	38
मुसमात भईल भोजपुरी :	नुरैन अंसारी	39
बाउजी के डायरी (पन्ना-2) :	अनिमेष कुमार वर्मा	40
जे छूटल बिकास के धारा बा :	प्रभाष मिश्र	42
सावन :	मनोरमा सिंह	43
लय आ भोजपुरिया :	उदय नारायण सिंह	45
भोजपुरी लोक साहित्य, संस्कृति आ कजरी :	देवेंद्र नाथ तिवारी	47
सावन महीना के विशेषता :	प्रमोद कुमार पूरी	49
दिल, जब बच्चा था जी (भाग-6) :	बृज किशोर तिवारी	50
चंट :	अनूप श्रीवास्तव	51
भोजपुरी भाषा हमार माई, लजाई काहे :	निरंजन कुमार मिश्र	52
सेनूर :	ब्रिज भूषण चौबे	53
दू गो छंद :	गणेश जी बागी	55
गंजेड़ियन के दाशा :	पी॰राज सिंह	56
दू गो लघुकथा :	केशव मोहन पाण्डेय	57
सोशल मीडिया प लोकविधा कह-मुकरी :	पीयूष द्विवेदी रतीय	59
मिड डे मिल त्रासदी देने एक नजर :	गौरव सिंह	61
समीक्षा (तहरे नाम: संगीत आ साहित्य के संगम :	देवेंद्र नाथ तिवारी	65
समीक्षा (गजल संग्रह: तस्वीर ज़िन्दगी के) :	सौरभ पाण्डेय	67
समीक्षा (गजलगोई के कसौटी पर रंगमहल) :	डा॰ गुरुचरण सिंह	70
यात्रा वृतांत: हमार पहिलका पहाड़ के ट्रैकिंग : सरकुंडी दर्रा (अंतिम भाग) :	रौशन कुमार	76
हथेली में समय –5 :	अनिल प्रसाद	82
राउर बात :	आखर के ओर से	83
निहोरा :	आखर के ओर से	84

आपन बात

कलाकार के हृदय के हलचल केहू जान पावेला ? शायद तब ले ना, जब ले उ हलचल साहित्य संगीत आ अभिनय के रुप में सामने ना आ जाव । हजामत बनावेवाला भिखारी ठाकुर के परम्परागत पेशा आ साहित्य सृजन के बीचे दूर-दूर तक कवनो सम्बंध ना रहे । जजमानी व्यवस्था एगो खास काम देले रहे आ आजीविका के प्रबंध भी कइले रहे । दोसर काम करे के ना त अनुमति रहे ना अपेक्षा । एह ताना बाना में भिखारी बाबा कइचीं-छूरा पलानी के बाता में खोंस के सियाही में बुड़ल कंडा उठवनी । एक बेर जब कंडा उठ गइल त रुकल ना । आखर-आखर जोड़ के एगो नया कइचीं-छूरा बनवनी जवन साहित्य के लचीला लोहा पर घीस-घीस के धार पवलस । एक बेर फेरू हजामत बने के शुरुआत भइल । हजामत सामाजिक कूरीतियन के, हजामत सामाजिक ढकोसलापन के, हजामत व्यक्ति के भ्रम के आ मरल संवेदना के भी।

हर दौर में साहित्य के एगो सीमा रहल बा । लोक साहित्य स्थानीयता के घेरा से बहरी निकलो एकरा खातिर बहुत जतन करे के पड़ेला । भिखारी बाबा नाचमंडली बनवनी आपन बात जन-जन तक पहुँचावे खातिर । पैर में घुँघरू बांध के मंच पर थिरकत सूत्रधार जब बिदेशिया के प्यारी सुंदरी के व्यथा के शब्द देत रहे त आसमान के करेजा फाट जात रहे । बाहरवाँसु मरदन के मेहरारू सन के आँखि से गंगा जमुना के धार फूट जात रहे -

पिया कहलन बहरा जाईब, कुछ दिन में घुमि के आईब,
आरे रामा शुकवा उगल तब गइले भागि हो राम !
तब से ना नींद आवेला घर ना अँगनवा भावेला,
ए रामा एहि सोंचि मनवा भइल बा पागल हो राम !!

भिखारी बाबा उहे लिखनी जवन देखनी । जनम से मेहरारू लोग से संवाद करे के आजादी मिलल रहे । नारी के हर रुप के सहजे दर्शन भइल । त्याग आ समर्पण के रूप, तड़पत बिरहिन के रूप , छल-प्रपंच से भरल रूप आ जरुरत पड़ला पर रौद्र रूप के भी बहुत करीब से देखनी भिखारी बाबा । बाद में ई सब भाव उँहा के नाटकन में साफ-साफ नजर आइल । हरेक नाटक समाज के कवनो ना कवनो यथार्थ के जीवंत दस्तावेज रहे । तबे त लोग भिखारी के भिंजल आँखि के कोर देख के रोअल, तबे त हास्य कलाकार के मंच पर आवे से पहिलहीं देखे वाला के चेहरा पर मुस्कान तैर जाव, तबे त बेमेल विवाह करे वाला लोग महफिल में बैठे से कतरास, तबे त लोक संस्कृति के देखावेवाली नाचमंडली सम्भ्रांत वर्ग के सिनेमा टॉकिज पर ताला लगवा दिहलस । 10 जुलाई के एह सांस्कृतिक योद्धा के पुण्यतिथि हS । नमन एह महान आत्मा के, पुष्पांजली भोजपुरिया धरा के महान सपूत के । उँहा के ना रहला से जवन शून्य उत्पन्न भइल बा उ कबो ना भरी । भोजपुरिया समाज आज भी आसरा लगवले देख रहल बा कि ई खालीपन भर जाव, लेकिन भिखारी के जगह दोसर के ले सकत बा ?

सोचत सोचत बीतत बाटे दिन रातवा ए सजनी
कतहूँ लागत नइखे पतवा ए सजनी ....

मातृभूमि खातिर आत्म बलिदान करे वाला वीरन के जब-जब नाम लिआई, वीर अब्दुल हमीद के नाम एगो पर्याय के रुप में स्वतः प्रस्तुत हो जाई । 1965 के भारत पाकिस्तान के युद्ध साधारण युद्ध ना रहे । तीन साल पहिले चीन के साथे भइल युद्ध में हमनी के कमजोरी दुनिया के सामने आ गइल रहे । पाकिस्तान भारत के कमजोर समझ के भारत पर हमला कइले रहे । ओकरा इहो भ्रम रहे कि धार्मिक आधार पर भारत के एगो वर्ग ओकर समर्थन करी । उ का जानत रहे कि ओकरा गुरूर के दफन करे खातिर हिंदू – मुसलमान एक साथे मातृभूमि के कवच बनके ओकरा सामने आ जइहें । शत्रु देश के टैंक नाश करेवाला अब्दुल हमीद खाली युद्ध के मैदान जीते वाला मसीहा ही ना रहलन भारत के एकता आ बंधुता के उँचाई देबे वाला एगो देवदूत भी रहलन । भोजपुरिया अपना माई के, अपना माई भाषा के आ अपना धरती माई के सम्मान खातिर अपना प्राण के आहूति देबे में आपन शान समझेला । उ ना हिंदू होला ना मुसलमान । अपना माई के संतान भर होला । धरती माई युग युग तक गर्व करिहें एह बेटा पर आ इतिहास इतराई वर्तमान के प्रेरणा दे के ।

आषाढ़ के महीना उमंग आ उल्लास ले के आवेला । हरियाली के आवरण से सजल प्रकृति के श्रृंगार देखल बनेला । धरती के गोदी में खरीफ के फसल खेले लागेला । किसान के सपना बदरी के झुंड देख के जनम लेला, बारिस के बूंद से जवान होला आ झमाझम पानी से परवान चढ़ेला । बैलन के गला के घण्टी भले आज कम सुनाव बाकिर जन-जन के हिया के हुलास ओहि उफान पर रहेला । लइकन के “एक मुट्ठी सरसों पीट-पीट बरसो” आ जवानन के “धनिया हम त बनब किसानवा तू किसानिन बनिहS ना” एहि आषाढ़ में स्वर लेला । प्रियतम के बाट देखत प्रेयसी त चित्कार उठेले-

“आवेला आषाढ़ मास लागेला अधिक आस, बरखा में पिया घरे रहितन बिदेसिया ।“

बहुत कम समय में रउआ लोगिन के स्नेह पा के “आखर” के एगो खास पहचान बन गइल बा । राउर स्नेह मिलत रही एहि विश्वास के साथे प्रस्तुत बा “आखर” के जुलाई अंक ।

www.bhojpurisahityangan.com

बतकूचन...

चहओ के मड़इया प गोसाईंजी के देहिये भर ले रहे, मन त रहि-रहि हेने-होने परात फीरे। दू दिन से ऊ तनि बेसिये अनमनाइल रहले। ढेर कऽ के काल्हु के कचहरी प के नारा-प्रदर्शन के बाद से उनकर मन तनिका बेसिये अनमनाइल घुमरी पारऽता। बाकी कहाला नू, 'जइसे उड़ि जहाज के पच्छी, पुनि जहाज पर आवे', गोसाईंजी मुड़िया झटाकरत, होसगर भइल, अपना हाथ के अखबरवा सोझा फइला देसु। बाकि एकही चीजुआ कतना चाटसु ? ओही लगले ओह के फेर बटोरियो देसु। गोसाईंजी के एह अनमनाइल दासा प बिसेसर हजाम से ना रुकाइल - "काहें जी गोसाईंजी ? मनवा काहें अबहिंयो दतुअन कऽ रहलबा ? निकहा तीन हाली चाह त भेंटा गइल बा ! अब का ? .. का हो सावजी ?.."
"ना चुप रहबऽ ? जा देखऽ होने दोकानी प गहँकी आइल बा.."

बिसेसर हजाम लमहरे टापत अपना कटरा में अमा गइले। अब चाहवाला बुढ़ऊ सङे गोसाईंजी के अलावा मड़इया में केहू ना रहे। एक सुरुआते से जिनिगी के तिटंगा ठेला हींचत-हाँचत नन्हकू अपना उमीर से दस बरीस अधिका, मने बासठ -पैंसठ से कम ना बुझासु। दू बरिस भइल, उनकर चश्मवा के एगो डाँड़ी टूटि गइल रहे, तबहीं से ओकरा जगहा करियक्का मोमिया सूता बन्हाइल बा।

"का सावजी.. कुछऊ बदलल ?" - गोसाईंजी नन्हकुए के अपना विचार में सनले, जबकि उनका निकहे पता रहुए जे ऊ पुरान भकचोन्हर हवे।

"अब का बदली जी ?.. का बदले के बा ? इन्द्राजी त मरा गइली.."

गोसाईंजी जवाब के हेई भदेसी अस्तर सूनि के एकदम्मे झटका खा गइलन। तबहूँ सम्हरत ओही सुरिये बोलत गइलन - "..गली-मोहल्ले गाँवें-जवारे बेकाहा सोर भइल रहे.. जे अबकी बेऽऽऽर..?" आकि, अपनहीं दू छन रूकि के लगलन उचारे - "अबकी बेर घेंवड़ा ! सूथनी ! थसकत कोंहँड़..!.. अबकी बेर इंङोर.. लुआठ.. ऊहो धधकत..! .. नास दिहले सऽ.."

बाकिर, नन्हकू निर्लिप्त। गोड़ बटोरले कपार प बायाँ हाथ टेकले, माटी के चुल्हानी में ऊ जरत कोइला सहियावे में लागल रहले। हेने गोसाईंजी परियार के जाने कतना कूल्हि के इयादि पारत भँवरी-चकरघिन्नी भइल रहले। भँवरिया तनिका अबर भइल त एक बेरि कुहुकले - "का होऽऽ, अबकी बेर..! का सावजी, फेर-फेर...?"

"..सियार तरकुल तर जइहें..?" - नन्हकू बे आगा-पाछा बुझले चट दे गोसाईंजी के दही में सही मिला दिहले।
"नाः, कबो ना.." - नन्हकू के ई बेलूरा तुकबन्दी जाने काहें गोसाईंजी के अबकी बेर बाउर ना लागल। ऊ ओही सुरिये बोलत गइले - "..कूल्हि सरवा लेवा में लुकाइल पोइया हवे स.. पोइया ! पोइयाऽऽ.. साँप के बाच्चा ! .. कवनो जिला बाँचल नइखे जहवाँ पऽरसाल लोग उपऽटि के 'फूल' प ना एकवटियाइल होई ?.. बाकिर, जवन कुछ ना अब लउकऽता, कहे लाएक नइखे !.."

अब्बे बुझाइल जे गोसाईंजी के अनमनाइल मन के हावा कहवाँ गुम्मी थमले रहे ! खुलले ना खूलत रहे। ना केहू भेंटाइल त नन्हकुए सही, भला हावा त खूलल !

नन्हकू अपना गहँकी के बहस-मुसाहिबी में ढेर ना परसु। एह बात प ऊ पूरा 'काम से काम, अतने से राम' के मत के हवे ! आ बोलबो का करसु ? पुरान मनई, आजकाल के

सौरभ पाण्डेय

सौरभ पाण्डेय जी के पैतृकभूमि उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद के द्वाबा परिक्षेत्र हऽ। रउआ पचीस बरीस से सपरिवार इलाहाबाद में बानीं। पिछला बाइस बरीस से राष्ट्रीय स्तर के अलग-अलग कॉर्पोरेट इकाई में कार्यरत रहल बानी। आजकाल केन्द्रीय सरकार के परियोजना आ स्कीम के संचालन खातिर एगो व्यावसायिक इकाई में नेशनल-हेड के पद पर कार्यरत बानी। परों को खोलते हुए (सम्पादन), इकड़ियाँ जेबी से (काव्य-संग्रह), छन्द-मञ्जरी (छन्द-विधान) नाँव से राउर किताब प्रकाशित हो चुकल बाड़ी स। साहित्य के लगभग हर विधा में रउआ रचनारत बानीं आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनो भासा में समान रूप से रचनाकर्म जारी बा। साहित्यिक संलिप्तता के दोसर क्षेत्र बा - सदस्य प्रबन्धन समूह ई-पत्रिका,"ओपनबुक्सऑनलाइन डॉट कॉम' ; सदस्य परामर्शदात्री मण्डल त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वगाथा'।

चरफरई उनका ढेर बुझऽइबो ना करे। सोझबक के का बूझल, आ का बोलल ? तवना प ऊँच-खाल, बाउर-गाल कुछऊ भ गइल त अनेरिये के बवाल अलगा ! आ, कवनो दोकानदार-बेपारी काहें केहू के फाँफर में आपन थुथुन ठूँसो जी ? अइसना कइले ओकर चली कबो ? तले त मास्टरजी मड़ऽइया में निहुरत ढुकले - "सावजी, तनिका कड़क बनइतऽ.."

"राम-राम मास्टरसाहेब !.." - ओइसे गोसाईंजी के मास्टर के आइल बहुते नीमन ना बुझाइल, तबो गाँव-जवार के लकम-बेवहार, बोलहीं के परल - "आईं-आईं ! बन्हवा के जमीनिया नपा गइल नू ?"

मास्टरजी ठहरले पुरान जनसंघी। बुला एगो अलगे प्रजाति के हऽ ई लोग। हइसन लोगन से तुर्की-ब-तुर्की जवाब ना मीले ! दू-तीन मिनट में अस्थिराह होत मास्टरजी गोसाईंजी से मुखातिब भइले - "का काल्हु कचहरी प मारि बवाल कटात रहे गोसाईंजी ?"

"महँगाई विकास आ कालाधन के मुद्दा रहे.. कूल्हि कांग्रेसी भाई लोग बिटोराइल रहे उहवाँ.."

"भाई लोग ? उन्हनीं के अब भाई लोग भ गइलन स गोसाईंजी ? माने थेथरवा फेरु से हरियराये प लुबलुबाइल बा का दो ? सहिये कहल बा, सुखियो के हाल्दे ऊ मूए ना !" - मास्टरजी के बोली में तिंताई त जइसे झोंकि के परल रहे। ऊ जवन ना झवँक मरलस जे गोसाईंजी तनतनाइ उठले - "काहें जी ? कवनो मंगल ग्रह से आइलबा का लोग ? मास्टरजी होस राखीं। ई राजनीति हऽ, ई होले त होले, आ ना होखे के होई, त ना होले.. बाकिर, ई नीमन भा बाउर ना होले.. "

"बाह जी बाह ! नवहा चानक्य के नू अवतार भइल बा गाँव में ! मूँहें झरऽ-झरऽ नीति चू रहल बा ! बुला एही से उन्हनीं का पाछा-पाछा काल्हु सूँघत मताइल रहऽ, हऽ कि ना ?"

"हम काहें पाछा-पाछा सूँघत फीरत रहुईं जी ? बोलावल गइल रहनीं हाँ हम.."

"काहें ? उन्हनीं के सपना आइल रहे का ? आकि ब्रहम ज्ञान फूटल रहे, जे जानि गइले सऽ.. गोसाईंजी 'फूल' सूँघत-सूँघत इचिकिये में अघा गइल बाड़े.. आ सालहीं भर में उनका फेर से 'चटकन' खाये के छटपट्टी बरल बा ?"

"हइसे जनि बोलीं जी.. हमहूँ खूब भरोसे से सङे भइल रहनी हाँ 'फूल' के। बाकिर.. छोड़ीं होने.." - तले मास्टरजी के समुझावत गोसाईंजी गहीर अवाज में कहे लगले - "मास्टरजी, का रउओ अनेरिया बके लागेनीं ! ऊ 'चटकन' आ 'थपरा' मारे के तलहत्थी हऽ ? .. नाऽऽ, पंजा छाप हऽ.. पंजा छाप !"

"छोड़ऽ तूँ ए गोसाईं !.. साठ बरीस से ई पाटी लोगन के चटकने आ थपरा मारत चलल आवत बीया। देस के कसेत-कसेत पुरान समस्या कूल्हि गिनावऽ, कूल्हि के जरी में एही पाटी के कारिस्तानी मीली। लोग अब बूझि गइल बा। एहीसे ई पंजा-पाटी अबकी घूमि-घूमि चउआलिस गो ले अदौरी पारि सकल। ढेर जनि बहिसऽ.. आ ना त चउआलिस के बाइस होत देर ना लागी ! आ, सालहीं भर में केहू का चाहऽता ? जे, सगरे उड़ासन-पड़ासन हो जाओ ?.."

"रहे दीहीं जी, मुँह जन खुलवाईं.. ढेर अरमान रहे हमरो ! आ एमकी.. सुनींऽऽ.. बाबुओ साहेब के बुझा जाई जे कवन सूरन उपारि लीहें.. तीनि गो ले बिधायक निकाले में भुरकुस निकल जाई ! एमकी संसदिया के बेरा वाला भितरिया लहर नइखे चलत। ओह लहर के बहर एमकी गड़बड़ाइल बा। जवन भरोसा आ साध से ई राज-काज भेंटाइल बा नू, ओही साधे छन दे चलियो जाई.. आ बुझइबो ना करी जे भइल का !.."

"जा ना, गाछे कठहर के सपना देखत बाड़ऽ.. मूँहें तेल घोंसऽ होने.. जाः !" - आकि अचके में मास्टरजी के सुर बदल गइल। ऊ अपना बोली के निकहे ओद करत गमे-गमे लगले उकरे - "गोसाईंजी छोड़ीं ई कूल्हि.. ई कूल्हि त राज-काज हऽ, होते रही.. तनि क्रिस्नवा से कुछु गोटी भिंड़वाईं ना !.. लल्लन राय के पुरवा के कुशवाहा हऽ.."

"कवन क्रिस्ना.. लेऽखपाल ?"

"हँ जी, ऊहे.. लेखपाल क्रिस्ना सिंह कुशवाहा ! अबहीं सरवा माछियो नइखे बइठे देत अपना मुँह प.. सूने में आइल बा जे घाघ कांग्रेसी परिवार के हऽ.. पुरान खेलाड़ी हवे स इन्हनीं के.."

"ए महराज, तब का तेवर नधले रहनीं हाँ रउआ जी ? आवते रउआ से हम जमीनिये के नू पूछनीं हँऽ..?" - ई कहत गोसाईंजी अपना बोली के बात-बेवहार के सुर प टाने लगलन -

"मास्टरजी, खारचा-पानी लागी, रोड प के जमीन हऽ.. तवना प ईहे हाइवे घिंचाई.. "

"काहें ना..? हम कहवाँ 'राम-रहीम' कुछऊ कहि रहल बानीं ?"

"त अबहीं कुछु दीहीं बगली में.. तबे नू आगा परी राह जोहाई.. भेंट भइला प आगा बताइब, जे कतना ले लागी.."

गोसाईंजी के अनमनाइल मन आजु तीनि दिन प मनसाइन भइल रहे। बगली में हरियरी पटऽइला के कमाल हऽ ई कूल्हि !

त ई हऽ आजु के भोजपुरी समाज ! पउआ, पहुँच, सलामी के सीढ़ी बन्हले कतना ना नेता लोग पाटी आ पोल्टिक्स के नाँवें छानत फूँकत आपन-आपन जिनिगी काट रहल बा ! नेता

www.bhojpurisahityangan.com

माने काम करवावे वाला । ऊँच-नीच, फूहर-पातर कुछऊ करवावे के होखे। नेता नीति के बात नइखे बतियावत अब, ऊ खलसा काम करऽता आ करवावता। काम - नीमन कम, बाउर ढेर । जे जतना बाउर करवावे में सक जाता, ऊ ओतने बड़ नेता कहाता ! माने ऊ सोझ दलाल हऽ ! भा, ई कहि सकेनीं, जे दलालन के आजु खूब निकहा इजतगर नाँव भेंटा गइल बा - 'नेता' ! गाँव-गाँव के लइका 'नेता' बने के फेरा में मताइल बाड़े सऽ। कवनो ढङे मीलो, बाकिर, 'पावर' मीलो। एही लालच में युवा पीढ़ी मताइल बीया। एही हावा में रसल-रचल, भोजपुरिहा लोगन के जिनिगी पीयर-पातर होत बीत रहल बा !

संस्था, ट्रस्ट, मंच, समिति.. रउआ नाँव धरीं, मुट्ठी के छितराइल राई अस गाँवें-कस्बे लउक जइहें स। भ्रस्टाचार के नाँवें त मोहल्ले-मोहल्ले संस्था ठाढ़ बाड़ी सऽ। जबकि सच्चाई ई हे बा, जे भोजपुरिहा इलाका भ्रस्टाचार के सरापे आजु पछाड़ खात छपिटा रहल बाऽ । अतने ले ना, साहित्य कहीं, भासा कहीं, कला कहीं, लोक-परम्परा कहीं, माने, रउआ फ़ील्ड बताईं, 'अखिल भारतीय' भा 'भोजपुरी' उपसर्ग लगवले संस्था मीलि जइहें स । खलसा खाये-कमाये के धंधा में लभराइल संस्था ! सभके कपार प राजनीति चढ़ल बा। सभ केहू जानेला, जे साहित्य आ राजनीति अलगा-अलगा प्रवृति के क्षेत्र हवे सऽ। दूनो के पहुँच आ बेवहार में बड़ा भारी अंतर बा। पुरान जमाना नइखे आजु, जब साहित्यकार के राजनीति आसन देत रहे। अब राजनीति साहित्य के दूहत उपयोग करेले। तबहूँ ढेर लोग राजनीति आ साहित्य, दूनो के मजा सङहीं उठावे के फेरा में रहेले। कहलो बा जे कवनो बिथुकल थाकल समाज आपन सभ उमेद राजनीतिये से जोरि के देखेला। एगो विशेष 'वाद' के तहत त हई सीखल युवा बड़ हो तारे, जे बेवहार आ बेवस्था के कूल्हि रास्ता राजधानी से होके जाला। बेजाईं ना, जे कला-साहित्य-भासा-परम्परा के मंच प दिल्ली, पटना, लखनऊ, बनारस के अइसन ढङ से चरचा होला जे ई शहर-नगर ना हो के शासक के कार्यपालक प्रतिनिधि हवे सऽ। केहू के निष्ठा कवनो राजनैतिक दल से होखी, त ऊ ओह दल के मूलभूत विचार से ढेर फरिका जाइये ना सके । अइसना जाना के घाँटी अपना पाटी के खिलाफ फूटिये ना सके, चाहे ओह पाटी में अनीति के धुरखेल काहें ना चलत होखे। चाहें ऊ साहित्यकार जाना साहित्य आ बेवहार के नाँवें जतने सिद्धांत झारसु ! आ, मजा ई जे आपन पाटी के धुरखेल प आँखि मूँदल मनई आपन अँङुरी दोसरा पाटी प खूब मजगरे तनले लउकेला। अइसन लोग जतना हाल्दे साहित्यकार वाला चोला उतार बीगो समाज प ओतने कल्यान होखी। आ, अइसना लोगन से निहोरा बा जे ऊ लोग सोझ-साँच राजनीति सुरु करो । झुठकाहा बुद्धिजीवी के ढोंग से समाज ढेर लसराला। कवनो बेजाईं ना जे भोजपुरिहा समाज आजु लसर रहल बा। भासा के प्रभुत्त्व के ले के जतना चीख-पुकार भोजपुरी मंचन प मचेला, ओकर उदाहरण ना मीली। बाकिर, राजनीतिक तौर प सबसे गरीब असहाय छँटुआ छोड़ल भासा भोजपुरिये हऽ । काहें ? अउरी सूनीं, फलनवा भोजपुरी खातिर काम त करऽता, बाकिर, हमार पाटी के ना हऽ एहसे हम ओकरा सहयोग ना देब। माने जय भजीं ! अब बताईं, इइसना प एकजुट कोसिस कइसे होखी ? बलुक राजनैतिक पाटी आ पंथ-जमात के नाँवें सभे आपन-आपन गोटी ले के, आपन-आपन पारी खेले में लागल बा। आम-जनता के अइसन लोगन में अपना भासा भा परम्परा के लड़ाई लड़त कार्यकर्ता त लउकते नइखे, लउकियो न सके, काहें जे, आम-जनता के त लउकऽता अलगा-अलगा राजनैतिक पाटी के खाँटी सदस्य ! कवनो अलगा पाटी के सरकार कवनो दोसरा पाटी के सदस्य के बात काहें सूने जाओ ? सरकार से त ई लोग निर्पेक्ष भाव आ बर्ताव के उमेद करेला, बाकिर, अपने पाटी-पाटी खेले में लागल बा लोग ! अक्सरहाँ मठन आ संस्था के कर्ता-धर्ता कवनो ना कवनो पाटी से जुड़ल बा। इइसन लोगन के आँखीं अगर देखल जाओ त सउँसे समाज के लोग कवनो ना कवनो पाटी के तरफ़दारी करत बा। छोट मन के निकहा घटिया सोच हऽ ई। केहू अगर मन आ दिल से साहित्यकार होखी, त ऊ खलिहा आमजन के सुख समृद्धि आ हीत खातिर बोली। कवनो पाटी के माउथपीस अस पेट भरला के ढेकार ना पारी । कवनो ईमानदार साहित्यकार होखी, त ऊ दलगत राजनीति से ऊपर होखी। अइसन नइखे, त ओह साहित्यकार के ढेर कुछ संयत करे के बा। ऊ भारतीय जमीन आ परम्परा से आपन बात ना उठा के 'विदेसी सिद्धांत' के सिखावल विन्दु के आधार प आपन बुद्धि चलावता । कवनो साहित्यकार राजनैतिक विचारधारा से ढेर ऊपर होला। होखहीं के चाहीं। बाकिर, भोजपुरिहा समाज प एक हाली नजर फेर लीहीं। साहित्यकार लोग छोड़ीं, लोकतंत्र के चौथा अस्तम्भ कहात पत्रकारन के नाँव प ठग कूल्हि खेल कऽ रहल बाड़े स।

फालतू-बेफालतू हतना आईं-बाईं एक सुरिये सोचत-गूनत-मथत मन थहराए लागल । आँखि प बुझाइल जे गाझिन के गाझिन मधुमाछी भिनभिनातारी सऽ। मनओ निनियाइल अस एक लहजे में बुझाइल जे बूड़त चलल जा रहल बा - "का देवता, सबले निमनका का नन्हकुए साव नू ? कुछ लेना न देना

www.bhojpurisahityangan.com

मगन रहना ? चाह-बिस्कुट, बिस्कुट-चाह करत चुपचाप घींचले जा रहल बाड़न.. को नृप होहिं हमहीं का हानी.. करत !"

अचके में बुझाइल जे केहू रेघारी पारि रहल बा। तन्द्रा टूटि गइल । साँचहूँ नन्हकू हींचत पूछत रहले - "का पण्डीजी, निनियातानी का ?"

"हँ हो.. आँखि मुँदाये लगली हा सऽ.."

"ई आली चीनिया ठीक बीया नू ? नवका खेप के हऽ.."

जाने काहें ई सुनते दूनो आँखि लोराए लगली सऽ । ऊ आगा बहे का लागो, हम चट दे पहिलवें "हँ, ए सावजी.." कहत मड़ई से बहिरी निकल गइनीं - "एह समाज में जवन चीनी के जरूरत बड़ुए, ऊ चीनी कब लावल जाई ए रामजी ? रच्छा करिहऽ हो, हे सुदिष्ट बाबा !

सामंजस्य

सूरत में बहुत धनाढ्य पारसी लोग बाड़े । एगो निमंत्रण मिलल बहु-भोज के। कार्ड के साथे मेनू कार्ड भी रहे -वेज-नॉनवेज ,ड्रिंक ,सूप सब टिक लगाके मेनू कार्ड वापस कर देवे के रहल। हमरा बुझाइल ना कि इ आधुनिकता ह कि बचत। कहल जाएला कि पारसी पार्थिव शरीर के भी ऊँचा पहाड़ पर छोड़ देवेलन कि शरीर पशु- पक्षी के काम आ जाए। ओईसे कदम-कदम पर विलासिता झलकत रहे, पर कही अपनापन ना। एक औपचारिकता मात्र।

हमनी किहा बहु-भोज ना होखे तिलक में ही खियावे के व्यवस्था रहेला। टेन्ट गिर जाई मरकरी लाग जाई। स्कूल वाला बेंच लगा दिहल जाई लाइन से। मेनू के कौनो दिक्कत ना- दू तरह के तरकारी, पूड़ी, बुनिया, दही, काला-जामुन।परोसे खातिर टोला के लड़िका काफी बा। सूप ड्रिंक के झंझट ना बाल्टी में शर्बत घोराई एक भाव से सभे पिहि। पत्तल त गिनाईबे ना करेला जेतना लोग के मन करे ओतना लोग खाए। भले पूड़ी गिना जाला फलनवा चालीस गो खा गईलन।

गाँव से लेकर जवार तक सब जगह नेवता जाई। भीड़ एतना उमड़ी कि तीन पाँत के बाद विचार-विमर्श करके एगो तरकारी रोक दिहल जाई। अब बारी-बारी से तरकारी चली। अब इ सिलसिला सुबह चार बजे ले चली। अब ध्यान देवे वाला बात बाटे कि अंत में बस पूड़ी बुनिया बाच जाई अउर परोसे वाला भी थाक जइहें। अब खाए वाला अपने पत्तल लीहें अउर पूड़ी बुनिया लेकर खाए बइठ जइहें पर उनका कौनो शिकायत ना रही काहे कि उ पहिलका पाँत के दू तरकारी पूड़ी खाके दूसरका के एक तरकारी के मजा ले लिहले रहलन अउर आखिरी के पूड़ी बुनिया पर विजयी मुस्कान के साथ आपन पेट अउर नींद के विराम दे दीहें।

समता सहाय

सिवान, बिहार के रहे वाला समता सहाय जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। इहाँ के लेखनी में व्यक्तिगत अनुभव के बहुत कुछ पढ़े के मिलेला। गायन के क्षेत्र में भी समता जी के नाम बा। अभी इहाँ के दिल्ली में रह रहल बानी।

बिदेसिया के पाति-6

निराला

एक जनवरी 1965 के बात बा। दिन के एक बजे भिखारी ठाकुर के 77वां वर्षगांठ के मोका पर कलकता के पूर्वी सीमांत इलाका धापा के श्री सत्यनारायण भवन परिसर में भव्य अभिनंदन समारोह भइल रहे। अभिनंदन समारोह के बाद संत जेवियर कालेज रांची के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो रामसुहाग सिंह जी भिखारी ठाकुर के साक्षात्कार लिहलीं। ई साक्षात्कार भइल बाकि उ रामसुहाग बाबू के कापी में ही बंद होके रह गईल रहे। बहुत बरिस बाद अश्विनी कुमार पंकज जी एह के 1987 में बिदेसिया नाम से पत्रिका निकाल के एह के छपलीं।

अश्विनी पंकज रांची के रहनिहार हईं। मूल रूप से मगही भाषी। रंगकर्मी, पत्रकार, लेखक, कवि,उपन्यासकार हईं आउर लोक भाषा के लड़ाई लड़ेवाला एगो योद्धा। आदिवासी भाषा के उत्थान आउर ओकर हक दिलावे में उनकर भूमिका बहुत महत्वपूर्ण मानल जा रहल बा। जोहार सहिया, जोहार दिसुम खबर जईसन अखबार आउर पत्रिका के संपादक हईं। अश्विनी पंकज के अभी हाल में भिखारी पर एगो किताब रंग बिदेसिया नाम से आईल बा। एह किताब में बिदेसिया पत्रिका में छपल लेखन के संग्रह बा आउर बाद के कुछ जोड़ल लेख। 1987 में जब ई पत्रिका के निकाले के शुरुआत उहां के कईले रहली, ओह घरी उहां के एमए में पढ़त रहली। भिखारी ठाकुर के जन्मशति वर्ष के मौका रहे बाकिर पटना से लेकर रांची तक सन्नाटा रहे। भिखारी ठाकुर के नांव त भंजावत रहे लोग बाकि उनका के जन्मशति वर्ष पर इयाद करे के फुर्सत केहू लगे ना रहे। तब अश्विनी रांची में दुई दिन के आयोजन कई के भिखारी ठाकुर के इयाद कइले रहलीं। ओह आयोजन में एह साक्षात्कार के करेवाला रामसुहाग बाबू भी भाग लिहले रहलीं। ओही मौका पर अश्विनी पंकज बिदेसिया नाम से पत्रिका निकाले के भी शुरुआत कईनी, बाकि विद्यार्थी जीवन के आपन परेशानी के कारण दुई अंक ही निकाल पवनी। एक प्रवेशांक आउर दोसरका अंक में बंद करे के घोषणा। लेकिन ओकरा बाद अश्विनी लगातार भिखारी ठाकुर के समझे के कोशिश में लागल रहले। अश्विनी जी के कहनाम बा कि ओह घरी उहां के जगदीश चंद्र माथुर के एगो लेख पर नजर गइल रहे, जवन साप्ताहिक हिंदुस्तान में छपल रहे। ओह लेख के पढ़ला के बाद भिखारी ठाकुर के प्रति उनकर दिवानगी बढ़ल आउर फेरू उहां के सब जगह लोगन के संपर्क कई के भिखारी पर लिखवावे शुरु कईनी आउर पत्रिका के प्रकाशन कईनी। दियारा से लेके पटना आउर आरा छपरा तक दउड़ के लेख के जुटवनी। रांची में आयोजन करेके सोचनी तो कोई भाव ना देबत रहे काहे कि अश्विनी ओह घरी खुदे विद्यार्थी रहले बाकि दुई दिन के आयोजन भइल आउर उ ऐतिहासिक रहल। एह संदर्भ में कि कतहूं केहू आउर आयोजन के चर्चा भी ना होखत रहे।

ई जवन रामसुहाग बाबू द्वारा लिहल साक्षात्कार बा, एकरा में बहुत सहजता बा। आज के हिसाब से देखब तो लागी कि का बतकही करत रहले रामसुहाब बाबू। तनी हई सवाल पूछते, गंभीराह सवाल पूछते। आज के संदर्भ में रउआ ई बात के कह सकत बानी बाकि गौर करेम तो मालूम होखी कि ई इंटरव्यू केतना सहज और निर्दोष तरीका से लेबल गईल बा। सहज सवाल, सहज जवाब। लोकरंग के दुनिया में एकरा के एगो दुर्लभ साक्षात्कार कह सकत बानी। एकरा के पढ़ब तो पता चल जाई कि आपन बुलंदी के दिन में भी कईसे भिखारी अपना बारे में कुछो बढ़ा चढ़ा के ना बखान करत रहन। भिखारी के शायद तबे एहसास हो गईल रहे कि आवेवाला दिन में तमाशाई संस्कृति, लोकरंग के महक आउर चटक रंग आउर धार के खतम कर दी, तबे तो उहां के एगो सवाल के जवाब में कहले बानी कि अगिलका जनम में एही करल चाहेम, ई कवनो जरूरी नइखे, तय नइखे। भिखारी ठाकुर से जब ई पूछल जा रहल बा कि राउर नाटक के का उद्देश्य बा तो उ संकोच नइखन करत। साफ कहत बाड़े कि धनोपार्जन भी एक उद्देश्य बा। एह ईमानदारी पर रउआ गौर करीं, बहुत कुछ साफ हो जाई। एक-एक सवाल पर गौर करीं, जवाब पर गौर करीं, साफ होखी कि भिखारी ठाकुर अपना समय में केतना पेशेवर तौर पर ईमानदार रहले।

निराला, पेशा से पत्रकार, तहलका आ प्रभात खबर खाति लगातार लिखे वाला निराला जी, औरंगाबाद बिहार के रहे वाला हईं। ईंहा के पुरबिया तान बैनर के नीचे भोजपुरी के पारम्परिक गीतन के सहेजे, सरिहारे आ ओह के नया कलेवर मे प्रस्तुत करे में लागल बानी। एह घरी पटना में निवास बा।

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर के रामसुहाग सिंह से बतकही

एह काम के छोड़ के हम एक दिन भी जिंदा नइखी रह सकत: भिखारी ठाकुर

सवालः भिखारी ठाकुरजी, राउर जनम तिथि का बा?

जवाब : सिंह साहेब, 1295 साल, पुष मास शुकुल पक्ष, पंचमी, सोमार, दिन के बारह बजे।

सवाल : राउर जनम स्थान कहां रहे?

जवाब : कुतुबपुर दीयर, कोढ़वापट्टी, रामपुर, सारण।

सवाल : आपके पिताजी के नाम का रहे?

जवाब : दलसिंगार ठाकुर

सवाल : आपके दादाजी के नाम का रहे?

जवाब : गुमान ठाकुर।

सवाल : का राउर बाबूजी पढ़ल-लिखल रहलीं?

जवाब : उहां के अशिक्षित रहलीं।

सवाल : राउर शिक्षा कवना श्रेणी तक भइल?

जवाब : इस्कुल में खाली ककहरा तक, एक साल पढ़लीं। कुछ आईल ना। भगवान नाम के लईका हमके पढ़वलस।

सवाल : राउर बाबूजी के माली हालत कईसन रहे?

जवाब : जमीन आउर दोसर संपत्ति बहुते कम रहे, गरीब रहलें।

सवाल : राउर जमींदार के रहले?

जवाब : हमार जमींदार आरा के शिवसाह कलवार रहले।

सवाल : रउआ संगे उनकर व्यवहार कईसन रहे?

जवाब : उहां के व्यवहार अच्छा रहे।

सवाल : का लईकाई से ही नाच-गान में राउर रुचि बा?

जवाब : तीस बरिस तक तो हजामत के काम करत रहलीं।

सवाल : नाच-गान-कविता में राउर रुचि कईसे भइल?

जवाब : कुछ गाना गावे जानत रहलीं हम। नेकनाम टोला के एगो हजाम रामसेवक ठाकुर हमार गाना सुनी के कहले कि ठीक बा। उहे मात्रा के गणना करे के बतवले। हमरे गांव के बाबू हरिनंदन सिंह सबसे पहिले हमके रामगीत के पाठ पढ़वले।

सवाल : राउर गुरुजी के नाम का रहे?

जवाब- इस्कुल के गुरुजी के नांव इयाद नइखे।

सवाल : रउआ आपन पेशा कब तक कईनीं?

जवाब : तीस बरिस के उमिर तक।

सवाल : का रउआ अपना पेशा के समय में भी नाच गान करत रहलीं?

जवाब : तीस बरिस के बाद नाच-गान के काम कब्बो ना रुकल।

सवाल : सबसे पहिले कवन कविता बनवली?

जवाब : बिरहा-बहार पुस्तक।

www.bhojpurisahityangan.com

सवाल : सबसे पहिले कवन नाटक बनवलीं?

जवाब : बिरहा बहार ही नाटक के रूप में खेलल गईल।

सवाल : सबसे पहिले बिरहा बहार कहां खेलल गइल?

जवाब : सबसे पहिले बिरहा बहार नाटक सर्वसमस्तपुर गांव में लगन में खेलल गईल रहे।

सवाल : का रउआ पहिले भी एह तरीका के नाटक होखत रहे?

जवाब : हम बिदेसिया नाम सुनले रहलीं। परदेसी के बात आदि के पर हम बिरहा बहार बनवलीं।

सवाल : एह तरीका के नाम के प्रेरणा कहां से मिलल?

जवाब : कउनो किताब मिलल रहे, नांव इयाद नइखे आवत।

सवाल : का रउआ छंदशास्त्र के नियम के अनुसार कविता बनाईलां?

जवाब : हम मात्रा जानीलां। रमायण के ढंग पर कविता बनाईलां।

सवाल : राउर लिखल कवन-कवन किताब बा?

जवाब : बिरहा बहार, बिदेसिया, कलियुग बहार, हरिकीर्तन, बहरा बहार, गंगा स्नान, भाई विरोध, बेटी वियोग, नाई बहार, श्रीनाम रत्न, रामनाम माला आदि।

सवाल : सबसे हाल के रचना कवन बा?

जवाब : नर नव अवतार।

सवाल : राउर जादेतर किताब कहां से छपल बा?

जवाब : ई तो किताब के देख के ही मालूम होखी।

सवाल : रउआ विचार से राउर सबसे अच्छा रचना कवन बा?

जवाब : भिखारी हरिकीर्तन आउर भिखारी शंका समाधान।

सवाल : रउआ जब कवनो पुस्तक लिखिलां ता का दोसरा से देखईबो करीला?

जवाब : हां, मानकी साह बाड़े गांवे के, अभी जिंदे बाड़े, उ खाली साफ-साफ लिख देबेले। उहां के शुद्ध-अशुद्ध के ज्ञान नईखे। रमायण के सत्संग बाबू रामानंद सिंह से भइल। श्लोक के ज्ञान दयालचक के साधु गोसांई बाबा से भइल।

सवाल : रायबहादुर के उपाधि रउआ के कब मिलल रहे?

जवाब : रायबहादुर आदि के जे उपाधि हमरा मिलल बा, उ कुल हम नईखीं जानत। का-का उपाधि मिलल, हमरा कुछउ मालूम नइखे।

सवाल : का रउआ विश्वास बा कि केहू राउर उत्तराधिकारी होखी,चाहे मालूम बा कि के उत्तराधिकारी होखी?

जवाब : हमार भतीजा गौरीशंकर ठाकुर हमार रचना पर काम कर रहल बाड़े।

सवाल : राउर संतान केतना बाड़े। राउर लइका का करेलन?

जवाब : एक लइका बाड़े शीलानाथ ठाकुर। घर-गिरस्थी के काम करेले। उनका नाच आदि से कोई रिश्ता नइखे।

सवाल : का रउआ विश्रामपूर्वक जीवन बितावल चाहीला?

जवाब : एह काम से अलग होके हम जीवित ना रह पाईब।

सवाल : रउआ तो जनता के कवि बानी। आजादी के पहिले आउर बाद में का अंतर पाईना?

जवाब : हम कुछउ कहल नईखीं चाहत।

सवाल : अभी के शासन से का रउआ खुश बानी?

जवाब : एकर जवाब देबल संभव नइखे।

सवाल : अब ले केतना पुरस्कार-पदक मिलल बा?

जवाब : इयाद नइखे।

सवाल : हाल में रउआ कवनो उपाधि मिलल बा?

जवाब : हां, बिहारी रत्न के।

सवाल : बिहार के बहरा रउआ कहां-कहां आपन नाच देखावे गईल बानी?

जवाब : असाम, बनारस, कलकत्ता आउरी बम्बई एगो सिनेमा में गीत देबे।

www.bhojpurisahityangan.com

सवाल : रउआ कईसे समझीला कि राउर नाच से लोग खुश हो रहल बा?

जवाब : कोई जवाब ना।

सवाल : का रउआ पूजा-पाठ, संध्या वंदना आदि भी करीला? कवन देवता के पूजा करीला?

जवाब : खाली राम नाम जपीला।

सवाल : जिनगी के रउआ सुखमय समझीला कि दुखमय? हिंदी छोड़ा के कवन-कवन भाषा जानीला?

जवाब : कोई जवाब ना।

सवाल : रउआ तरज पर कवन- कवन नाच अभी बा?

जवाब : कई गो नाच एही आधार पर हो गईल बा।

सवाल : का रउआ कुछ दिन सिनेमा में भी रहनी? सिनेमा के जीवन आपके कईसन मालूम भइल?

जवाब : ना

सवाल : रउआ का आपन दल के लोगन के अभ्यास खुदे करवाईला?

जवाब : उस्ताद से सिखवाईना।

सवाल : जवन नाटक रउआ दिखाईना, ओकर लक्ष्य धनोपार्जन के अलावा आउर का समझीला?

जवाब : उपदेश आउर धनोपार्जन

सवाल : स्वास्थ्य कईसन रहेला राउर।

जवाब : अबहीं ले खाली तीन गो दांत टूटल बा।

सवाल : नाटक के बाद के थकान कईसे दूर करीला?

जवाब : कवनो जवाब ना

सवाल : का रउआ राजनीति में भाग लेबल चाहत बानी?

जवाब : कवनो जवाब ना

सवाल : राउर फेरू से जनम एही देश में भइल तो रउआ का एही काम करल चाहेम?

जवाब : कोई तय नइखे।

सवाल : कविता लिखे चाहे नाटक करे के पहिले का रउआ तैयारी करे पड़ेला?

जवाब : पहिले करे पड़त रहे, अब ना।

सवाल : आपन नाटकन के कथानक रउआ कहां से लिहीना?

जवाब : समाज से।

सवाल : एह घरी राउर सबसे जिगरी ईयार के बा?

जवाब : अब केहू ना। पहिले रामानंद सिंह रहले।

सवाल : राउर का कउनो स्थायी नाट्यशाला बा?

जवाब : कवनो स्थायी जगह नइखे।

सवाल : बढ़ियां नाटक भा कविता के लक्षण आप का मानिलां?

जवाब : जनता के भींड़।

सवाल : का रउआ मालूम बा कि एह घरी राउर स्थान उच्च कोटी के कलाकारन में बा?

जवाब : जे मिलल बा, ओही हमरा खातिर पर्याप्त बा।

सवाल : पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेंदर प्रसाद से सबसे पहिलका हाली आउर सबसे आखिरी बेरा कब भेंट भइल रहे?

जवाब : हमरा इयाद नइखे।

सवाल : का रउआ अभी के राष्ट्रपति डॉ राधाकृष्णन आउर प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्रीजी से मिलल बानी?

जवाब : कबो ना।

सवाल : पंडित जवाहर लाल नेहरू का कबो राउर नाटक देखले?

जवाब : कबो ना।

सवाल : गांधीजी कबो आपके नाटक देखले चाहे कबहू उनसे भेंट भइल।

जवाब : निकट के साक्षात्कार कबो नइखे भइल।

सवाल : राउर ससुरारी कहां बा?

जवाब : हमार पहिलका बियाह मानपुरा, आरा के स्वर्गीय देवशरण ठाकुर के लईकी से भइल। उनकर निधन के बाद दोसरका बियाह आमडाढ़ी, छपरा में भइल। उनकर भी गंगालाभ भइला के बाद तीसरका बियाह भइल, उनकर भी मृत्यु।

कुरीति के खिलाफ लोक जागरण के नाटक : 'बेटी वियोग'

औपनिवेशिक भारत में सती-प्रथा, विधवा विवाह पे रोक जइसन समाजिक समस्यन के खिलाफ लोकजागरण के काज ईश्वरचंद्र विद्यासागर जईसन लोग करत रहे। भोजपुरी अंचल में एह ओर भिखारी ठाकुर जईसन रंगकर्मी अपना सीमा के भीतर बड़ा मुखर रूप में आपन आवाज लगइले रहनी। भिखारी ठाकुर जी ई बात जानत रहलें कि सामाजिक सुधार स्त्री-उद्धार के बिना संभव नईखे। उनकरा अपना आसपास के महौल से ई पता चल चुकल रहे कि अपना समाज में विवाह व्यवस्था बहुते लचर हो गईल बा आ एइमे सुधार के भरपूर गुंजाईश बा। बाल-विवाह, बेमेल-विवाह ओ घरी बड़ा जोर पर रहे। एह कुरीति के कारण दस तरह के सामाजिक दोस भोजपुरिया अंचल में पाँव पसार लिहले रहे। अइसन समय में भिखारी ठाकुर एगो नाटक लिखले 'बेटी वियोग'। लोक समाज में ई नाटकवा 'बेटी बेचवा' के नाम से प्रसिद्ध बा। बेटी वियोग खाली कम उमिर के बेटी के कवनो धनिक बूढ़ से बियाह के कहानी भर नइखे, बल्कि ई नाटक भारतीय समाज में बेटी के जनमते ही माथा पकड़ लेबे वाला मानसिकता पर प्रहार बा।

एह नाटक में लिखल-कहल सामंती मानसिकता आ जमींदारी प्रथा के कालिख साफ़ लउकता। उमापति पाण्डेय जी बेटी बियोग भा बेटी बेचवा पर लिखले बानी कि "सामंती युग था। भले ही उम्र कब्र की प्रतीक्षा कर रही हो, लेकिन कामातुर मन की हवस षोडशी को अंकशायिनी बनाने के लिए हाथ-पैर पटकती रहती। गरीब की बेटी का मोल-तोल होता एक मवेशी की तरह, और हरसिंगार की टहनियों पर मचलते लाल-पीले फूलों सा उसके रंगीन सपनों को निर्ममतापूर्वक रौंद दिया जाता।"

बेटी के बेमेल विवाह के समस्या समूचा भारत के ही समस्या रहे भा अबहियों(कहीं-कहीं) बा। बेमेल विवाह के दुष्परिणाम पर हिंदी के महान साहित्यकार प्रेमचंद 'निर्मला' जईसन उपन्यास के रचना क चुकल बाड़े। धर्मवीर भारती जी भी अपना नए रंग-ढंग-शैली-शिल्प के उपन्यास 'सुरज का सातवाँ घोड़ा' में बेमेल विवाह के कथा के एगो मजबूत अंश बनवले बानी। ओही लेखां भोजपुरी अंचल में एह कुरीति पर प्रहार करे बदे भिखारी ठाकुर जी 'बेटी वियोग' लिखलें। अईसे कहल जाव तऽ भिखारी ठाकुर के सब नाटकन के बरियार सामाजिक महत्त्व बा। बाकी 'बेटी वियोग' एह सब में सामाजिक सुधार के लिहाज से सर्वोत्तम नाटक ठहरेला। 'बेटी वियोग' में भिखारी ठाकुर महीन संवेदना आ मार्मिकता के संघे समाज के एह कुरीति पर व्यंग्य करत ओकरा भविष्य में आवे वाला दुर्दशा के बयानों देत बाड़े। केदारनाथ सिंह जी लिखले बानी कि -"वे एक लोक-सजग कलाकार थे, इसलिए कोरा मनोरंजन उनका उद्देश्य नहीं था। उनकी हर कृति किसी-न-किसी सामाजिक विकृति या कुरीति पर चोट करती है और ऐसा करते हुए उनका सबसे धारदार हथियार होता है-व्यंग्य।"

बेटी वियोग' एगो पिछड़ा भोजपुरिया इलाका के गाँव के कहानी हअ। आर्थिक आ सामाजिक रूप से पिछड़ल निम्नस्तरीय जीवन जीये के अभ्यासी गाँव में चटक नाम के एगो आदमी बा। ओकरा (चटक के किरदार के बारे में) बारे में भिखारी ठाकुर रचनावली में लिखल बा कि "चटक आर्थिक दृष्टि से बहुत कमजोर, अविवेकी, धूर्त्त और किसी भी प्रकार का नीच कर्म करने वाला है। वह गाँव की सामाजिक व्यवस्था का ही आदर नहीं करता है। उसकी धर्मपत्नी लोभा

www.bhojpurisahityangan.com

भी परले दर्जे की लोभी है।" एही दुनो सवांग के बेटी उपातो बहुत सुघड़, सुशील आ बियाह लायक बिया। घर के आर्थिक हालत अच्छा ना भईला के कारण से चटक आ लोभा विवाह के खर्च उठावे में असमर्थ रहलें जा। आ ओने ओरी गाँव-समाज में लोग आ बिरादरी वाला बेटी के विवाह जोग्य हो गईला के कारण से टोक-टाक करत रहे। बहरहाल, भिखारी ठाकुर के एह नाटक में दु गो अउर स्थिति का ओर इशारा बा। एगो ई कि चटक के खेत रेहन/बान्हें पड़ल बा आ दूसर ई कि बेटी बड़ हो गईल बाड़ी आ उनुकर बियाह कईल भी जरुरी बा। अईसन समय में चटक अपना मेहरारू लोभा के एगो तरकीब समुझावत बाड़े -

"चटक : जहवाँ सदिया कइल जाई, तहवाँ से कुछ रोपेया ले लिआई। जेह से सदियों हो जाई आ ऊ खेतवा बाझल बा, तवनो छूट जाई।"

एह पूरा साजिश में मेहरारू के भूमिका ओतना नइखे जेतना चटक खुदे कर रहल बाड़ें। फेर भी मेहरारू के एह मामिला में न्यूट्रल/उदासीन भ गईल एगो शंका तअ पैदा करते बा। अईसहूं पितृसत्तात्मक समाज में बेटियन के 'ऑब्जेक्ट' बूझ के कवनो भी खूंटा से बाँध देबे के पुरान आदत आ मानसिकता रहल बा। ई सब पर चउतरफ़ा नजर भिखारी ठाकुर के बा एही से उ के अपना एह नाटक प्रत्येक दृश्य में सवाल उठावत बाड़ें, बाकि दिमागी तौर पर दिवालियापन से ग्रस्त उनकरा नाटक के चरित्र ओह पूरा सामाजिक बिडंबना के आपन वाजिब हक़ बूझ के निभावे के तैयार बईठल बा लोग। 'बेटी बियोग' में नाटककार लोकोपदेश भा भरतवाक्य खातिर नाटक के अंत के इंतजार नईखन करत। एकरा के भिखारी ठाकुर तअ नाटकवा के शुरूवे में कह दिहलें बाड़ें आ एह कहना में उ ओह लड़कियन के जगावे के परयास करत बाड़ें, जवना के एगो झलक उपातो के चरित्र में नाटक में मिलत बा, जहाँ उ कह रहल बाड़ी –"आदमी चार पइसा के जे तरकारी कीने जाला, तेकरा के समुझावे के परेला कि चतुर आदमी से किनबइह, ना त तूँ ठगा जईबऽ। चार पइसा सौदा में ठगइला में फिकिर बा। जे लड़की के पति खरीदाये जात बाड़न, ओह लड़की से ई न कहाय कि बाबूजी हमार बर निमन खोजिह। चार चीज जोगावे के चाही-इज्जत, एकबाल, यकीन आ एहबात।"

चटक के गोतिया के जब ई खबर लागअता कि बियाह खातिर बेटी के सउदा भईल बा तअ उ लोकनिंदा के दोहाई देता।

"गोतिया :

तोहरा से केहू छूतिहरो ना छुआई, नरिअर-हुका तोहार बंद कर दिआई।।।।

बेटी बेंचि के धइलऽ माल। तोहरा सिर पर चढ़ल काल।।

चढ़ल बंस के पानी गइल। जब से तोहार जबाना भइल।।

अइसन बंस में जमलऽ कूर। दया-धरम के कइलऽ दूर।।"

भोजपुरिया समाज में दस तरह के आभाव के बावजूदो गाँव में अईसन बियाह को बहुत जनसमर्थन भा सामाजिक इजत हासिल ना रहे। उपातो के बियाह में जवना समाज के चटक परवाह ना कईलें रहलन, उहे समाज आ गाँव-घर के लोग सचाई जनला के बाद उनकरा किहाँ खान-पान, उनकरा से बोलचाल, मेल-मिलाप, बियाह के साँझा-पराती आ अन्य मंगल गीत (बियाह के अवसर पर गाये जाये वाला गीत) आदि में शामिल नइखे होत लोग। नाटक के मंच पर भिखारी ठाकुर समाजी लोग से अईसन बूढ़ दुलहा पर लानत भेजवावत बाड़े जउन परिछावन वाला गीत गवला में लउकत बा।

"चलनी के चालल दूल्हा, सूप के झटकारल हे;
दिअका के लागल बर, दुआरे बाजा बाजल हे।
आवाँ के पाकल दूल्हा, झाँवा के झारल हे;
कलछुल के दागल, बकलोलपुर के भागल हे।"

बेटी बियोग नाटक अपना चरम पर तब पहुँचत बा, जब बेटी उपातो रोवत कलपत, अपना माई-बाप से तरह-तरह के सवाल करत बाड़ी -

"जमते मइया माहुर दे के, काहे ना दिहलू मारी?
हमरा के नाहक पालन करे में सासत सहलू भारी।।
कहे 'भिखारी' मति द मइया घर से हमें निकारी।।
अथवा
"हाय पिता, हाय मइया मोरी। मइया तोहरा गोड़ के चेरी।

मुन्ना कुमार पाण्डेय

गोपालगंज बिहार के रहे वाला मुन्ना कुमार पांडे जी, भोजपुरी भाषा खास कई के भिखारी ठाकुर प बरिआर शोध कईले बानी, इँहा के रिसर्च के विषय ही भिखारी ठाकुर जी रहनी। भोजपुरी नाटक आ भिखारी ठाकुर के नाटकन प गहिराह लेख लिखले बानी। हिन्दी आ भोजपुरी मे इँहा के लगातार लिख रहल बानी। एह घरी असिटेंट प्रोफेसर के रुप मे दिल्ली मे कार्यरत बानी।

अनहित हित काम नहिं आवत । केहू ना बाबू के समझावत ।।"

सोना जइसन बेटी पुका फारिके अपना बाप से कहत बाड़ी कि तू चार पईसा के लालच में अपना जान से प्यारी बेटी के चेरि से छेरी(बकरी) बनाके कवनो धनवान बूढ़ के हाथे बेच दिहलअ -

"रोपेया गिनाइ लिहलऽ, पगहा धराइ दिहल;
चेरिया के छेरिया बनवलऽ हो बाबूजी ।

लेकिन अईसन बियाह के परिणाम हमेशा खराबे होखेला। जबसे बेटी उपातो ससुरार गईली, तबेसे उ बेचारी अपना बूढ़ बेमार भतार के पयखाना अउर कफ दिन-रात साफ़ करत रहत बाड़ी। नाटक में जब उपातो कलप-कलप के अपना जिनिगी के ई मर्मान्तक दु:खड़ा अपने बाप से सुनावत बाड़ी त करेजा में टीस उठे लागता अउर तब पथर के करेजा भी पसीजले बिना नइखे रह पावत -

"घड़ी-घड़ी होत झरी, कफ से भरल नरी, नरक बिगत दिन
बीती मोर बाबूजी।"

तेअढ़-बाईस वाला अईसन बियाह के परिणाम ई होता कि बेटी उपातो कुछे दिन बाद नईहर लउट आवअतारी।

"कछू दिवस बीते न पाई । दुलहिन रूस के नइहर आई ।।"

बेटी के ससुरार से वापिस आ गईला के बाद ई '**बिना मन के बियाह** कनपटी' में सेनुर वाला ई व्यवस्था के उहो पेंच भी खुलके सामने आ जाता, जहवाँ पैसे के लेन-देन से मेहरारूअन आ लईकी सन के बियाह कईल आ करवावल जाला। नाटक में बियाह करवावे वाला पंडित 'झांटूल' दुलहा से दु सौ रोपया लेके बियाह करवावे के प्रपंच कईले बा तअ चटक सोरह सौ रोपया लेके अपना बेटी के बियाह ओकरा उमिर से लगभग तीन गुना मुअला बरोबर आदमी से कर दे तारें। एह बात के परमान दुलहवा के कहला से साफ़ हो जाता कि -

"दूल्हा : सोरह स रोपेया गना के लामा-लामा बात
बतिआवतारे।"

लेकिन पञ्च-परमेसर के फैसला अनुसार चटक के अपना बेटी के विदा कअ देबे के आदेश मिल जाता। ईहो अपना इहाँ के एगो तींत सचाई बा जे लड़की बियाह बाद अपना नईहर में नइखे रह सकत। आ नाटक में एही जगहिया पर बेटी उपतो के माई लोभा के धीरज टूट जाता आ उ छाती पीटत-रोवत अपना मरद/भतार से कहत बाड़ी –

"अपने मन से भइलऽ भूपा । बेटी काटि के डललऽ कूपा ।।
बूढ़ा बर से सादी कइलऽ। गाँव घर का चित से गइलऽ।।
सरप होके दिहलऽ डंस । अब ना बढ़ी बेटी के बंस ।।
बाप न हउअ, हउअ भूत । अब न बेटी खेलअइहन पूत ।।
तोहरा आँख में परल धूर। कइलऽ बुढवा बर मंजूर ।।"

बेमेल बियाह के दिकत पर ढेर साहित्यकार लोग कलम चलवले बा बाकि केहू अपना रचना में बेटी के अपना समाज में अपना हक़ में बोलत आ अपना भतार के अवगुण के कहे के साहस नईखे देखअवले। भिखारी ठाकुर के 'उपातो' पंचायत' के सामने ई कहे के साहस जुटावत बाड़ें। जदपि पुरुषशासित समाज में अइसन आवाज नक्कारखाना में तूती के आवाज बनके रह जाला। बाकी ई आवाज़ एगो अईसन मशाल के जले के शुरुआत बा जउना के रोशनी में आज के समय के बेटियन के अधिकार लिखल गईल बा -

"लूजुर-लूजुर पिया, देखऽ मुँह लेके दिया; कहीं कइसे कहे
नइखे आवत हो बाबूजी ।
मुँहवाँ में दाँत नाहीं, लार चुवेला गाल माहीं; बावला प भीतरी
सलंदर हो बाबूजी ।"

उपातो के ई कहनाम जाहिर कर रहल बा कि कवना लेखां समाज में कम उमिर के बेटियन के बियाह कई तरह के मजबूरी भा दिकत में कमजोर बेमार आ बड़ उमिर के आदमी से क दिहल जात रहे। जेकरा वजह से ओ कम उमिर के लईकियन/ बेटियन के सामने दस किसिम से परेशानी आ जात रहे। कम उमिर में बियाह भईला से कमे उमिर में बच्चा जनम जात रहे जा आ कई तरह के शारीरिक ब्याधि लड़कियन के हो जाए। ई इस्थिति एतना गंभीर हो जाये कि कई बेर जच्चा-बच्चा के जान खतरा में पड़ जाव। एही कड़ी में कम उमिर में ही बिधवा हो गईल भी ए टाइप के बियाह के एगो तींत सांच बा। एगो अउर बात जवना ओरी आमतौर पर लोग बात करे से हिचकेला उ बाटे अइसन संबंध के गंभीर मनोवैज्ञानिक पहलू जवना के प्रभाव अवैध संबंध के रूप में देखाई पड़त रहे, आ जहवाँ 'गबरघिचोर' (भिखारी ठाकुर के एगो अउर नाटक) जइसन बेटन के जनम हो जात रहे। एही सामाजिक विचलन से बचाव खातिर भी बेटी उपतो के ई कथन पर ध्यान दिहल जरुरी बा कि -"बृद्ध बाड़न पति मोर, चढ़ल बा जवानी जोर"। भिखारी ठाकुर जी बेमेल विवाह के बहाने समाज की जेतना गहिर आ महीन पड़ताल कईलें बाड़ें ओइसन विश्व के कवनों साहित्य में शायदे कहीं लउकत बाटे।

दरअसल, समाज में औरतन के संस्कृति आ परंपरा के नाम पर ठगल जात रहल बा अउर मेहरारू आजु ले एकर भेंट चढ़त बा लोग। परिवार नामक संस्था में आदर्श बेटी, आदर्श पतोह, आदर्श माई, आदर्श बहिन जईसन विशेषण लड़कियन के दिमाग के एक तरहा के बंदिश में रखे के ही पितृसत्ता के

www.bhojpurisahityangan.com

चतुराई भरल प्रयास रहल बा, जेकरा प्रभाव में आके कुल्ह बेटी सन अपना अधिकारों खातिर ना लड़ेली जा । 'बेटी बियोग' के किरदार 'उपातो' भी तब आवाज उठावत बाड़ी, जब बहुत देर हो चुकल रहे। उनुकर बारात दुआरी पर आ गईल रहे। लेकिन एहमें खाली उपातो के दोस नईखे दरअसल पितृसत्ता आपन जाल एह लेखां बिछअवले बा कि बियाह जइसन मामिला में भी बाप आ भतार के फैसला ही अंतिम होखेला। बियाह संस्था पर बात करत आ एकरा ऐतिहासिक कारण के खुलासा करत इतिहासकार समित सेन लिखले बाड़ें - "स्त्री पर पुरुष के अधिकार तथा नियंत्रण का मुख्य साधन थी-विवाह की व्यवस्था । इस व्यवस्था को स्त्रियों के लिए और ज्यादा घातक बनाने में औपनिवेशिक राज्य और पुरुष राष्ट्रवादियों की मिलीभगत थी। दोनों ने मिलकर विवाह के उसी रूप को मान्यता देकर आगे बढ़ाया, ऊँची जातियों तथा मध्यमवर्ग में प्रचलित था और जिससे पति तथा पिता दोनों को निर्विवाद रूप से मुखिया का पद प्राप्त होता था ।इससे विवाह संबंधी 'हिंदू कानून' और 'मुस्लिम कानून' फिर से इस तरह गढ़े गए कि परिवार में स्त्री विरोधी पितृसत्ता और मजबूत हो जाए तथा उसमें पुरुष के वर्चस्व को कोई चुनौती न दी जा सके।"

मेहरारू जात हमेशा से पारिवारिक निर्णय में शामिल ना कईल जाला लोग भा ओ लोग के राय कवनो मायने ना रखेला। दहेज़ के अभाव में बाल-वृद्ध विवाह के अमानवीय परंपरा भोजपुरी समाज में चलत रहे , खाली एतने भर कह दिहला भर से मुक्ति ना मिल जाई। प्रेमचंद के शब्द में कहल जाव तअ "यह तो लड़की को कुएँ में डालना है, भांड में झोंकना है, कुंद छुरे से रेतना है।"'बेटी बियोग' समाज के जगाके ओकरा में बेयाप्त कुरीति पर तमाचा मारिके ओकरा के ख़तम करके के पावन कोशिश बा। हृषिकेश सुलभ जी एक जगहा लिखले बानी कि बेटी बेचवा "भौतिक लिप्सा में मानवीय संबंधों के छीजते जाने की पीड़ा की अभिव्यक्ति है। बेटी-वियोग में स्त्री-पीड़ा का एक और रूप सामने था। पशु की तरह किसी खूँटे से बाँध दिए जाने का दुःख और वस्तु की तरह बेच कर धन-संग्रह के लालच की निकृष्टता। यह अतिश्योक्ति नहीं है और जनश्रुतियों में दर्ज है कि बेटी-वियोग के प्रदर्शन से भोजपुरी भाषी जनजीवन में भूचाल आ गया था। भिखारी ठाकुर को व्यापक विरोध का सामना करना पड़ा। पर यह विरोध साँच की आँच के सामने टिक नहीं पाया । भिखारी ठाकुर की आवाज़ और टांसदार हो उठी। बेटी-वियोग का नाम उन्हीं दिनों गुम हो गया। जनता ने इसे नया नाम दिया – बेटी बेचवा।" एही कड़ी में डॉ।श्रीधर मिश्र जी 'बेटी वियोग' के प्रभाव के चर्चा करत लिखले बानी की – "अभिनय तथा प्रभाव की दृष्टि से इस नाटक का इतना प्रभाव पड़ता है कि बेटी बेचने वाले सामियाने में ही रोने लगते हैं या वहाँ से भाग जाते हैं। मैंने इस नाटक को देखा है और बार-बार देखना चाहता हूँ। मैं कई शास्त्रीय नाटक देखे हैं, सिनेमा देखे हैं किंतु 'बेटी बियोग' अथवा 'बेटी बेचवा' का जितना प्रभाव मेरे ऊपर पड़ा है, उतना और किसी की नहीं।" उमापति पाण्डेय जी एक डेग आगे बढ़के भिखारी ठाकुर के राजा राममोहन राय के सामने खड़ा कअ दिहले बानी -"यह कहना अतिश्योक्ति नहीं कि सती-प्रथा पर अंकुश लगाने के लिए, जो जन-जागरण महान समाज सुधारक, साधन संपन्न राजा राममोहन राय पैदा किये, अपने सीमित साधनों के बावजूद भिखारी ठाकुर भी बेटी की बिक्री पर रोक लगाने में, अपने जनपद(सीमा क्षेत्र) में उनसे उन्नीस नहीं पड़े। उनके जैसा प्रचारक तो वह नहीं बने, लेकिन अपने रचित अभिनीत नाटकों के सशक्त माध्यम से उन्होंने जन-मानस में हिलोर पैदा कर दी। सामाजिक विसंगतियों, यंत्रणाओं एवं अत्याचारों पर सीधा और तीखा प्रहार किया तथा जन-जन को उद्वेलित कर दिया।" एतने ना एह नाटक के उमापति पाण्डेय जी 'इंकलाबी नाटक' कहले बानी।

भोजपुरिया ग्रामीण पृष्ठभूमि में रचल गइल ई नाटक ऊपरी तौर पर खाली एगो कम उमिर के लईकी के बूढ़ मरद से जबरदस्ती बियाह कर दिहला आ बेटी के रोवत-कलपत रह गईला के कहानी भर नइखे बल्कि एहमें ग्रामीण संस्कृति अउर सामाजिक जीवन में बेयाप्त सामंती गठजोड़, आर्थिक अभाव, मानसिक द्वंद्व अउर पेचीदगी के धागा के बारीकी से उभारल गईल बा। नाटक अपना संवाद अउर गीतन के साथे दृश्य-दर-दृश्य खुलत जाता अउर बेटी के वापस पति के घर बलाबस्ती भेजला के परिणामस्वरुप आवे वाला खतरा दर्शक/पाठक के बेचैन करे लागता, जेकरा भविष्य के गोद में भिखारी ठाकुर के एगो अउर नाटक 'विधवा विलाप' के स्क्रिप्ट रचा गईल रहे। भिखारी ठाकुर के ई नाटक कुरीति के खिलाफ लोक जागरण के नाटक के तौर पर ख्याति पइले बा, जउना के नेंव में लाल मरिचा नियन तींत सच्चाई जताइल बा।

संदर्भ सूची

1.लेख-युगचेता भिखारी ठाकुर : जैसा देखा और पाया,उमापति पाण्डेय, बिदेसिया, भिखारी ठाकुर विशेषांक-2।
2.लेख-नई कविता के मंच पर भिखारी ठाकुर, डॉ०केदार नाथ सिंह, दैनिक हिंदुस्तान, 5 नवम्बर 2001।
3. भिखारी ठाकुर रचनावली, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना।
4. आज का स्त्री आंदोलन, संपा।रमेश उपाध्याय, शब्द संधान प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2005
5. भिखारी ठाकुर का लोक, रंग-प्रसंग अंक-41,राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली-1, 2013

भिखारी ठाकुर

भ' से 'भोजपुरी' आ 'भ' से भिखारी ठाकुर । शायद 'भोजपुरी के भिखारी ठाकुर पर्यायवाची हई' इ कहाव त कवनो अतिशयोक्ति ना होइ। भोजपुरी से भिखारी के अलग क दिहल जाव त भोजपुरी साहित्यिक और सांस्कृतिक रूप से भिखारी के हाल में हो जाई। आज एही भिखारी के कारण हमनी के समृद्ध बानी जा।

भिखारी ठाकुर जी सूत्रधार के भूमिका में रहनी। उहाँ के सामने बरियार समस्या रहे - लिखे पढ़े से लेके रचना करे आ फेर आपन बात कलाकारन के समझावे के भी रहे। आर्थिक आ सामाजिक रूप से पिछड़ल गाँव बुनियादी सुबिधा के घोर अभाव के उहां का हिम्मत के संगे सामना कइनी ।हम उहाँ के रचना संसार प आपन बात राखब।

दोहा ,चौपाई ,सवैया, छंद अउर जँतसार, लोरिक फेर कुंवर विजयी के लय, सोरठी बृजभार नल दमयंती, राजा भरथरी, सती बिहूला, पचरा, बिरहा, डोमकच, पवरिया, धोबी-धोबिन सम्वाद, सोहर, कजरी, झूमर. पूरबी, निरगुन, कीर्तन आ ग़ज़ल से लेके तमाम संस्कार गीतन के रस तत्व सब उहाँ के नाटकन में भरल बा।फेर रीती-कुरीति, मर्यादा, आदर्श, त्याग, तपस्या के बारी-बारी से अरथ उहाँ के एक एक गो नाटक में देखे के मिलेला । बूढ़ लोगन के ज़िम्मेदारी फेर आदमी से आदमी के व्यवहार नारी सम्मान और स्त्री बिमर्श, सूदखोर जमीदारन के अत्याचार, धार्मिक पाखण्ड, बेटी बेचवावे वाला दलालन के नीचता, सब मोती के तरह उहाँ के रचना संसार में सजल बा।

1917-18 में विदेसिया के माध्यम से पलायन आ विस्थापन के दर्द आ स्त्री मर्यादा के सवाल भी उठवनी। बेटी-वियोग नाटक में बेटी बेचवन के खबर भी लिहनी। एह नाटक के माध्यम से उहाँ के अनमेल बियाह के दुर्दशा के खिलाफ एगो बरियार सांस्कृतिक माहौल तैयार कइनी। जहाँ-जहाँ इ नाटक भइल उहाँ बेटी बेचाये बन्द हो गइल। उहाँ के सब नाटक एगो सांस्कृतिक हथियार रहे । गबरघिचोर, गंगा-स्नान, विधवा विलाप, पुत्र-बध, कलियुग प्रेम, राधेश्याम बहार, भाई विरोध इ सब इहां के हथियार के असली कारतूस ह जवना से एगो बरियार सांस्कृतिक आंदोलन खड़ा भइल आ एकर समाज के मनोदशा पर ब्यापक प्रभाव पड़ल । एह कारण उहाँ के एगो आम आदमी के कलाकार, एगो जनता के कवि हो गइनी।

आज भिखारी ठाकुर के नाव के आगे महान लोक-कलाकार और जन-कवि लागेला। लेकिन हमरा इ कई हाली लागल बा की भिखारी ठाकुर के अभी समग्र मूल्यांकन बाकी बा। तमाम मार्क्सवादी आलोचक मूल्यांकन त कइले बढ़िया से, बाकी एगो बरियार आ महत्वपूर्ण पहलू के छोड़ दिहलन- उ रहे आध्यात्मिक पक्ष, जवन भिखारी ठाकुर के कबीर आ मलिक मुहम्मद जायसी के सामने खड़ा करेला। हम तमाम आलोचक लोग के कवनो दोष ना मानेनी। कारण मार्क्सवाद के अध्यात्म से मुकदमा बाटे ।लेकिन एह मुकदमा के कारण अतना महान व्यक्ति के रचना संसार से अन्याय होखे इ कइसे बर्दास्त होइ।

एगो छोट उदाहरण विदेसिया नाटक से देब जहाँ समझ में आई की विदेसिया पलायन आ विस्थापन के दर्द ना ह ई त जायसी के पद्मावत ह। जवना के आलोचक लोग जान बूझ के छोड़ देले बा । विदेसिया के शुरुवात में सूत्रधार के सम्वाद बा- "विदेसी ब्रह्म, प्यारी सुंदरी जीव, रखेलीन माया आ बटोही उपदेश एह चारो के सम्वाद होखे के चाहीं। एह चारो के सम्वाद ही विदेसिया नाटक ह।" इहाँ भिखारी ठाकुर जी के दूर दृष्टी के एगो छोट झलक मिलेला आ बतावे ला की भिखारी ठाकुर दोसरका कबीर आ जायसी हई।

आज विदेसी रूपी जीव, रखेलीन रूपी माया में अझुरा गइल बा । मोह माया में फंस के ई भुला गइल बा की उ का करे आइल

अतुल कुमार राय

बलिया युपी के रहे वाला अतुल कुमार राय जी काशी में संगीत के साधना कर रहल बानी। भोजपुरी आ हिंदी में लिखे के एगो खास शैली ह अतुल जी के। भोजपुरी के पारम्परिक गीतन प इँहा के विवेचनात्मक ढंग से लिखाईल लेख आखर प पहिले भी पोस्ट भईल बा। भोजपुरी लोकगीत आ पारम्परिक गीतन प इँहा के लगातार लिख रहल बानी। फिलहाल बनारस मे निवास बा।

बा। ओकर त जन्म भइल रहे ब्रह्म से मिलन खातिर बाकी रखेलीन रूपी माया नोकरी चाकरी घर परिवार आफिस में अइसन अझुराइल की प्यारी रूपी ब्रह्म के भूला गइल।एह मोह माया के काट के कवनो उपदेश रूपी बटोही के सत्संगति से ही ब्रह्म रूपी प्यारी के भेंट सम्भव बा। इ जब भेंट होइ त मानब जीवन सफल होइ आ फेर चौरासी लाख योनि में ना भटके के पड़ी।

आप जब विदेसिया के विस्थापन आ पलायन के दर्द से ऊपर जाके देखब तब समझ में आई भिखारी ठाकुर महज कवि कलाकार ना रहलन।बाकी भिखारी ठाकुर के इ पक्ष के आज ले केहू नइखे छूवले...जब एकर मूल्यांकन होइ त पता चली की उहाँ के महानता माउंट एवरेस्ट से भी लमहर बा।आ ओहि दिन भोजपुरी अपना गुदड़ी के लाल प इतराई। सबके मालूम होइ की भिखारी सिर्फ एगो नाटककार ना हवन बल्कि एगो सन्त हवन। जवन कबीर आ जायसी के सामने खड़ा होके हंस सकेला।

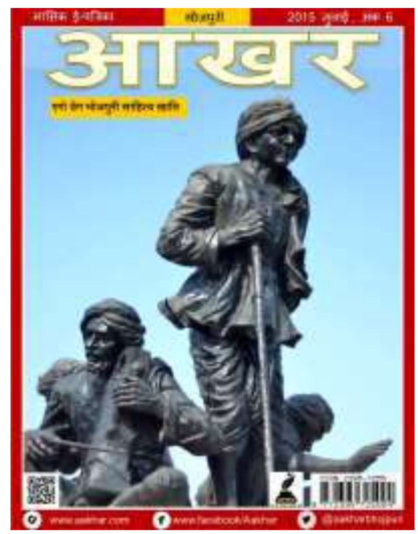

www.bhojpurisahityangan.com

लोकगीत में बरखा रितु

प्रो. राजगृह सिंह

लोक शब्द के अर्थ ह - 'लोग ' माने समान्य जनता। समान्य जनता के सीधा अर्थ होला अनपढ समाज , संस्कृति आ सभ्यता के पिछड़ल समाज , शिष्ट समाज से दूर के समाज। एकर दोसर मतलब ह अनौपचारिक समाज, पहिले के मूल समाज। अइसे त संस्कृति के 'लुक ' धातु में 'ह्ञ् ' प्रत्यय लगवला पर लोक शब्द बनेला। एह शब्द के कई गो अर्थ होला - जईसे समस्त विश्व , तीन लोक , चौदह लोक , मानव जाति , समान्य जनता आदि।

लोक शब्द काफी प्रचलित शब्द ह। एकर प्रयोग साहित्य के क्षेत्र में बड़ा व्यापक बा। राजनीति में लोकतंत्र के विशेष रुप दिहल बा जइसे लोकतंत्र, लोकसेवा आदि। लोकसाहित्य , लोक संस्कृति , लोक गीत , लोक कला , जईसन शब्दन के बड़ा महत्व बा। लोकगीत अपौरुषेय , अनौपचारिक काव्य ह। इ केहु कवि चाहे - कर्ता का पिछे ना चले आ ना एकर कवनो लिखित पंरपरा बा। लोकगीत आजतक कंढ पंरपरा पर चलल आ रहल बा। एकर प्रचलन आ बिकास कंढ पंरपरा पर निर्भर ह। लोकगीत के अगर श्रव्य पंरपरा कहल जाव त एहमें कवनो दोष नईखे।

समान्य अनपढ़ आ सभ्यता के वातावरण से अलग जनसमाज में प्रचलित गेय गीत के लोक गीत कहल जाला। पं० रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार - लोकगीत के ग्रामगीत भी कहल जा सकेला , बाकिर ग्रामगीत में लोकगीत के समग्रता ना देखाई पड़े। ग्रामगीत में भोड़ापन मिलेला बाकिर लोकगीत में अईसन कहवो ना देखाई पड़ी। लोकगीत एगो अविच्छिन्न , अकृत्रिम पंरपरा ह जे सहज , सरल निपढ़ गांव- गवई के कंढ से फूटल बा , आजतक ओही रुप में चलत आ रहल बा ,गवात जा रहल बा। लोकगीत एगो अईसन गीत पंरपरा ह जवन समाज के ऊंच आ नीच सब लोगन के धार्मिक, समाजिक आ कवनो संस्कार विशेष के आदर के साथे गावल जाला। लोकगीत समाज के आत्मा ह। ई लोक के आश्रय भी ह। लोकगीत के बिषय में डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी लिखले बानी कि लोक शब्द खाली गांव आ जनपद के परयाय ना ह बल्कि गांव आ नगर में फईलल सभ जनता ह जेकर आधार पोथी ना होखे आ ओह लोगन के संस्कार में बांध के ले चले वाला लोकगीत कहल जाला। ईहें लोकगीत आ लोकाचार लोक संस्कृति के रुप धारण क लेला।

लोककाव्य चाहे लोकगीत में बेसी अंतर नईखे। एकर संबंध ओसही बावे जईसे काव्य आ गीत में पावल जाला। लोकगीत आ लोक काव्य अंग या अंगी के भाव प्रकट करेला। लोकगीत में ऊ सब विशेषता पावल जाला जवन गीत काव्य में देखे के मिलेला। अंगरेजी में वैलेड , सॉनेट , ओड , सटायर आ सॉग के सब गुण एके साथे लोकगीत में मिलेला।

संस्कृत हिंदी चाहे दोसर कवनो भाषा में बरखा के रुप अलग- अलग दिखाई पड़ेला। कालिदास के मेघदूत में त बरखा रितु उद्दीपन भाव के साथे प्रकट भईल बा। तुलसीदास के मानस में बरखा रितु एगो यथार्थ उपदेश के रुप में चित्रित कईल गईल बा। बरखा रितु एगो अईसन रितु ह जवना के छोड़

www.bhojpurisahityangan.com

के कवनो काव्य पूरा ना कहल जा सके। अईसे त बरखा रितु पर लोकगीत पर अम्बार कवि लो खड़ा क देले बा। कवि घाघ के उदाहरण पुरान जमाना से आज ले देहल जाला।

भारत एगो कृषि प्रधान देस ह। साल में बरखा रितु के छोड़ देहला पर हाथ में कुछऊ शेष ना रह जाला। कहल जाला कि बारह में चार घटा दिहल जाव त शेष शून्य हो जाला। चार के मतलब होला बरखा रितु के आषाढ़ , सावन , भादो आ कुवार। घाघ राउत के लोकोक्ति एह चार महीना पर बहुत जादा बा। ज्योतिष के अनुसार रोहिनी , मृगडाह , अदरा, पुनरवस , पूष , असरेशा , माघा , पूर्वा , उत्तरा , हथिआ , चित्रा आ सेवती बारह नक्षत्र करीब - करीब बरखा रितु के अंश मानल जाला। घाघ के किस्सा बा -

' रोहिनी रोवे मृगडाह तवे कुछदिन आदरा जाय
चाहे कहे ' घाघ ' घाघिन से श्वान भात ना खाए '... आदि।

" ना बरसे आदरा अंत ना बरसे हस्त मध्य ना बरखे माघा
त का करिहे गृहस्त "

एह तरे के उदाहरण घाघ कवि के भरल बा। दोसर कारण भी बड़ी प्रचलित आ वैगयानिक बा -

" सावन मास बहे पूरवईआ
बैला बेच किन धेनु गईआ "

बरखा रितु पर सांचो अपना में अनेक तरह के विशेषता समेटले बिआ। एह रितु के बारे में लोकगीत के भंड़ार भरल - पुड़ल बा। एगो वियोगिनी नायिका के वियोग सोहर में देखल जा सकेला -

" सावन भदऊवा के रतिआ , देखत डर लागेला हो "

एह कजरी में वियोग के एगो दोसर रुप केतना मार्मिक बा -

" रिमझिम - रिमझिम बरखे बदरिआ
पिया बिना रहलो ना जाव "

एगो आऊरु रुप एह कविता के देखल जा सकेला -

" बिजुरी चमके मेघरा बरसे
बिरसे नयनवा बेजार हो रामा
वन- वन मोर कोईलिआ कुहुके
उढ़ेला करेजवा में हूक हो रामा "

बारह मासा में बरखा रितु एगो छोट चित्र देखी -

" आसाढ़ मास में मोर बोलत बा
सावन बहे पूरवईआ
भादो मास पंथ ना सूसे
आसीन मोहि ना सूहाई हो रामा "

भीखारी ठाकुर के बटोहिया गीत में बरखा रितु के जवन चित्र बा ऊ सांचो देखे लायक बा -

" आवेला आसाढ़ मास
लागेला अधिक आस
बरखा में पिया घरे
रहिते बटोहिया
पिया अईतन बुनिया में
राखी लिहतन दुनिया में
अखरेला अधिका सवनवा बटोहिया "

चाहे -

" आई जब मास भादो
सब खेली दही - कादो
कृष्ण के जनम बीती
असही बटोहिया
आसिन महीनवा के
कड़ा घाम दिनवा के
लुकवा सामानवा बुझाला हो बटोहिया "

बरखा रितु में जीवन जीए के डॉक्टरी सलाह भी कवि लोग देलेबा -

प्रो० राजगृह सिंह, एगो सामाजिक कार्यकर्ता आ शैक्षिक रुप से आजीवन जुड़ल व्यक्तित्व आचार्य राममुर्ति जी के सानिध्य मे रहल , 77 वर्षीय प्रो. राजगृह सिंह जी 41 साल ले शिक्षण कार्य करत जवना मे स्कुल से कालेज तक के उच्च शिक्षा आ संस्कार के दीया जरवले बानी। वर्तमान मे नंदलाल सिंह कालेज से रिटायर भईला के बाद भी राहुल सांकृत्यायन जी के विचारधारा के आगे बढावत , राहुल विचार मंच , राहुल नगर आ अउरी कई गो स्कुल कालेज खोलवावे मे आ सामाजिक संस्कार के संरचना बढावे मे आजुओ ईँहा के सक्रिय बानी।

" सावन हरे भादो चीत
कुवार मास गुड़ खाए मीत "

का ना खाए के चाही एहुपर दु पाती देखी -

" सावन साग ना भादो दही
कुवार करैला ना कातिक मही "

लोकगीत के प्रकार में कजरी आ कजरी - झूमर के स्थान सबसे ऊपर मानल जाला । अईसे त बारहमासा , रोपनी , नचारी , बरखा गारी आ विरह (बिहाग) के भी कम स्थान नईखे । हम कजरी के दू - चार गो बानगी दे रहल बानी -
बड़ा पुरान लोकगीत हई - एगो सखी चुटकी ले के कहतरी -

" कईसे खेले जईबु सावन में कजरिआ
बदरिआ घेरी आईल सजनी
तू त जात हऊ अकेली
केहु संग ना सहेली
छैला रोकी लिहे तोहरो डगरिया
बदरिआ घेरी आईल सजनी "

प्रेमी- प्रेमिका के बीच के ढ़िढ़ोली आ झूला झूले के पंरपरा बरखा रितु के प्राण ह ।

" हमके झुलुआ - झुला द मोरे प्यारे बलमु "

मेघ जब झमा- झम झुमरे लागेला त सावन परदेसी के ईआद में साले लागेला -

" अरे रामा बरसत है सखी मेघ
झमाझम पानी रे हरि
अरे सखी बितेला सवनवा
पिया घर अईहे ना हरि "

लोकगीत में बरखा रितु जब जवान हो जाले तब राधा - कृष्ण के जोड़ी झूला झूले में मस्त होके गुन - गुनाए लागेला -

" झूला पड़ल कंदब के डारी
झूले किसिन मुरारी ना
झूले राधा प्यारी ना "

एहतरे हजारों - हजार उदाहरण लोकगीत में बरखा रितु के भरल - पड़ल बा । कवनो अईसन समृद्ध साहित्य नईखे जवना के तुलना पंरपरागत लोकगीत से कईल जा सके । कवनो सम्मुन्नत साहित्य , ऊ अपना बोली आ मूल भाषा के नजरअंदाज ना कर सके ।

भारतीय साहित्य त चाहे कवनो भाषा के होखे लोकभाषा के आभारी बा । मूलरुप से लोकगीत आ लोकभाषा के वैसाखी पर ही सुंस्कृत साहित्य खड़ा होला आ ओकरा सीढ़ी के डंड़ा पर पर चढ़ के ऊ ऊपर चहुपेला । एहसे लोकगीत के कवनो विकल्प खड़ा ना कईल जा सके ।

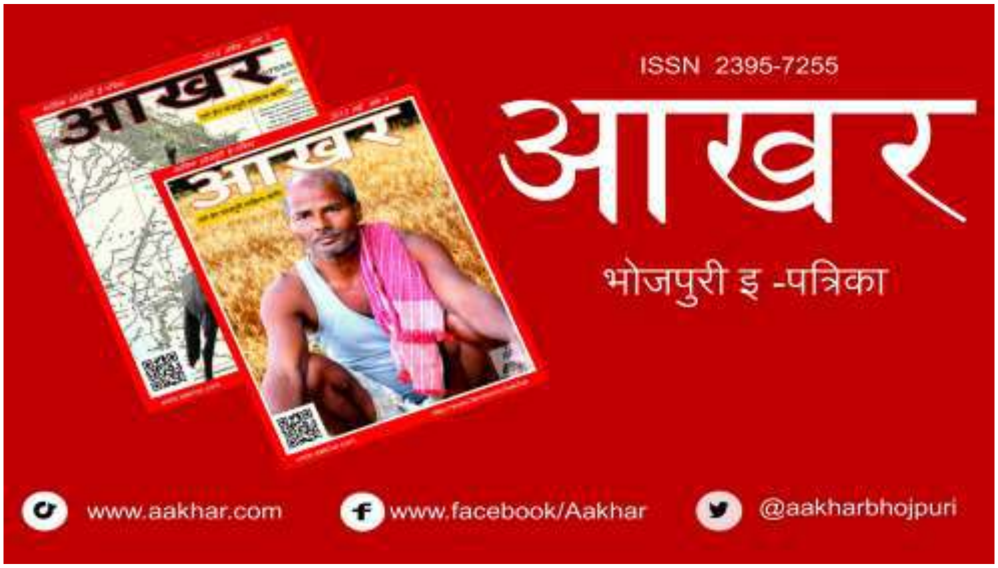

बखरा

आँखी मे लोर भरले रघु पंचन के बीचे से उठ के खाड़ भईले आ अपना जगही पर एगो ईंटा के टुकड़ा राख़ के सरपंच से कहले “सरपंच जी, सगरी ममिला हमरा भतिजा से समझ के आपन राय आ फैसला सुना देम। पुरखा पुरनिया के दिहल संपति ह ईनकर जवना जवना चीज पर खाली नज़र चल जाव उ ईनके हिस्सा मे दे देम। हम अपना जगही पर ए ईंटा के राखत बानी काहे कि आज हमार हाल एह निर्जीव ईंटा से भी गईल-गुजरल बा। हमरा से जवन भी बात के हुंकारी परवावे के होखे ए ईंटा से कह लेम आ हर बात मे हमार सहमति समझ के अपना तरफ से उचित फैसला क देम ।" एतना कह के उ झटकल गाँव से बहरी देबी माई के मंदिर मे गईले आ पुका फारि के रोये लगले ।

रघु दु भाई रहले। जवना बेरा रघु के ऊमिर दस बरीस रहे उनकर बड़ भाई आपन एक साल के लईका के छोड़ के ए दुनिया से विदा ले लिहले आ अपना पिछे छोड़ गईले एगो रोवत बिलखत महतारी, भीतरे आह मारत बाबू जी, सुसुकत मेहरारू, अनाथ बेटा आ असहाय छोट भाई । रघु के बाबू जी जेंगन तेंगन पूरा परिवार के सम्हरले आगे बढ़त गईले । समय के पहीया गते गते घुसूकत ओ परिवार के घाव पर पपरी डाल के आगे बढ़त गईल आ ओही तरे रघु सेयान हो गईले, उनका से अपना परिवार के दुख दर्द सहाव ना, घर मे रूपीया पईसा के कमी रहे बाकि रघु के मन मे ई तिहा रहे कि जब हम कमाए लागेम त घर परिवार के सारा दुख दूर हो जाई। रघु अपना भतिजा के लालन पालन मे कवनों कसर ना छोड़ले अपना औकात के हिसाब से। बाप के कमी त दोसर केहु पूरा ना कर सकेला बाकि एगो बाप अपना औलाद खाति जवन करेला कहीं ओ से बढ़ के रघु अपना भतिजा के करस आ उनकर भतिजा भी उनका के बाप के दर्जा देव। विधना आपन तनी सा निमन रूप देखवलस एने रघु कमाए लगले आ ओने उनका भतिजा के भी काम लाग गईल। एक बेर फेरु से रघु के घरे खुशी के एगो बेयार बहल। दुनु चाचा भतिजा मिलजुल के आपन घर गृहस्थी बढ़िया से सम्हार लिहले। रघु जवन भी करस अपना भतिजा से जरूर राय लेस आ भतिजा भी जवन करस अपना चाचा से पूछीए के करस बाकी ई बात रघु के भौजाई के ना सोहाव। उनका बुझाव कि रघु हमरा बेटवा के अपना मे मिला के ओकर सब कमाई अपने राख लेत बारें। पर-पट्टीदार उनकर कान भरे उ अलग से रहे। अब उनका खाति रघु उनकर दुश्मन से कम ना रहले । पर पट्टीदार के कहला सुनला मे हमेशा उ रघु के माई बाबू से झगड़ा करत रहस।

बड़ बेटा के मरला के घाव पपड़ी के भीतर लुकाईल टीस मरबे करे ऊपर से पतोह के ई बेवहार रघु के माई से ढेर दिन ले ना सहाईल आ एक दिन रघु के करेज़ काढ़त उनकर प्राण उनका देही के आज़ाद क दिहलस ।

बड़ बेटा के मरला के घाव पपड़ी के भीतर लुकाईल टीस मरबे करे ऊपर से पतोह के ई बेवहार रघु के माई से ढेर दिन ले ना सहाईल आ एक दिन रघु के करेज़ काढ़त उनकर प्राण उनका देही के आज़ाद क दिहलस । माई के मरला से रघु पर बरियार सदमा लागल आ उ एक बेर घर परिवार से लापरवाह डुबल डुबल रहे लगले । उनका भौजाई के मौका मिल गईल उ अपना लईका के उनका खिलाफ सिखावे पढ़ावे लगली जवना के असर धीरे धीरे ओकरा पर आवे लागल आ उ अपना चाचा से दूरी बना के रहे लगले। रघु नियति के मारल एकोरांहा कहीं आपन लोर अपने से पोंछत दिन काटे लगले आ सालो ना लागल तले उनका मुड़ी पर से उनका बाबू जी के छांह उतर गईल। अब रघु के लगे कवनों सहारा ना रह गईल,

अजित कुमार तिवारी

महाराजगंज बिहार के रहे वाला अजीत कुमार तिवारी जी , शुरु से ही आखर से जुड़ल बानी आ लगातार भोजपुरी मे गहिराह आ भावात्मक रचना लेख लिख रहल बानी । एह घरी अजीत जी दिल्ली मे रहत बानी ।

मय दुनिया अन्हार लउके लागल ओ अन्हरिया मे एगो रोशनी के लकीर उनकर भतिजा लउके। उनका अब अपना जिमेदारी के अहसास भईल आ मने मने सोंचले कि अब त घर के सब जिमेदारी हमारे मुड़ी पर गईल त बाबूजी के सब अरमान हम पूरा करेम आ ए घर के बिखरे ना देम।

समय अपना गती से आगे सरकत गईल आ ईनको घर मे कुसमय अलगा फरका वाला बात उठे लागल। रघु के भतिजा अपना माई के चढ़ावला मे आके सरपंच से मिल के बंटवारा खाति पंचायती के दिन ध दीहले आ रघु के लगे खबर पेठवा दिहले कि फलनवा तारीख के बंटवारा खाति पंचायती होई । अब एक मे रहे मे हमरा माई के गंजन होता।

ई बात सुन के रघु के कठ्या मार गईल। बंटवारा? केकरा केकरा बीचे? आखिर बांटे लाएक का बा? "कवनों बात ना लईका सेयान हो गईल बा अब आपन दुनियादारी सम्हार ली ओकरे खुशी मे हमरो खुशी बा।" तबो रघु के मन मे ए बात के बरियार ठेस पहुचल की जब ईहे बात रहल त ई सरपंच से कहे के बजाय एक बेर हमरा से कह दिहीते त हम राजी खुशी सब उनका के दे के हमहू खुश हो जईती।

रघु एक दु बेर अपना भतिजा से बात करे के जतन कईले बाकी उ बतियावे के राज़ी ना रहे। रघु भीतरे भीतर एकदमे टुटत गईले आ उहो दिन आ गईल जब भोरही के बेरा सरपंच गाँव के दस बारह आदमी के संगे उनका दुआर पर आ गईले आ बतकही शुरू भ गईल।

मंदिर मे रोवत रोवत रघु के हालत खराब भ गईल रहे । एक बेर त सोंचले की एही मंदिर के पोखरा मे डूब के आपन प्रान तेयाग दीं बाकि ई सोंच के कि लोग दुनिया उनका के बुजदिल, कायर समझी, आपन खेयाल बदल के ओजूगे चुपचाप मुड़ी गड़ले बईठ गईले आ अपना माई बाबू के ईयाद करत माफी मांगे लगले "बाबू जी हम रऊरा अरमान के पूरा ना कर पवनी हमरा से एगो घर ना संभल पावल हो सके त माफ का देम।

मंदिर के घंटी बाजल त हबर-दबर आपन आंखि के लोर पोंछ के पीछे तकले कि के ह?

चेहरा पर मुश्कान बिखेरले विजई भाव से उनकर भतिजा उनके ओरी ताकत खाढ़ रहले। उनका के देखि के रघु बलाजोरी मुस्कियात पुछले "सब ठिक से फरीया गईल ह नु? मन मे कवनों बात के कमी बुझात होखों त बेहिचक हमरा से कहS, हम अपना जियत जिनगी तहरा पर कवनो दुख के आंच ना आवे देम।"

"ना चाचा सरपंच जी एकदमे सही बंटवारा कईले हा बाकी हम रऊरा संगे तनी सा बेईमानी क देहनी हा। जमीन-जायदाद, घर-दुआर, गहना-गुडीया सब बराबर बराबर दु जगे लगा के रौरा आ माई के नामे भ गईल ह बाकी हमरा बुझाईल ह कि एमे हमरा संगे बेईमानी होता एसे हम पुरखा लो के सब संपति माई के करा के रऊरा बख़रा मे हम आ गईनी हा। रऊरा अब खाली हमरे से संतोख करे के परी हम रऊरा बिना ना जी सकीले।"

एतना कह के उ रघु से लिपट के रोये लगले आ रघु के आंखि से एक बार फेर लोर के धार फुट गईल।

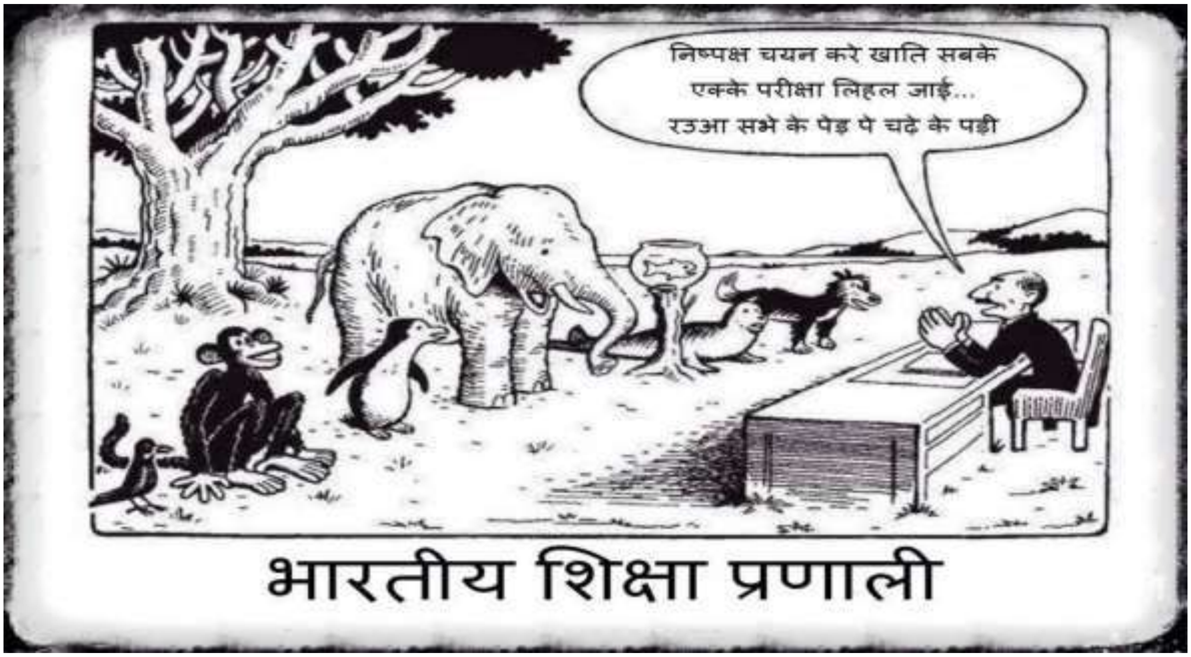

www.bhojpurisahityangan.com

फोटो साभार : फिल्म 'चक्रव्यूह'

लाल ईंटा

"चलीं सभे जल्दी, खेत हेरा गइल। भोरे-भोरे लाल झंडा गाड़ देले बाड़न सन।" मनोहर दौड़लन आपन अंगना में।

80 के दशक में , बिहार के भोजपुर जिला के दखिन के गाँव में लाल झंडा गड़ा गइल आम बात रहे। जमीन-खेत के मालिक लोग के हमेसा, एही डर सतावत रहत रहे की पता ना कब उनकर खेत 'लाल सेना' आ नक्सल क्रांति के नाव पे बिला जाई। खेत–खरिहान के कई गो मालिक लोग आपन जमीन जायदाद के रक्षा खातिर गंगा सेना, बाल्मीकि सेना, किसान मोर्चा जइसन कुछ संगठन में भर्ती हो गइल रहे लोग। इ लाल - हरियर, सेना -संगठन, लड़ाई – झगडा, मारा-मारी, काट-कटुउवल लोग के जियल मुस्किल क देले रहे। सांझ होते गाँव-जवार सगरो मरघट लेखा शांत हो जाओ।

"कहत रही की हमनियो के जल्दी ले कवनो सेना जवाइन क लेवल जाओऽ; बाकिर ना रउवा त न्याय के कुक्कुर कटले रहे ! अब के बचावे आई हमनी के खेत ?" मनोहर आपन दुनाली निकालत आपन बड भाई हरेराम ले कहले।

"मनोहर , बात इ संगठन अउरी बचावे न बचावे के नइखे।" हरेराम कहलन।

"त केकर बा ? कलुवा औरी मँगरू दुनो एह जवार के 'लाल सेना' के मेंठ बनल बाडन सन। मँगरू के बाबूजी ता हमनी हिया बनिहारीओ कईले बाडऽना ओखनी के कहिये से नज़र आपन खेत पे होई। जमीन जोते से आपन हो जाला का?" मनोहर फेन दहडले।

"बात अलग-अलग सिधान्त के बा। ओह लोग उ बबुवान के जमीन पे कब्ज़ा करत बा, जे लोग जबरदस्ती चाहे मज़बूरी के फायदा उठा के जमीन आपन नाव लिखा लेलख। जे उ लोग पे

अश्विनी रुद्र

आरा , बिहार के रहे वाला अश्विनी रुद्र जी , अमेरिका के न्यूयॉर्क में टेक्नोलॉजी कंसलटेंट हई । इँहा के लिखल कई गो हिन्दी आ भोजपुरी लेख अलग अलग पत्रिका मे प्रकाशित हो चुकल बा । आखर प शुरुवे से लिख रहले बानी ।

जुल्म कईलस। जे गलत कईलस, अब ओकरा जोरे गलत होता। हमनी के पुरखा हमेसा सब लोग के सम्मान देलस। छोट –बड ना देखलस। हमनी के खेत काहे लुटाइ ? ज़रूर एकनी के कवनो गलतफहमी बा। हमरा बतियावे दऽ।" हरेराम आपन भाई के समझेलन।

"रउरा आपन बातचित के सिद्धांत प रहीं अउरी हम बन्दुक के। राउर एही सवार्थ वाला मानसिकता रही ता केहू मदद करे ना आई; अउरी सब बिला जाई "। मनोहर आपन आदमी जुटावे के खेत दने बढ़ले। पीछे – पीछे हरेराम भी खेत देने धउगले।

खेत पे लाल झंडा लहरात रहे। आदमी जुटावत मनोहर के सांझ हो गइल रहे। खेत प दुनो पार्टी बन्दुक लेले खड़ा रहे। मनोहर कुछ गंगा सेना अउरी किसान संगठन के सदस्य के जुगाड़ भी क लेले रहन। सभे हरेराम के देख चुप रहे। अभी भी गावं में कुछ लोगन के बीच सम्मान बाचल रहे। हरेराम आपन बात-चित के सिधांत पे अडिग रहलन; गहमा-गहमी के माहोल रहे।

"कल्लू भाई, पहिले इ बन्दुक फेक द। इ सब काहे ?" हरेराम पुछलन।

"बाह ! आज ले, कलुवा - कलुवा कहलऽ ? आज बन्दुक देख के कल्लू भाई?" मँगरू अठाहस लगेलन।

मँगरू से आपन बड भाई के साथ होखल इ बत्तमीजी देख मनोहर से रहल न गइल।

"अरे मंगरुवाऽ तोर इ औकात ? भैया से हइसे बतियइबेऽ !" कहत मनोहर बन्दुक उठाईलन आ गोली चला देलन।

गोली के आवाज सुन के अफरा-तफरी मच गइल। सब कोई जान बचा के भागल। फेन अंधा – धुन फायरिंग भइल। के मुवल;के जियल केहू के देखे के फुर्सत ना रहे। भाई मुवलन की भौजाई इ बाद में देखे के बात रहे – पहिले आपन जान बचावल जाओ। तब तक तनी अंधार हो गइल रहे। जे जहा बांच के लुका गइल; लुकाइल रहल। दुनो सेना के जाँबाज लोग जोह – जोह के एक दूसरा के खून के पियासल भइल रहे।

रात के अंधार हो गईल रहे। एगो खरिहान में हरेराम लुकाइल रहन। दूर तक झाँक के देखला प एको दियरी - ढिबरी तक ना लउकत रहे। रह-रह के गोली चलो त फायरिंग के आवाज़ के साथ तनी उजर चमके। लेकिन इ कवन पार्टी के आदमी गोली चलावता ; इहो पता ना चलो। हरेराम अहिजे रात गुजार देला में भलाई समझलन। मन करे की केहू के बुलावस लेकिन, अगर चिल्ला के कुछ कहलन, अउरी लाल सेना वाला निकल गइलन सन त जानो ना बाचित।

हरेराम सोचत रहलन की का हो गइल इ समाज अउरी गावँ के ? केतना खुशहाली रहे। पहिले कबो - कबो एक-दू को घटना घटत रहीसन, लेकिन अब तऽ मारा – मारी रोज के बात हो गइल बा । हरेराम के अभियो याद बा; कॉलेज के समय, कमुनिस्ट पार्टी के फैशन रहे। कामरेड, कहल अपना आप के नया सोच अउरी नया पीढ़ी के उर्जा के दर्शवत रहे। हरे राम भी एह सामाजिक क्रांति से जुडल रहन। लागत रहे देश बदले वाला रहे। काल मार्क्स के इ आदर्श समाज में सभे के जगह रहे। लेकिन, नक्सलबड़ी के घटना के बाद चारू सान्याल के इ आन्दोलन अइसन विभत्सन रूप ले लिही, केहू न सोचले रहे ! सामाजिक आन्दोलन अब असामाजिक अउरी हिंसा के आन्दोलन हो गइल रहे।

रात ढेर हो गइल रहे। अब गोली – बन्दूक के आवाज भी कुछ कम भऽ गइल रहे। हरेराम के लागल की खरिहान में कुछ हलचल बा। कुछ लोग सायद लुकाये आइल बा । घुप अंधार में एगो आवाज आइल "के ह ?" हरेराम इ आवाज पहचान गईलन। इ कल्ल्लुवा रहे !

"के ह?" कल्लू फिर पुछलन।

हरेराम के हाड काँप गइल। कुछ कहतन त अहिजे समाधी बन जइत। ऊ कराहे के आवाज निकललन।

"लागता की घायल बाडऽ; जे भी अंधार में बा ठीक बा पौ फाटी तऽ तहरा लिया के चलल जाई डाक्टर हियाँ, लेकिन अगर बड़का में के हवऽ त मार दियाई"- मँगरू के आवाज़ आइल।

हरेराम कुछ न बोललन। अब उनकर काटो खून ना। चुप - चाप अंधार में बइठल रहलन । हरेराम सोचलन, का इ कल्लू आ मँगरू के समाजवाद के स्वरुप मालूम होई ? का इ लोग लेलिन, मार्क्स के एको लेख, किताब पढ़ल होई लोग? बस केहू बरगला देलस। एह लोग के इ रूप एक सामाजिक अउरी राजनितिक विफलता के कारन बा। ना राज्य सरकार एह लोग खातिर कुछ कईलस, न करे के प्रयास में बिया। सब केहू राजनितिक रोटी सेकत बा। सब कोई। राज्य सरकार भी, औरी

www.bhojpurisahityangan.com

कल्लू, मँगरू जइसन लोग के बर्गालावे वाला नक्सली नेता भी।

धीरे- धीरे हरेराम के बचपन के दिन याद आवे लागल। इ उहे कल्लुवा रहे जेकरा जोरे रोज लाल- ईंटा के खेल जमे। एकदम गंवई खेल। लाल ईटा के खेल गुल्ली –डंडा के एगो रूप रहे। खेल में दू दल रहत रहीसन; दुनो में आठ-आठ गो खिलाडी। एक दल गुल्ली के डंडा से एक केंद्र घेरा से मारे औरी फेर मारत खूब दूर ले-ले चल जाये। गुल्ली जतना कदम घेरा से दूर ओतना अंक मिलत रहे। हर दल के इहे कोशिस रहे की ढेर से ढेर अंक बनावे के बा; आ बिपछी दल के अंक बनावे से रोके के कोसिस रहत रहे। खेल के एक नियम रहे की अगर डंडा लाल ईटा पे ना रही आ दुसरका दल के कवनो खेलाडी रउवा छु दिही त ओह खिलाडी खेल से बाहर। अगर सब खिलाडी छुवा जास चाहे गिल्ली हवा में रहे अउरी अगिला दल के कवनो खेलाडी रोक लेवो तबो खेल ख़तम औरी दोसरका दल के बारी आ जात रहे| दूसरा टीम के अगिला हाली ओकरा ले जयादा दूर ले गिल्ली मारे के पडत रहे। ओकरा एही कोसिस रहत रहे की बिना छुवाए; चाहे हवा में रोकाए गिल्ली दूर तक ले जाये। खेल में टीम वर्क खूब देखावे के पडत रहे। हर टीम एक से एक दाव खेले। खेल के पहिलही लाल ईंटा के चेका बगीचा में फैला दियाव। बयेमानी, टेटमानी भी खूब होखे।

हरेराम अउरी कल्लू एके गाव के टीम से खेलस लोग। गाव-जवार में इ दुनो के खेल के कारन ही लाल- ईंटा के खेल खूब चरचा में रहो। सब लइकन के एके अरमान रहो की ओह लोग के खेल कल्लुआ औरी हरेराम लेखा मानल जाओ। लाल ईंटा के इ खेल में दुनो के जोड़ी एतना जमे की पूछी मत ! हरेराम कल्लू के खेल के बीच में पूछस -"बिस्वास बा? " त कल्लुवा चीचीयाये - "हाँ बा"। अउरी सुरु हो जाये दुनो के खेला। छकावत – हगावत दुनो आपन टीम लागी अतना ना अंक चाहे रन बना द सन की दुसरका टीम ले बनबे ना करे। हर साल गाँव - जवार के कई गो टीम में लाल-ईंटा के मैच होखे। सब लोग कहे के हरेराम – कल्लुवा के टीम ही जीती। औरी इहे होत रहे।

फाइनल में हमेसा हरेराम औरी मँगरू के टीम पहुचो। पिछलका साल के फ़जीहत आज ले मंगरुवा के दह्लावत रहे। ओह साल कल्लू औरी हरेराम के विजयी रथ रोके ला फैसला भइल की तीन गो लइका हरेराम के अउरी तीन लइका कल्लू के घेरिहन सन। बाकी दू जाना हरेराम के टीम के 6 को खेलाडी के देखि। लेकिन इ दाव उल्टा पड़ गईल रहे। पहिले हरेराम के टीम के लइका विनोदवा लखना अतना दौडले सन के मँगरू के टीम के लोग थाक गईल। फेन हरेराम औरी कल्लुवा दुनो मिल के त लाल-ईंटा के खेल में इतिहास रच देले सन।

"बिस्वास बा"

फेन कल्लू कहलन "हां बा"।

कल्लुवा आपन फुर्ती ले मँगरू के टीम के लोग के दउगावे; अउरी हरेराम कसहूँ मौका पा के गिल्ली एतना न दूर मार देस की लोग देखत रह जास। फेन दुनो लोग फुर्ती से लाल- ईंटा पे डंडा रख देस। लोग कल्लुवा के पीछे फेन से चार-चार आदमी खड़ा करे; की जैसे ओकर डंडा उठी छु के ओकरा बहार निकाल देवे के बा; लेकिन हेने हरेराम के मौका मिल जाये। लोग हरेराम के लखेदे त कल्लू के मौका मिल जाये। सभे कोई दुनो के ताल-मेल से दंग रहे। इ दुनो खेलाडी, गिल्ली के दुनो बगीचा पार करके दुसरका गाँव तक मार देलन सन। सांझ हो गईल लेकिन कल्लुवा, हरेराम ना छुवा पाइल लोग। हरेराम लाल-ईंटा के खेल में पहिला हाली डिक्लेअर दे देलन। भइल की सभे थाक गेइल बा; खेल अगिला दिन होई। अगिला दिन मँगरू के टीम बगीचों न टप पाइल। मँगरू इ सरमनाक हार से दू दिन तक घरे से ना निकललन।

अगिला साल फिर से लाल-ईंटा के खेल सुरु होखे वाला रहे। मंगरुवा के हमेसा से मन करे फाइनल जीते के। लेकिन एह साल बल से ना छल से जीते के पड़ीत। मंगरुवा सोचलस की काहे ना कल्लू औरी हरेराम के तालमेल बिगाड़ देवल जाओ ? ना दुनो रहिहन सन साथे ना उखनी के गाव के टीम जीती। लेकिन मँगरू के सामने सबसे बड समस्या रहे के कल्लुवा के फोरल कैसे जाओ ? कवन राजनीति कईल जाओ की दुनो अलगा हो जा सन। कई दिन मँगरुवा के एही सोच में नींद ना आएल। हरेराम अउरी कल्लू में अतना न दोस्ती यारी रहे की दरार कइल मुस्किल रहे।

लेकिन मँगरू के इ दरार देखा देलन गाँव के मास्टर जी। मास्टर साहब ओह दिन स्कूल में मँगरू के अइसन ना पाठ पढ़ा देलन की ओह सबक मँगरू के जिनगी के सबक बन गइल। भइल इ की एक हाली क्लास में रखल घइला में से मँगरू पानी पी लेले। जब मास्टर साहेब के पता चलल ता मंगरुवा के खूब पिटले आ मारत-मारत ओकर पीठ प दोदरा कबार देले। मंगरुवा आह माई, आह माई क के जमीन पे लोटत रहल। मास्टर साहब माई- बहिन के गारीओ देले। इ जात-पात,

www.bhojpurisahityangan.com

छुवा-छुत, उंच-नीच वाला पाठ मंगरू तुरंत सिखल अउरी 10-20 लोग के सिखइबो कईलस। लेकिन अब मँगरू के हरेराम आ कल्लू के दोस्ती तुडे के दरार मिल गईल रहे; बस अकुसी लगावल बाकी रहे।

समाज में पहिले से फैलल कुरीति , उंच-नीच , भेद-भाव के मँगरू के देखे अउरी कल्लू के देखावे में समय ना लगल। कुछ दिन में ही कल्लू हरेराम से अलगा हो गइले। हरेराम कल्लू के खूब समझावे के कोशिस कइले, लेकिन मँगरू के जात-पात के लगावल दरार ना भर पइले। ओह साल कल्लू मँगरू के टीम से खेलले। लेकिन न कल्लू के खेल में ऊ बात रह गईल रहे ना हरेराम के। ओह साल दुनो जाना के टीम सेमीफानल में भी ना चहुप पाइल। कवनो दोसर जवार के टीम जित के गइल। कुछ साल तक खेल चलल लेकिन फेन गाँव में शांति न बचल औरी सब खेल बंद हो गइल।

गमे-गमे कल्लू, मँगरू अउरी हरेराम बड होत गइल लोग। हरेराम अउरी कल्लू के बीच दोस्ती एकदम ख़तम हो गइल। मंगरू –कल्लू ढेर हाली छुवा-छुत के सिकार भइल लोग अउरी ओह लोग के नफरत बड़का जात खातिर अउरी बढ़त गइल। जयादा पैसा न रहला के अभाव में पढ़ भी ना पाइल लोग लेकिन जेतना पढ़ल रहे लोग कवनो ना कवनो नोकरी भेटा जइत। लेकिन, बदकिस्मती कहीं भेटाइल ना। एक त बेरोजगारी ऊपर से उंच – नीच के भेद फेन से कहर बन के तुटल। कुछ गाँव के बबुवान लोग, जिनका घरे मँगरू के बाबूजी बनिहार रहन, उनका के चोरी के आरोप लगा के पीटल गइल ; एही में मँगरू के बाबूजी के मृत्यु हो गइल। एह बात पे खूब बवाल अउरी राजनीति भइल। एह घटना के बाद कल्लू अउरी मँगरू नक्सली क्रांति ले जुड़ गईलन। नक्सली नेता लोग खातिर भी कल्लू; मँगरू अच्छा गरम आग रहे आपन रोटी सेके खातिर। एह सब सोचत-सोचत हरेराम कब ऊँघे लागल रहलन पता ना चल पाइल। अनुगते नीद खुलल ता देखलन की कल्लू, मँगरू अउरी ओखानी के संघतिया बन्दूक तनले खड़ा रहन सन।

हरेराम के सकपक्की ध लेलस। उनकर चेहरा पिला पड़ गईल।

"का हो हरेराम, धराइये गइलऽ ?" मँगरू चवनियाँ मुस्की देत,बन्दुक के नाल से हरेराम के खोदत बोलले। हरेराम कुछ देर कल्लू के मुह तकले।

"हां हो मग़रू, जले कल्लू हमार टीम में रहले त हमेसा लाल ईंटा के खेल में तू धरा जात रहलऽ। आज हम धराइल बानी ।" हरेराम चेहरा पे बिना डर के भाव लावत कहले।

"ज्यादा देर ना लगावऽ लोग" इनका के मार दियाओ। " एगो नक्सलाईट कहलस।

"रह लोग ! मुए के पहिले आपन बात त कह लेवे द ।" हरेराम फिर से आपन बचपन के यार कल्लू के तरफ़ देखले। उनका लागल की शायद कल्लू के आपन बचपन के सब दिन याद आ जाओ।

" हमनी के त कहे देते रहीं जा, हरेराम। तहरे भाई गोली चला देलन। अब कवनो मौका ना मिली।" ई बात कहत मँगरू आपन बन्दूक उठा के हरेराम के सीना पे रख देलन अउरी घोड़ा दबावे बढलन।

" रुक जा !" कल्लू आपन चुप्पी तोडत कहले। "जवन हरेराम के बोले के बा, बोल लेवे द।"

"बोलऽ"। मँगरू गाभी मारत बोलले। जइसे कहत होखस की बकरवा कब तक खैर मनाई ?

"कल्लू भाई, इ बन्दुक, गोली काहे ? का हमनी के इ सब शांति से ना निबटा सकीं ?" हरेराम पूछले ?

"ना, जब अन्याय होला त आपन हक़ खातिर बन्दूक भी उठावे के पड़े ला। हमनी के उहे कईले बानी। इ आपन हक़ के लड़ाई बा। न्याय, अन्याय के लड़ाई बा। हेतना दिन से सरकार कुछ ना कईलस, अब छीने के पड़ी। " कल्लू हुह्कार भरले। उनकर आँख लाल हो गइल।

"कल्लू हम मान तानी की गलत भइल बा। लेकिन एगो बात सोचऽ। एह समाज के बीच में एगो खाई हो गइल बा। बड-छोट, उंच-नीच अउरी अमीरी-गरीबी के। एह सब समस्या के जड़ इहे खाई बा। एकर समाधान बा की एह खाई के भरल जाओ। इ खाई दुनो तरफ़ से भरे के पड़ी। समय लागी लेकिन भरी। इ बन्दुक, मारा-पीटी सब खाई के अउरी गहिड करत बा , भरत नइखे।"

कल्लू, मँगरू इ बात सुन के कुछ देर तक चुप रहल लोग।

हरेराम फेर आगे बोलले "तहरा बुझा ता नु हम का कहत बानी? सोचऽ जब हमनी के साथे रही जा, लाल ईंटा के टीम में त केतना खुशहाली रहे ! हमनी के हमेसा जीती सन। अलगा भइला पे ना तू जीतलऽ ना हम। चल तहार हक़ के लड़ाई ओह टीम लेखा खेललऽ जाई , साथे। हम तहार मदद करम। का तू

www.bhojpurisahityangan.com

नइखऽ चाहत की गाँव के सब लइका फिर से मिल के बगीचा में बिना डर के लाल-ईटा के खेल खेलऽ सऽ? हो सकेला तीस साल पहिले हमनी के बनावल लइकाईं के रिकार्ड केहू तुडे। अब खेल तहरा चुने के बा ; लाल-ईटा की लाल सलाम?"

कल्लू आँख में लोर धरके लागल।

कल्लू के नज़र जमीन पे गिरलऽ एगो डंडा पे गईल। इ डंडा लाल-ईटा के खेल खातिर एकदम उपयुक्त रहे। कल्लू डंडा के तिक्वत कहले ।

"मँगरुवा आज सांझ फाइनल फेन से हो जावो तोरा आउरी हरेराम आ हमार टीम में। आज त नया रिकार्ड बनी ।" कल्लू आपन बन्दुक फेकत, डंडा उठावत बोलले।

तले बूम बूम बन्दुक चले के आवाज आइल। हरेराम देखले की कल्लू के सरीर लहरात उनकर गोदी में गिर गइल। हेरराम के मँगरू के तरफ़ देखले। मँगरुओ जडवत हो के हेरराम के टिकवत रहले; ओकरो ना बुझाइल की का भइल।

एक राउंड अउरी गोली चलल । मँगरू अउरी उनकर साथी भी जमीन के गिर गइल लोग। सभे के गोली लागल रहे औरी हर -हर खून निकलत रहे।

" भइया , तहरा के बचा लेनी जा। ठीक बाडऽ नु।" मनोहर आपन साथी जोरे बंदुक लहरावत दौड़त अइले।

हरेराम आपन गोदी में कल्लू के लास देखत, डहकत कहले " मनोहर अपना जाने तू हमरा के तऽ बचा लेले, लेकिन गाँव, जवार के सुख, शांति अउरी खुशहाली के हमेसा खातिर तें मार देले"।

अगला दिन एगो नरसंहार के खबर अखबार में छपल, अउरी कइ साल ले छपत रहल ।

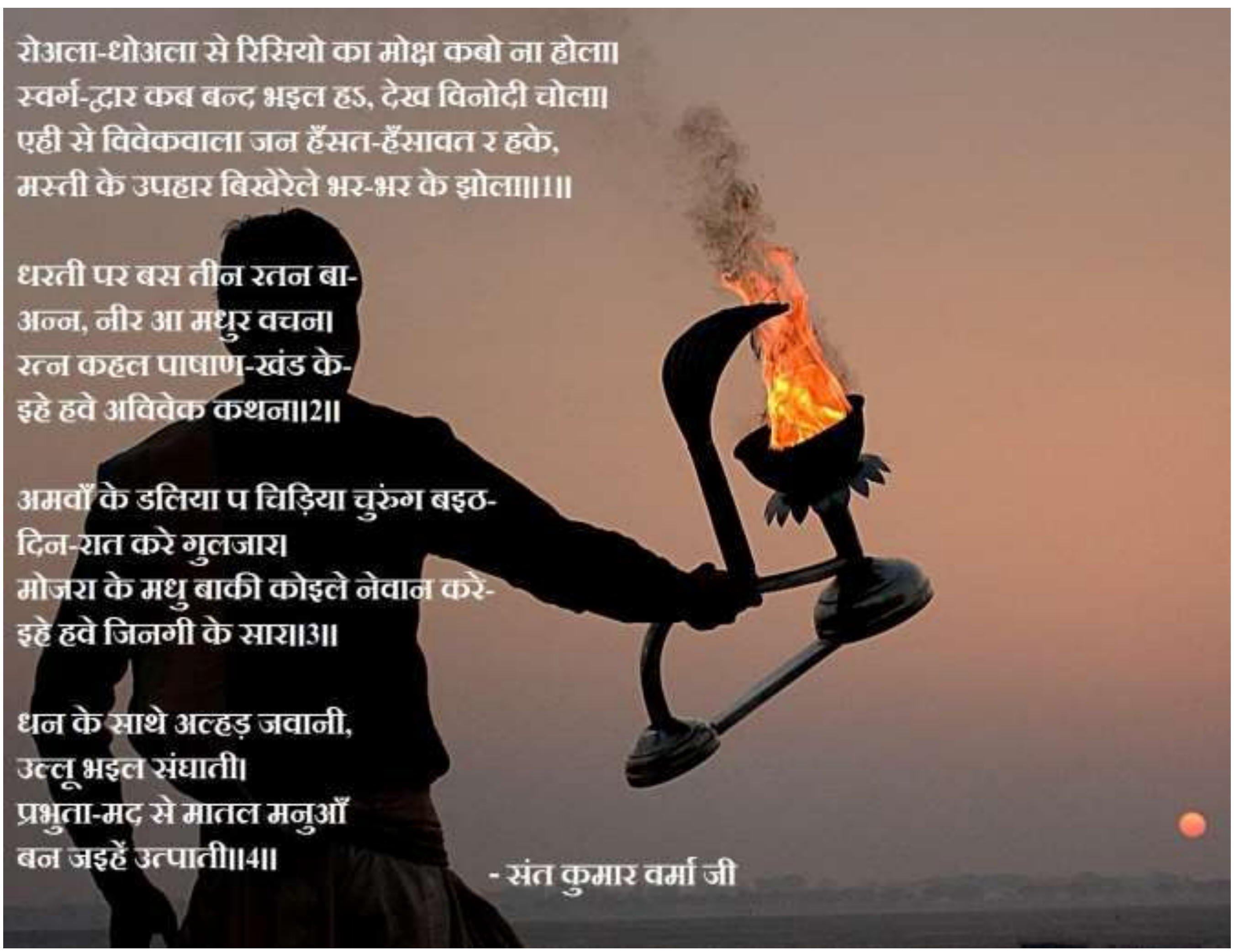

मंगल पाण्डेय : सपूत माँ भारती के

रहे एगो मध्यम वर्गीय ब्राह्मण परिवार
जनम लेहलक जेमे एगो कुमार
धन्य भाग्य रहे बलिया के जेहपर ,जनम भईल मंगल के
वीर पुत्र रहले भारती के ,सूत्रधार 1857 के दंगल के
प्रणाम करत बानी ओहि भूमि के , जेहपर खेल खुद के भईलन जवान
धन्य भाग्य उ माई-बाबू के ,जिनकर पुत्र रहले मंगल महान

रहे एगो बैरकपर छावनी कलकता से दूर
कारतूस बने ओमे ,रहे बड़ी मशहूर
रहे 29 मार्च 1857, दिन रविवार
जब पहले वोहिले मिलल दुखद समाचार
साथी कहलक मंगल पानी पिये के बा ,तेनी दे द आपन लोटा
ना देहले मंगल बाबू ,समझले हो जायेम छोटा

काहे शनगर बनत बाड़ , ब्राह्मण अपना के बोलेलS
गाय सुवर के लागल चर्बी अपना मुह्वा से खोलेलS
वीर बेटा माँ भारती के , दिमागवा खनक गईल
का खत बाड़े , तोहरा कहा से भनक भईल

अंग्रेज ठगलें स सबके ,केहु ना बाचल भाई
काहे करेलS गुमान जात के ,जन कर हमसे लड़ाई

एकनि से नीमन बा भइया , यही युग में कसाई
सबकर धरम भ्रस्ट होता ,के केकरा के समझाई

चल हम के दिखा दे भाई ,ना करें हम लड़ाई
कहत कहत ई बतिया मंगल के आँख डबडबाई

जाके देखले आँखि से ,लोर लागल गिरे
बात ई फइल गईल ,सब ओरी धीरे धीरे
भईल शुरुवात विद्रोह के जब लागल मंगल के ललकार
जोश आईल सभे ,का हिन्दू का मुस्लिम सब उठवले तलवार
धह्के लागल ज्वाला दिल में ,देश धरम खाती
सब केहु कूद पड़ल ,ना रहे एहमें केहु बाकि
श्री गणेश कईले मंगल, १८५७ के ज्वाला के
आजादी के नीव के ,स्वाधीनता के उजाला के

डर समा गईल अंग्रेजन के ,दिल के भितरिया
क्रांति के डगर चले लागल, का गाव का शहरिया
भईले गिरफ्तार मंगल ,भईल सजा फांसी के
अमर भईले वीर पुत्र ,फेरु ना भईल केहु ओहि राशि के

माँ भारती के सुनर बेटा ,सबकेहु जुबानी बा
हिंदुस्तान के इतिहास में, अमर मंगल के कहानी बा

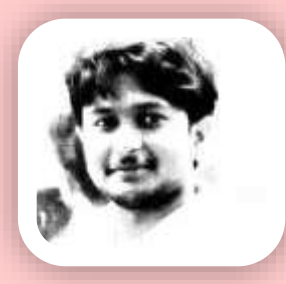

जलज कुमार अनुपम

बेतिया, बिहार के रहे वाला जलज जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी आ आखर के पेज पे भी इंहा के कविता-कहानी प्रकाशित होत रहेला। फिलहाल जलज जी दिल्ली रह रहल बानी।

बदलाव

जेठ के दुपहरिया
बादल के आवा -जाही
सूरज के तपिश
शाम के वीराना में
चाँद के छाँव में धरती
लुका जाला

इ भ्रम देखी की
सूरज पूरब से पश्चिम में
भुला जाला
चाँद चांदनी के साथे
चारो ओर समा जाला

आपन धुरी पे घुमत धरती
मौसम के हर रूप के
"बदलाव" बता जाला
इंसान भी समाज में आपन
धुरी पे नाच रहल बा

समाज के हर रूप के
"बदलाव" बता रहल बा

इमान गिरवी बा

इमान गिरवी बा इंसान के
समय के पैर से रौवंदा जाइ
कटाह पेड़ के डाली से
करेजा कांट से लिपटा जाइ
इमान गिरवी बा इंसान के

इमान गिरवी बा इंसान के
भँवर समय के जाल के
लीलार पे पसरा जाइ
इमान गिरवी बा इंसान के
समय के पैर से रौवंदा जाइ

आदमी भी समय से पहिले
कौड़ी में बिका जाइ
संभाल के रखी
की क़र्ज़ जिए के रउवा बुझा जाई
बड़ा शान से जन्मल बाबू के जीव
आधुनिक बयार में
आवश्यकता के मार में
बुता जाइ
इमान गिरवी बा इंसान के
समय के पैर से रउंदा जाइ

श्वेताभ रंजन

सिवान , बिहार के रहे वाला श्वेताभ रंजन जी , पिछिला कुछ सालन से भोजपुरी साहित्य के थाती मे गजब के बढोतरी कईले बानी। लगातार गद्य आ काव्य के माध्यम से भोजपुरी के साहित्यिक पछ के अउरी बरिआर करत , ईंहा के भोजपुरी काव्य संग्रह " कुछ कह रहल बा " प्रकाशित भईल ह। श्वेताभ जी एह घरी दिल्ली मे बानी।

का सांचो हमनी के जिनगी नरक हो गइल बा?

रउआ 10 आदमी से बात करीं, ओहमें से 7 आदमी कवनो ना कवनो शिकाइत करत भेंटाई। गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, अकाल आदि से ले के इंसानियत खतम हो गइल; पहिले वाला जमाना ना रहल; एकदम से कलयुग भा भठयुग आ गइल बा जइसन बात सुन-सुन के कबो-कबो बुझाला कि हमनी के केतना गलत समय में जनम लेले बानीं जा। टीवी-अखबार खोलला प दुख के मात्रा अउर बढ़ जाला, दिन भर में शायदे कवनो सुकुन देवे वाला समाचार भेंटाला। आज काल राशिफल बांचेवाला बाबा से ले के पंडीजी तक डरावे में बेसी रुचि ले रहल बाड़े, सोझा रहले प त ई लोग कुछ नीमन बोलबो करेले बाकिर टीवी प त बस प्रलय आवत बुझाला। देखते देखत शनि महाराज के क गो ठेकेदार पैदा हो गइल बा लोग जे लगभग धमकी देत लउकेले।

हमरा के ई सब बात अइसहीं नइखे इयाद आ रहल, एकरा पाछे हाल के दू गो घटना बा जवना से हम ई सब लिखे प मजबूर भइलीं ह । पहिला घटना 18 मई 2015 के। एह दिन लगभग हर चैनल प एगो खबर लउकत रहे जवना में मुंबई के किंग एडवर्ड मेमोरियल अस्पताल के नर्स अरुणा शानबाग के चर्चा रहे। एह नर्स के साथे 1973 में ओह समय वार्ड ब्वाय के रूप में काम करेवाला उत्तर प्रदेश के सोहनलाल नाम के व्यक्ति बलात्कार कइले रहे आ बर्बर ढंग से मारपीट कइले रहे जवना से ऊ ओही घरी आपन देखे के ताकत खो देले रही आ कोमा में चल गइल रही। एकरा बाद ऊ कबो सामान्य ना हो पइली आ लगातार 42 साल कोमा में रहला के बाद 18 मई 2015 के उनुकर देहांत हो गइल। एह खबर में बलात्कार, सोहनलाल, खराब व्यवस्था, स्त्री सुरक्षा आदि के त भरपूर चर्चा रहे बाकिर लगभग मुर्दा के हालत में रहेवाला व्यक्ति के 42 साल तक छोट बच्चन जइसन खयाल रखेवाला आ पालेवाला लोगन के धैर्य के चर्चा लगभग ना रहे। तनी कल्पना करीं एगो अइसन व्यक्ति के जेकर सारा समय बेड प सूतल गुजरत होखे। दू दिन ठीक से ध्यान ना राखल जाव त ओकरा देहीं में घाव हो जाला, जवना के बेडसोर भा शय्याव्रण कहल जाला। एके लगी पड़े रहे खातिर मजबूर गांव के बूढ़-पुरनिया लोग के अइसन हालत हमनी के अक्सर देखे के मिलेला बाकिर 42 साल बेड पर पड़ल रहेवाली अरुणा के साथे एको बार अइसन ना भइल। इहे ना ओह अस्पताल के बारे में सोचीं जवन लगातार उनुका खान-पान आ दवा दारू के सारा खर्चा उठवलस। नर्स आ डाक्टर लोग बिना शिकाइत के, बिना लाभ लोभ के चार दशक तक अरुणा के खयाल राखल। अक्सर हमनी के सरकारी अस्पताल भा दूसर संस्थान सब के बुराई करत रहेनीं जा बाकिर राज्य सरकार के ई अस्पताल जवना ढंग से अरुणा के सारा खर्चा उठवलस आ आपन एगो बेड के 42 साल तक उनुका खातिर समर्पित कइले रहल, ई छोट बात नइखे। कम से कम एकर उम्मीद खाली लाभ के गणित समझेवाला आ घुसे से पहिलहीं पइसा रखवा लेवेवाला जादातर निजी अस्पताल से त कइल मुश्किल बुझात बा। बलात्कार करेवाला व्यक्ति के काम त एगो क्षण के आवेग रहे बाकिर रोज अरुणा के खयाल राखेवाली नर्स लोगन के आ डॉक्टर लोग के काम त अइसन भारी रहे कि बढ़िया-बढ़िया लोग हाथ खड़ा क देबे। एह लोग के पता रहे कि बदला में कुछ नइखे मिले वाला, ई लोग जानत रहे कि अरुणा कबो ठीक ना हो पइहें बाकिर ई लोग आपन काम कइल कबो ना छोड़ल। मन में एगो विश्वास रहे कि ई हमनी के कर्तव्य ह जवना के निभावे के चाही।

दूसरका घटना ई बा कि एही 20 मई के हमार भेंट एगो रिश्तेदार से भइल। उनुका आर्थिक हालात से हम परिचित बानीं। ठीक से दू जून के रोटी आ देही प दू गो कपड़ा के

प्रमोद तिवारी

भभुआ बिहार के रहे वाला प्रमोद कुमार जी , केंद्रीय विश्वविद्यालय गांधीनगर , गुजरात मे असिस्टेंट प्रोफेसर बानी । ईंहा के भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य खातिर लगातार काम कर रहल बानी । पत्र पत्रिकन में प्रमोद जी के रचना आकर्षण के केंद्र होली स । भोजपुरी भाषा आ साहित्य के ईंहा के अपना लेखनी से बरिआर चोख धार देले बानी । एह घरी गांधीनगर गुजरात मे बानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

जोगाड़ कइल उनका खातिर बड़का काम ह। जब हमार मुलाकात भइल ओह घरी ऊ एगो हितई से नेवता पुजा के आइल रहले आ पसीना से भींजल कुर्ता धोवत रहले काहे कि ओही सांझी एगो दूसरा जगह नेवता ले के जाए के रहे। तबियत के हाल ई रहे कि खाना के जगह प खाली आम के पाना पियत रहले। हमरा के पता चलल कि एह महीना में 14 गो नेवता हो चुकल बा। अइसहीं पूछ देनीं कि अतना घाम में, पइसा लगा के दूर-दूर जाए खातिर काहें परेशान बानीं। बर-बारात में अइसन कवन मजा मिलेला। ऊ छूटते कहले कि अरे बबुआ अइसन कइसे हो सकेला। सवाल मजा के नइखे, सवाल संबंध के बा। भले 10 रूपया दिहीं बाकि समाज में आपन हिस्सेदारी त निभावे के पड़ी न। हमरा मालूम बा कि हमरा 10 रूपया से लइकी के बियाह में कवनो बड़का अंतर ना आ जाई बाकिर सवाल खाली रूपया के ना ओह भरोसा के हवे कि केहू तोहरा साथे खाड़ बा।

ई दूनो घटना में मूल बात जवन निकल के आइल ऊ एगो 'भरोसा' रहे। आ ई भरोसा तमाम तरह के खराब हालात में ताकत देबेला। ई सांच बा कि आज के आदमी जादे आत्मेंद्रित भइल बा, भूख आ गरीबी के कारण ठगी आ बेइमानी बढ़ल बा बाकिर एकर मतलब ई एकदम नइखे कि कुछ नीमन नइखे हो रहल। आ लोग, समाज आ इंसानियत के बारे में सोचल बंद क देले बा। बहुत छोट-छोट रूप में बड़का-बड़का काम हो रहल बा। हमरा पड़ोस के एगो प्रोफेसर जे अपना खराब व्यवहार खातिर जादे चर्चित बाड़ी, एक दिन पता चलल कि पास के झुग्गी-झोपड़ी के बच्चा-बच्ची सब के कॉपी किताब देबेली आ रोज एक घंटा अपना खुशी से पढ़ावेली। हम जवना शहर में रह रहल बानीं उहां हर 10 गो पेड़ के बीच में एगो छोटी गो मचान बना के चिड़िया खातिर पानी आ दाना के व्यवस्था कइल गइल बा। 'सुपर 30' जइसन काम छोट स्तर पर कई लोग कर रहल बा जेकरा बारे में पता ना चल पावेला। अइसन तमाम लोग हमनी के चारो ओर बिखरल बा, बूंद बूंद के रूप में अपना शक्ति भर काम कर रहल बा, ई कहे के जरूरत नइखे कि एही बूंद से इंसानियत के नदी बन रहल बिया, बह रहल बिया। अकसरहां हमनी के छोट काम के महत्व ना देबेनी जा, केहू के सड़क पार करा दिहल, सड़क प गिरल केला के छिलका के उठा के किनारे रख दिहल, आपन पुरान किताब भा कपड़ा बांट दिहल, कवनो घायल के अस्पताल पहुंचा दिहल बहुत छोट काम ह आ एह सब प हमनी के नजर बहुत कम जाला जबकि ई व्यक्ति के ना पूरा समाज के चरित्र के पहचान होखेला। ई सब कहला के हमार मतलब ई नइखे कि मीडिया के भा दूसर लोग के आलोचना कइल छोड़ देबे के चाहीं, जवन बाउर हो रहल बा ओकर आलोचना होखे के चाहीं, सरकार भा संस्था अपना जिम्मेदारी से कबहूं न चूके एकरा खातिर ओकरा प कड़ेर निगाह राखल जरूरी बा बाकिर जवन कुछ नीमन हो रहल बा ओकरो तारीफ होखे के चाही। अगर केहू पतंग के धागा से घायल कबूतर भा तोता के अस्पताल पहुंचा देत बा, अगर केहू धीरे धीरे सड़क पार कर रहल कवनो बूढ़ खातिर आपन बाइक भा कार रोक के पहिले जाए देत बा, गरीब छात्र खातिर कवनो मास्टर भा साथी फीस भर देत बा चाहे अइसन कवनो दूसर काम केहू करत बा जवन कि लोग अक्सर करते रहेले त एकरा के सामान्य घटना ना मान के एकर चर्चा होखे के चाही, एह से तमाम लोग के उर्जा मिलेला। एह से एगो संस्कृति के निर्माण होला आ खास तौर से छोट बच्चा लोग के अइसन करे खातिर उत्साह बनेला।

ऊपर के दूनो प्रसंग हमनी से सवाल पूछत बा कि एह 'भरोसा' प हमनी के आ मीडिया के केतना भरोसा बा? आ अगर नइखे त काहें? का नकारात्मक चीज के मार्केट वैल्यू सकारात्मक काम से बेसी हो गइल बा? का हमनियों के अइसने चीज पसंद करे लागल बानीं जा जवना में सेंसेशन भा चौंकाऊ तत्व होखे? का अपना आप से ई सवाल करे के सही समय नइखे कि पूरा दुनिया कइसे खराब हो गइल? दुनिया आ समाज त हमनिए से न बनल बा, सरकार आ संस्था चलावेवाला लोग कवनो दूसरा ग्रह से त आइल नइखे, ई लोग हमनिए के बीच से निकलल केहू के चाचा, दीदी, भाई, पति, बेटा-बेटी बा लोग। त का हमनियों के एकदम खराब हो गइल बानीं जा? हमनी के भीतर कवनो नीमन बात नइखे रह गइल? हमरा के पूरा यकीन बा कि जादातर लोग के जवाब इहे आई कि ना अभी हमनी के भीतर बहुत कुछ नीमन बांचल बा। आ कुछ मजबूर आ मानसिक रूप से बीमार लोग के छोड़ दिहल जाव त जादातर लोग अइसन बा जे अपना ताकत भर समाज आ मानवता के बारे में सोच रहल बा।

अगर अइसन बा त फेर चिंता कवना बात के बा, हमनी के अगिला पीढ़ी के अउर बेहतर बनाईं जा आ ई मान के चलीं जा कि '**भरोसा' टूटी ना अउर मजबूत होई।**

www.bhojpurisahityangan.com

परमवीर - शहीद "अब्दुल हमीद"

धमई गाँव के बात ह, पचास के दशक के। गाँव के कुछ जमींदार लोग पचास के संख्या में गाँवही के एगो कमजोर के जबर्दस्ती फसल काटे खाति घुस आईल रहे लोग। ओहि गाँव के एगो नौजवान के जब खबर मिलल त उ अकेले दम पे पचासों आदमी के ललकार देहलस। ओकर हिम्मत देख के दू-तीन आदमी भी साथे आ गइल। आ लाठी-भाला से लैस जमींदार आ ओकनी के आदमी के खदेड़ भगाइलस। ओ वीर के नाम अब्दुल हमीद रहे। इतिहास साक्षी रहल बा की, भोजपुरिया माटी हमेशा एक से बढ़ के एक वीर के जनम देले बा। आ ओ वीर के पराक्रम के गूंज मय देश में गुंजल बा। शहीद अब्दुल हमीद भी एही परिपाटी के आगे बढ़ावे वाला एगो वीर सिपाही रहनी। असल उत्तर के नायक के नाम से भी इहाँ के मशहूर रहनी।

सन 1933, 1 जुलाई के, धमनपुर गाँव, जिला-गाजीपुर, उत्तर प्रदेश में मोहम्मद उस्मान जी के घरे इहाँ के जनम भइल रहे। बाउजी दर्जी रहनी, आ बेटा के बड़ होते उनको के आपन काम में हाथ बढ़ावे खाति लगा लेहनी। लेकिन हमीद के मन ना लागो इ काम में, बटालियन (फौज) में भर्ती होखे के बहुत मन रहे। घर वाला लोग चिंतित रहो की कहीं जवान बेटा फौज में भरती ना हो जाओ। एहीसे उनकर बियाह रसूलन बीबी से कर दियाइल। गृहस्थी में मन लगावे के सोचस, बाकी फौज में जाए के धुन उनकर कम ना भइल। कहल जाला की एक दिन उ सभे के बता के गइलें की हम जा तनी रेल के परीक्षा देवे, आ फौज में भर्ती हो गइले। घर में आपन मेहरारू से उनका हिम्मत मिलल आ उ चल गइलें आपन सपना पूरा करे। बहुत जल्दीए उनका के सभे जाने-माने लागल रहे, आ कुछ समय बाद उनका के कंपनी क्वार्टर मास्टर बना दिहल गइल।

छ: फुट तीन इंच लंबा अब्दुल हमीद हमीद के कुश्ती के भी शौक रहे। आ गाँव में उ कुश्ती लड़ल आ लईकन के सीखावल, दुनु काम करत रहनी। फौज में भरती भइला के बाद इहाँ के निशाना के भी जवाब ना रहे , आ अपना बटालियन में दूसर कवनों निशानेबाज इनिका सोझा टीक ना सकत रहे। सन 1962 के चीन के लड़ाई में भी इहाँ के लड़ल रहनी बाकी इतिहास में नाम दर्ज भइल 1965 के पाकिस्तान के साथे भइल लड़ाई में। ओ घरी इहाँ के छुट्टी में गाँवे आइल रहनी आ घर-परिवार के साथे व्यस्त रहनी, की कुछे दिन में वापस ड्यूटी पे लौटे के आदेश आइल। कहल जाला की इहाँ के जब जात रहनी गाँव छोड़ के त एक के बाद एक बहुत अपशकुन भइल बाकी देश के बुलावा के आगे कुछ ना सुननी।

8 सितंबर 1965 के बात ह। चीमा गाँव के लगे उखिं के खेत में अब्दुल हमीद जी आपन ड्राईवर के साथे जीप में बइठल रहनी। करीब 9 बजे दिन में दूर से कुछ टैंक के आवे के आवाज सुनाई पड़ल। ओ बेरा उनका अंदाजा हो गइल रहे की उनकर जान अब देस खातिर कुर्बान हो सकेला,काँहे से की दुश्मन के संख्या बेसी रहे आ उनका लगे सिपाही के संख्या आ गोला-बारूद दुनु नाकाफी रहे। बाकी देश -प्यार में मताईल अब्दुल हमीद खेत में लुका के आपन रिकॉयलेस गन के रेंज में दुश्मन के टैंक के आवे के इंतेजार कइनी। जइसे टैंक रेंज में आइल, फायर कर देहनी आ टैंक धू-धू करके जरे लागल। दुश्मन अचानक भइल हमला से घबरा गइल रहे, आ जब ले सम्हरे के मौका मिलल तीन ठो अउरी टैंक बरबाद हो चुकल रहे। पाकिस्तानी सेना में हलचल मच गइल की अभेध कहाए वाला पैटन टैंक कइसे बरबाद हो जाता। ओ समय के पाकिस्तानी कमांडर खीस में पगला गइल आ ओइजा मौजूद सेना के सबसे पहिले टैंक बरबाद करे वाला के मार गिरावे के आदेश देहलस। सब टैंक के मुंह अब अब्दुल हमीद के तरफ मोड़ दियाइल आ कुछ संघर्ष के बाद एगो टैंक के गोला इनका के हमेशा खाति अमर बना के चल गइल। मरणोपरांत उनका के परमवीर चक्र से सम्मानित कइल गइल। सन 1988 में चेतन आनंद के बनावल दूरदर्शन पे आवे वाला कार्यक्रम "परमवीर चक्र" के प्रथम प्रेरणा स्रोत शहीद अब्दुल हमीद रहनी।

आखर परिवार के ओर से भोजपुरिया माई के लाल , भारत माता के अमर सपुत परमबीर चक्र बिजेता अमर शहीद बीर अब्दुल हमीद जी के शत-शत नमन।

www.bhojpurisahityangan.com

लघु कथा - दंगा

डा. उमेशजी ओझा

सबेरे-सबेरे सुरेमन आपन दुआर प मवेशी के खाये वाला चरनी प बईठी के पटुआ से रस्सी बरत रहले । रस्सी बरते-बरते एके हाली ना जाने कहाँ आसमान में भूला गईले । कुछ सोचे लगले । तबहि सुरेश उनका लगे गईले । काहो काका, " कहाँ भुलाईल बाड़S ? का सोचत बाडऽ । आ की काकी के ईयाद करत बाडऽ । "

अरे भागु ससुरा का बोलत बाडिस । ते त कुछओ नईखीस जानत । शहर मे नु रहत रहीस । अबही छुट्टी मनावे नु बाईल बाड । छुट्टी मनाव आ जा गाँव से हमनी के कईसन जिनगी अबही तीन-चार महीना पहिले जिअनीहा जा तोहरा का मालुम । सब केहु के आपन जिनगी आखिरियें लागत रहे । केकेरो आशा ना रहे कि केहु बाची । देखु हमार पीठ प निशान आ सुरेमन आपन पीठे घुमाके सुरेश के देखवले । सुरेश उनकर पीठ देखीके चिहाईल रह गईले । उनका पीठ पर कतने घाव के निशान रहे ।

" ई सब का है काका ? इहे नु दंगा के निशान है उहे सोचत रहनी हा कि कईसे आपन नाती जवन अबही छः वरीस के बा आपन छाती से सटले ओकर जान बचवले रही । दंगाई त हमनी के मरल समझीके छोड देले रहले । बाकिर भगवान के जे मरजी होला उहे ई धरती छोडी के जाला । "

इहे सब बात होते रहे तबही सुरेमन के छः वरीस के नाती जेकर माई बाबुजी ओह दंगा में ओकर साथ छोडीके कही दूर एह दुनिया से चली गईल रहले । सुरेमन के लगे आईल ।

" ए बाबा । उ खाना के पाकीट बाटे वाला अब नईखन आवत ? कब ले आईहे ?"

भिखारी ठाकुर

डा० रीता सिन्हा

भिखारी ठाकुर के भोजपुरी-साहित्य के शेक्सपीयर कहल जाला। इहाँ के पढ़ल-लिखल ना रहनी। लेकिन एतना प्रतिभाशाली रहनी कि इहाँ के नीकचा आज ले केहू ना पहुंच पावल।

इहाँ के "बिदेसिया " नाटक देखे खाती कई हजार लोग के भीड़ जमा होखे। नाटक में बियोग-सिंगार के चित्रण बा। परदेसी पति के बियोग में उनकर मेहरारू के बिरह-बेदना के बड़ा सुंदर बरनन बा। येही नाटक के ई गीत ह अ-

दिनवा ना बीते रामा तोरी इन्तजरीया में
रतिया नयनवा ना नींद रे बिदेसिया।
घरी राती गइली राम पिछली पहरवा से
लहरें करेजवा हमार रे बिदेसिया।
अमवा मोजरि गइले लगले टिकोरवा से
दिन पर दिन पीयराला रे बिदेसिया।
एक दिन अइहे रामा जुलुमी बयरिया से
डार पात जइहें नसाई रे बिदेसिया।

www.bhojpurisahityangan.com

तुलसीदास : तुलसी-जयन्ती आ अपना बचपन से जुड़ल संस्मरण

जब भी सावन आवेला हमरा आपन बचपन इयाद आवेला। इयाद आवेला आपन प्राइमरी, मिडिल आ हाईस्कूल। एकरा साथ ही इयाद आवेला रंग-विरंगा कागज़ से सजल आपन स्कूल, माइक, मुख्य अतिथि के आईल ,अपना स्कूल में गहमा-गहमी, छात्र-छात्रा के मन में उत्साह। साफ-सुथरा कपड़ा आ जूता-मोजा में सजल विद्यार्थी-गण।

तुलसी-जयंती के अवसर पर हमरा शहर के प्राय: प्रत्येक स्कूल -कालेज में तुलसी-जयंती के समारोह मनावल जात रहल ह। एकरा साथ ही कई सामाजिक आ धार्मिक संस्था में भी ई उत्सव उत्साह के साथ मनावल जात रहल ह। जवना में निबन्ध-प्रतियोगिता, भाषण-प्रतियोगिता, वाद-विवाद, कविता-पाठ होत रहल ह।

जब हमनी के बहुत छोट रहनी सम्भवतः प्राइमरी स्कूल में, तवना घड़ी के बात थोड़ा-थोड़ा इयाद आवता। जवन छात्र-छात्रा स्कूल के कार्यक्रम में भाग लेबे के चाहत रहे, चाहे जेकर अभिभावक अपना बच्चा के स्कूल के कार्यक्रम में भाग दिलावे के चाहत रहे ऊ अपना बच्चा के हफ्ता-दस दिन ले उहे रटावटत रहे जे ओकरा ओह दिन के कार्यक्रम में बोले के रहत रहे।

हमरा घरे हमरा बाबा के जन्मदिन के दिने हर साल अखण्ड 'मानस' के पाठ होत रहे। घर के कुछ सदस्य 'मानस-प्रचार समिति' से जुड़ल भी रहे लोग येह से बिना अर्थ समझले 'मानस के बहुत-सा दोहा-चौपाई सहज रूप में ही हमनी भाई-बहिन के इयाद हो गइल रहे लेकिन हमरा साथियन के घर के स्थिति कुछ भिन्न रहे जवना कारण मंच पर जाये के उत्साह में वोह लोग के मेहनत ज्यादा करे के पड़त रहे बावजूद एकरा मंच पर जाते मंच पर जाये के सारा उत्साह ठंढा हो जात रहे। अपना सामने एतना लोग के देख के रहल-सहल कसर भी पूरा हो जात रहे। केहू सुन्न हो जात रहे, केहू कवनो शब्द पर जा के घिसल रेकार्ड के तरह अटक जात रहे, त केहू माइक पकड़ला के पहिले ही जोर-जोर से रोये लागत रहे।

जब हम मिडिल स्कूल में गइनी त स्थिति थोड़ा भिन्न हो गइल रहे। अब हमनी के कुछ-कुछ दोहा-चौपाई के आसान शब्दन के अर्थ भी समझ में आवे लागल रहे। हमरा त कईगो दोहा कंठस्थ भी हो गइल रहे। कारण हमनी के इलाक़ा में अखण्ड 'मानस' पाठ में कोई नया छंद के प्रारम्भ या अंत करे के पहिले 'टेक' के रूप में 'मानस' के ही कवनो पसंदीदा दोहा के चयनित कर लेहल जाला आ ओकरा के छंद के पहिले आ अंत में कहल जाला। जब कोई आदमी चौबीस घंटा के अन्दर एक ही छंद के माइक पर हजारों बार सुनी आ दर्जनों बार बोली त ओकरा इयाद त होइए जाई। एकरा साथ ही हर साल 'मानस' के अखण्ड पाठ के 'टेक' भी प्राय: अलग-अलग होत रहे एह से हमनी के अपना व्यक्तिगत कोष में साल-दर-साल 'मानस' के दोहा के संख्या बढ़ते जात रहे।

जवना घड़ी हम कक्षा पाँच-छ: में अभी पढ़त रहनी तवना घड़ी के एक घटना इयाद आवता। कक्षा पाँच-छ: खातिर तुलसी-जयंती के अवसर पर भाषण के विषय रहे 'तुलसीदास के

ज्योत्सना प्रसाद

सिवान , बिहार के रहे वाली ज्योत्सना जी , हिंदी भाषा आउर साहित्य में बी. ए. (प्रतिष्ठा), एम्. ए. कइले बानी , अउर पटना विश्वविद्यालय से प्रोफेसर डॉ नंदकिशोर नवल के निर्देशन में महाप्राण निराला के गद्य के शैलीगत अध्ययन पर डॉक्टरेट कईले बानी। हिंदी में उपन्यास "अर्गला" प्रकाशित बा दू गो उपन्यास "अंतत:" आउर "मुक्तकुंतला" , कविता संग्रह आउर कहानी संग्रह प्रकाशन के प्रतीक्षा में बा। अरबी भाषा के मशहूर उपन्यास "अल-रहीना" के हिंदी में "बंधक " शीर्षक से अनुवाद आउर प्रकाशन। जॉर्डन, चीन आउर अमेरिका में आयोजित सम्मेलनन में कविता पाठ। एह घरी मुंबई में रह रहल बानी।

जीवन-चरित्र' । तुलसीदास के जीवन से सम्बन्धित जन-मानस में जे बात बा ऊ कमोबेस अपना ओर के अधिकांश लोग जानता। छोट बच्चन खातिर त केहू अभिभावक शोध करी ना आ ना ही ओह उमिर के बच्चन में अभी एतना प्रौढ़ता ही रहेला कि ऊ स्वयं अपना ओर से अध्ययन करके तुलसीदास के जीवन-चरित्र में कुछ नया बिंदू जोड़ सके। एह से भाषण के सारा दामोदार अभिभावक या शिक्षक द्वारा तैयार करावल भाषण पर ही रहेला। जवना कारण प्राय: हर बच्चन के भाषण के मूल में एक ही बात रहेला अंतर सिर्फ ओकरा शैली के होला। बच्चन के ऊ उमिर भी अइसन होला जवना में कई बार बिना सोचले-समझले ऊ अपना माता-पिता, अभिभावक तथा अपना शिक्षक-शिक्षिका के बात के ही ब्रह्म-रेख समझ बइठेला। एही चलते हमरा कक्षा के दूगो बच्चा आपस में बहुत लड़ाई कइले। लड़ाई के कारण रहे तुलसीदास के जीवन से सम्बन्धित ऊ पंक्ति जवना में 'सावन शुक्ल सप्तमी' के जिक्र बा। एक बच्चा के अभिभावक ओकरा के इयाद करवले रहे 'सावन शुक्ला सप्तमी तुलसी तजे शरीर' उहई दोसर बच्चा के अभिभावक इयाद करवले रहे 'सावन शुक्ला सप्तमी तुलसी धरे शरीर'। ई 'धरे' आ 'तजे' शब्द दूनू बच्चन में एतना लड़ाई करवलस कि एक बच्चा के शर्ट के पॉकेट फड़ला आ दोसरा बच्चा के गाल नोचइला के बाद ही ऊ क्रोध के आग थमल। ओइसे ओह क्रोध के पूरा तरह से थमल भी ना कहल जा सकेला काहेकि ऊ क्रोध आँसू के अविरल धार में परिवर्तित हो गइल तब कहीं जाके थोड़ा-बहुत शान्ति भइल।

कहीं एक कप चाय खातिर, कहीं दसगो रूपिया खातिर त कहीं पार्किंग-प्लेस खातिर केहू के बाप के, भाई के, पति के, मित्र के खून बहा देहल जाता।

बच्चन में एह तरह के झगरा-झंझट त स्वाभाविक बा लेकिन आश्चर्य त तब होला जब एक सयान एह तरह के व्यवहार करेला। आज के दौर के जे तथाकथित विकसित,प्रबुद्ध किशोर-युवा-वर्ग बा ओह में से कुछ लोग पर्दा के दुनिया के ही यथार्थ माने लागल बा आ ओकरा ऊ सब कुछ पलक झपकते चाहीं जे ओकरा आदर्श के पास ओकरा रील के दुनिया में बा। एही कारण ओकरा व्यक्तित्व में जे उदारता, उदात्तता, गंभीरता चाहीं ऊ नइखे दीखत। उहई ऊ लोग जहाँ एक ओर बेकार के काम में अपना जीवन के वोह अनमोल समय में से सैकडों घंटा हर साल यूँ ही बर्बाद कर देला जेकर उपयोग कोई सृजनात्मक काम में कइल जा सकत रहल ह त दूसरा ओर ओह लोग के पास दोसरा खातिर पलभर के भी समय ना रहेला। इहे आज के भारतीय समाज के दर्पण भी बा आ विडम्बना भी। साथ ही आज के तथाकथित फैशनेबल लोग के जहाँ स्वार्थ बा उहाँ ऊ समय के चिंता तनिक नइखे करत मगर जहाँ स्वार्थ नइखे उहाँ पल-पल एह लोग पर भारी पड़ेला। एह लोग के दिल में तनिक भी दोसरा खातिर इज्जत नइखे आ ना ही अपना से बड़ा खातिर लेहाज। इहे आज के सच्चाई बा आ घर-घर के कहानी भी।

आये दिन समाचार में सुने के मिल रहल बा कि छोटी-छोटी बात पर बड़ा-बड़ा लोगन में हिंसात्मक प्रवृति जाग जाता। ई कहाँ तक उचित बा ? कभी छोट-छोट बात पर एक - दूसरा के कत्ल कर देहल जाता। कहीं एक कप चाय खातिर, कहीं दसगो रूपिया खातिर त कहीं पार्किंग-प्लेस खातिर केहू के बाप के, भाई के, पति के, मित्र के खून बहा देहल जाता। इहाँ तक कि बौद्धिक-वर्ग के लोग भी एक-दूसरा के नीचा दिखावे में कोई कसर छोड़त नइखे। कभी त अपना के बड़ा साबित करे में, त कभी दोसरा के नीचा दिखावे के होड़ में पढ़ल-लिखल लोग भी गवाँर नाहिन व्यवहार करता। एतने ना अपना ओर कहल जाला नू कि नामे नाम नाहि त अकरवले नाम। एही के चरितार्थ करत आज के कुछ बुद्धिजीवी लोग बिना ई सोचले-समझले कि उनका बात के आज के नौनिहाल, भारत के भविष्य आ कल के नागरिक पर का असर पड़ी सिर्फ सस्ता लोकप्रियता पावे खातिर जान बुझ के कुछ अइसन अटपटा बात लिख देता जे कवनों कीमत पर स्वस्थ समाज के निर्माण त नाहिए करी। अगर मान लीं कि ओह बात में एक प्रतिशत सच्चाई भी होखे त अपवाद से नियम ना बने। एक सच्चा रचनाकार के त ई कर्तव्य ही ना बल्कि आप्तधर्म भी होला कि ऊ अपना रचना के माध्यम से अपना समाज के सिर्फ दर्पण ही ना दिखावे बल्कि एक अच्छा समाज के निर्माण के मार्ग भी प्रशस्त करे।

हाईस्कूल में आवत-आवत भाषण आ निबन्ध के लम्बाई बढ़ जात रहे आ ओकरे साथे गम्भीर हो जात रहे ओकरा विषय-वस्तु के दायरा। कई बार त बिना समझे भी विद्यार्थी रट के बहुत-सा बात कह देबे। खासकर तुलसीदास के वैवाहिक-

www.bhojpurisahityangan.com

जीवन से सम्बन्धित घटना के जिक्र कइला बिना कोई विद्यार्थी ना रहत रहे जवना में पत्नी के प्रति उनकर अथाह प्रेम के जिक्र होखे ।

बात के गहराई के बिना समझले प्राय: हर विद्यार्थी अपना भाषण में वोह विशेष घटना के जिक्र कइल ना भूलत रहे जे तुलसीदास के अपना पत्नी से अथाह प्रेम के सन्दर्भ में उल्लेख कइल जाला। उनकर वैवाहिक जीवन उनका स्नेह के डोर से बन्धल रहे। उनका अपना पत्नी के प्रति अथाह लगाव रहे जे आगे चल के राम-भक्ति में परिवर्तित हो गइल। ई प्रचलित बा कि तुलसीदास जवना समय घर में ना रहले ओह घड़ी उनका पत्नी के मायका से उनका के बोलावे खातिर उनकर भाई आइल रहले। सैकडों साल पहिले के ई बात ह। ओह समय मोबाइल के अविष्कार त भइल ना रहे कि उनकर पत्नी झट से अपना पति के मोबाईल नं० डायल करती आ अपना मायका जाये के बात उनका से बतइती। चाहे अपना भाई के अइला आ उनका अइला के प्रयोजन ही अपना पति के सूचित कर पइती। एह से तुलसीदास के बिना सूचित कइले उनकर पत्नी अपना भाई के साथे अपना मायके चल गइली। तुलसीदास जब घरे लौटले तब अपना पत्नी के ना पा बहुत उदास हो गइले। उनका लोग से अपना साला के अइला के कारण आ उनका साथे अपना पत्नी के गइला के जानकारी हो गइल। तुलसीदास के अपना पत्नी से एतना लगाव रहे कि ऊ उनका बिना रह ना सकले आ अपना मन में ओही समय अपना ससुरारी जाए के ठान लेहले।

बरसाती रात रहे। झिमिर-झिमिर पानी पड़त रहे। चारों ओर घोर अंधकार फइलल रहे। नदी अपना उफान पर रहे। सऊँसे राह पानी ही पानी रहे। नदी पार करके उनका ससुरारी जाये के रास्ता रहे बाकिर रात में नाव कहाँ चलित ? एह से ऊ नदी में तैरत एगो शव के सहारे ही बरसात में उफनात ओह नदी के पार कर गइले। जले अपना ससुरारी पहुँचले तले रात काफी बित गइल रहे। ससुरार के सभे सुत गइल रहे। ओह समय ऊ केहू दोसरा के जगावल उचित ना समझले आ उनका अपना पत्नी के कमरा मालूम भी रहे जे घर के ऊपरी हिस्सा में रहे। दीवार से एगो साँप लटकल रहे। रात अँधेरिया रहे हाथ के हाथ ना सूझत रहे एही से तुलसीदास अँधेरिया रात में ओही साँप के रस्सी समझ ऊपर चढ़ गइले। जब ऊ अपना पत्नी के पास पहुँचले तब अपना पत्नी के सब बात बतवले। उनकर पत्नी के अपना पति के एह तरह से अपना ससुरारी आइल उचित ना लागल। एकर कुछ सामाजिक कारण रहे त कुछ आध्यात्मिक। ऊ अपना पति के ओह भौतिक प्रेम से तुष्ट ना भइली एह से ओह प्रेम के धिक्कारे लगली – 'धिक-धिक ऐसे प्रेम को...' ऊ कहली कि उनका एह नश्वर शरीर से उनकर पति जेतना प्रेम करतारन अगर ओतने प्रेम ऊ अपना आराध्यदेव से करीहें त उनकर जीवन धन्य हो जाई। भइल भी उहे। तुलसीदास के अपना पत्नी के प्रति जेतना प्रेम रहे ऊ राम-भक्ति में परिवर्तित हो गइल आ ऊ एक प्रेमी पति के स्थान पर एक अइसन रामभक्त बन गइले जेकर सम्पूर्ण विश्व में राम-भक्ति के क्षेत्र में तूती बोले लागल आ ऊ गोस्वामी तुलसीदास के नाम से पुकारे जाये लगले। राम-भक्ति में भी उनकर जिद्द अइसन कि अपना आराध्यदेव से स्पष्ट शब्दन में कह देहले कि हमार सिर तबे राउआ आगे झुकी जब बाँसुरी छोड़ रउआ हाथ में धनुष आई।

एह घटना के कई सौ साल हो गइल लेकिन आजो ई बात बतावे में सक्षम बा कि अगर आदमी में इच्छाशक्ति होखे त नश्वर प्रेम भी शाश्वत प्रेम के परिणत हो सकेला। अइसने हमनी के इतिहास में कइगो घटना बा जे प्रमाणित करेला कि अगर इच्छाशक्ति हो त असम्भव भी सम्भव हो सकेला। अगर चाणक्य नाहीन कवनों गुरु होखे त पत्थर के तराश के हीरा में परिणत कर सकेला।

पता ना काहे ई धरती अब अइसन सन्तान के जन्म ही नइखे देत। आज समाज में लूट-खसोट के धूम मचल बा। अत्याचार के नंगा नृत्य हो रहल बा। सरकार कोई होखे ,दल कोई होखे सब मिलाजुला के शून्य ही बा। अइसन लागता कि बोतल के आकृति बदल गइल बा लेकिन शराब उहे बा। आये दिन कवनों ना कवनों काण्ड में नेता लोग फँसले रहता। शैक्षणिक-संस्था जहाँ भारत के भविष्य निर्मित होला उहाँ भी अइसन धाँधली ? देश कहाँ जा रहल बा ? का हम आज ई बात भुला गइनी कि जवना देश में आज हम एतना स्वतन्त्रता से साँस ले तानी, रहतानी ओकरा के पावे में न जाने केतना वीर सेनानी के अपना जीवन के कुर्बानी देबे के पड़ल रहे ? हम जेकरा के जानतानी ओकर नाम त अपना अंगुली पर गिना देब लेकिन ओकर का जे एह देश के नींव में दब अपना के खाक के मिला लेहलस ? आज हमरा ओह लोगन के कुर्बानी के ही इयाद करके भी अपना के सुधारे के ही पड़ी। जब हम सुधर जाएब त देश अपने आप सुधर जाई।

www.bhojpurisahityangan.com

दू गो कविता

1.

अँखिया से सावन
ई झरझर के बोले
मति जा तू अब परदेस

इनुरा के बुनवा के
किरीआ ऐ बालम
लवटि चलऽ अपना तू देस

डहकत महतरिया के
छछनत अँचरवा बा
कि कब अईहें बाबू हमार

अचऽई के थरिअवा में
हथवा के पोछि पोछी
सुखाई दीहें अँखिया के धार

आग लागो बज्जर परो
लोर के कमाई के
जिनीगी बा कुछ दिन शेस

इनुरा के बुनवा के
किरीआ ऐ बालम
लवटि चलऽ अपना तू देस

अबकि सावनवा में
झुलुआ लगाईब
मरिहऽ तू झुलुआ पऽ पेंग

कजरी कढावते
बबुनी जी थाप दीहें
ढोलकी प कुदरबेंट-कुदरबेंट

झींगवा के टाँग हटे
सँउसे जिनीगिया
सँवारहीं में पाक जाई केस

इनुरा के बुनवा के
किरीआ ऐ बालम
लवटि चलऽ अपना तू देस

2.

मनतरी के तरी में
सभे तरिआईल बा
केहू नाम खोलि दिहलस
केहू अझुराईल बा
केहू मनतरी के
सेवक बनाई के
एके नाथे पगहा में
सभके नथाईल बा
योग नाम हऽ जोडे के
माया मोह से फोडे के
कूटनीति के चालन में
इन्सानियत मडोराईल बा
छाती के भाँथी से
कुछुओ ना उबरल
जमाई लेखा चरबी
देह पऽ लदाईल बा
"भूषणा" के पेट-पीठ
भऽईल बा एकही
राशन के जगहा पऽ
खाली भाषणे भेटाईल बा
किरिया तिलाक बाटे
काहे सभ निराश बाटे
आच्छा दिन तऽ आवते रहे
अबके बीछिलाईल बा

चंद्रभूषण पाण्डेय

आरा , बिहार के रहेवाला चंद्रभूषण पाण्डेय जी , भोजपुरी मे ठेठ आ गहिराह रचना खाति जानल जानी । भोजपुरी कविताई के एगो बरिआर ठेहा के रुप मे ईंहा के लगातार लिख रहल बानी । एह घरी ईंहा के बेगुसराय मे बानी ।

मुसमात भईल भोजपुरी

आज अपने लोगवा लतियावत बा।
हिकभर इंग्लिश में बतियावत बा।
बिरहा, चईता, निर्गुण छोड़ के,
निर्लज पॉप म्यूजिक गावत बा।
जेकरा से रहे उम्मीद, उहे बना लेहलस दूरी।
अपने घर में आज, मुसमात भईल भोजपुरी।

छोड़ के लोगवा आपन माटी, दूर-देश में भागत बा।
घर के भाषा बोले में,अब लाज लोग के लागत बा।
जब अपने बेटा दुत्कारी त,फिर कहा जाई माई ।
अश्लीलता के फूहड़ घाव से, आखिर के बचाई।
डहकत बिया पर,आठवी सूचि में मिले न मंजूरी।
अपने घर में आज, मुसमात भईल भोजपुरी।

सुख-दुःख अउर नीमन-बावुर सबमे एकर साथ रहल।
बचपन से लेके आज तक सर पे एकर हाथ रहल।
आज तरक्की कईनी त हम, जड़ आपन भूल गईनी।
आके शहर के परिवेश में, घर आपन भूल गईनी।
बाकिर एकरा बिना जिनगी के मिठास ना होइ पूरी।
अपने घर में आज, मुसमात भईल भोजपुरी।

नुरैन अंसारी, गोपालगंज , बिहार के रहे वाला नुरैन अंसारी जी , भोजपुरी आ हिन्दी मे लगातार गजल आ कविता के सिरजना कई रहल बानी । आखर प शुरु से ही नुरैन जी के लिखल भोजपुरी कविता आ गजल पोस्ट हो रहल बा । इँहा के एह घरी दिल्ली मे बानी ।

बाउजी के डायरी - (पन्ना-2)

(अनिमेष कुमार वर्मा)

बिनोद बो चाह गरम करके ले अईली आ चिंतित मन से उनका लगे बईठ गइली। हम ई ना पुछेम की का भईल बा, काहे की हमरा पता बा की रउआ बतावे वाला नईखीं। एहिसे खाली एतने बता दीं की सब ठीक बा नू ? हमार मन दु कईसन दो भईल बा। बिनोद आपन बाझल गला के साफ करत कहलें, तू परेसान मत होख। सब ठीक बा, बस हमरा कुछ समय अकेले बईठे के मन करता। ठीक बा बईठी रउरा, छोटका के बोखार बा हल्का अबले, हम दवाई देवे जातनी। उ उठ के चल देहली, आ जात-जात कह गईली की कुछों काम होखी त आवाज़ दे देम। उनका जाते बिनोद वापस आपन खयाल में डुबत चल गइलें। अपराधबोध उनका मन में रहे आ हिममर ना पड़त रहे की डायरी आगे पढ़ल जाओ। दस मिनट ले आंखि बंद करके माई बाउजी के याद करत उ ना जाने का का उंकर मन में आवो। केहु लेखां हिम्मत जुटा के अगिला पन्ना खोललें।

5 जून 1977, दिन रविवार

हम रोज डायरी लिखे के अपना आप से कईल वादा निभा नईखी पावत। समय नईखे मिलत, या हम आलस से निकाल ना सकनी भी हो सकेला। पिछिला चार-पाँच दिन से हमनी सभे बड़ी परेशान रहनी सन। बबुआ के तबीयत ढेर खराब हो गईल रहे। पांच दिन पहिले, भोरे-भोरे उनका बोखार पकड़ लेहले रहे। स्कूल से अईला के बाद उनका तेज बोखार रहे, आ मुंह एकदमे छोटी चुकी भइल जात रहल। इ भोरे से बबुआ के गोदी लेके बईठल रहली। दुनु जना भोरे से कुछ ना खाईले रहे। बबुआ बोखार के मारे पानीओ ना पीअत रहलें, आ उनकर माई के प्राण आधा सुख गईल रहे आठ घंटा में। एहिसे उहो अन्नजल त्याग के बईठल रहली। हम उल्टे गोड़े वापस आ गइनी आ चौक से दु ठो सिंघारा कीन ले अइनी। बबुआ के देह भयंकर तपत रहे आ हमरो घबराहट शुरू हो गईल रहे। बबुआ के लेले हमनी के वैध जी के घरे गइनी सन। बैध जी नब्ज देख के कहलें की घबराए के बात नईखे भोरे ले उतर जाई आ कुछ दवाई ना देहलें। घरे आ के राति भर बबुआ के गोदी लेहले बईठल रह गईली इ, आ पानी के पट्टी माथा पे बदलात रह गईल। हमरो मुश्किल से दू- तीन घंटा अंघी आईल रहे। भोरे ले बोखार ना उतरल आ बबुआ कुछ खइबो ना कइलें, राति के दूध दिहल गईल त उहो निकाल देहले। हमनी के बैध जी लगे भागल गइनी सन। उ कुछ दवाई देहलें आ कहलें की काल ले ना जाओ बोखार त

www.bhojpurisahityangan.com

एक हाली शहर देखा आव लोग, बिपिन बाबू डॉक्टर के हमार नांव बता दीह। एतना सुनते इनकर लोर गिरे लागल, आ हमरो ना बुझात रहे की शहर ले जाये के बात काहे कईनी बैध जी।

हम स्कूल में छुट्टी के दरखास्त दे अईनी आ दिन भर घरे रहनी। दिन मे जाके बबुआ के बोखार तनकी सा उतरल रहे त हमनियों के दुनु जना तनी आराम कईनी सन। बाकि राति के फेनु बोखार चढ़ गईल। भर राति हमनी के बारी बारी से पट्टी बदलत रह गइनी। बाकी भोर होत-होत इनको बोखार ध लेले रहे। हम स्कूल जाके छुट्टी के अर्जी दे आईनी । एतनो पर इनकर कहनाम बा की शहर जाके डाक्टर के देखाइए आवे के बबुआ के । दूपहरिया के हम रिक्शा ले अईनी, आ हमनी के तीनों जना शहर खाति निकल गइनी सन । रास्ता में एगो मजार पड़ेला जहां मौलवी साहब के बारे में गाँव मे बड़ी बतकही होला । पता ना का भइल ई रिक्शा रुकवा देहली । पिछिला कुछ दिन के परेशानी आ थकान के मारे हमरो हालत खराब रहे, आ अब इनकर अंधविश्वास का ओर झुकाव देख के हमार सब्र टूट गइल । हम खिसिया गइनी, आ कबों अइसन भइल ना रहे हमरा साथे पहिले । काहे के अंधविश्वास में पड़ रहल बाड़ू, समाज आ विज्ञान केतना आगे बढ़ गइल बा । हम अपना स्कूल में आवे वाला पीढ़ी के शिक्षा देवेनी ई सब से दूर रहे के, आ हमरे घर में होता - हम क़हत चल गइनी । हमार बात ओराए के बेरा ले ई बबुआ के गोदी लेके अंदर जाए लागली । हम खीस के मारे अंदर ना गइनी आ रिक्शा में बइठल रह गइनी । पंद्रह-बीस मिनट बाद ई वापस आइली । हम कुछ ना बोलनी आ चुप-चाप हमनी के आगे बढ़ गइनी सन रिक्शा से । शहर में डॉक्टर के इहाँ समय लाग गइल आ आवत-आवत अन्हार हो गइल । आवते ई अपना आपन साड़ी से बान्हल ताबीज निकालली आ बबुआ के पहिना देहली । हम कुछ कह ना सकनी ओ बेरा । रात के डॉक्टर के दिहल दवाई खाके आ हमार बनावल कांच-पाकल रोटी तरकारी खा के माई-बेटा सुत गइल लोग । थाकल रहला से हमरो सकेराहं ही अंघी लाग गइल ।

भोरे ले दुनु जाना के बोखार गायब रहे । तीन दिन बाद आज पहिला हाली इनिका चेहरा पे तनकी सा आराम के भाव आईल । चाय बना के हमरा लगे अइली आ कहली - देखनी नू ताबीज के असर, एके रात में बोखार गायब । हम कहनी की असर डॉक्टर साहेब के दवाई के बा आ तू जानेलु की हम अंधविश्वास से दूर भागेनी। विज्ञान के एतना आगे बढला के बाद आ एगो टीचर के मेहरारू भइला के बादो तहार ई कुल पे विश्वास राखल देख के हमरा अजीब लागता । ई चुप-चाप हमार बात सुनली आ कहली- हो सकेला राउर बात सही होखो आ दवाईए के असर होखी बाकी राउर बिज्ञान माई के ममता से कब आगे बढ़ गइल, हमरा नईखे पता । हो सकेला ताबीज़ बेअसर होखो, बाकी हमार विश्वास बा ओकरा में । आ एगो माई के ममता आ विश्वास के राउर बिज्ञान जब तौले लायक हो जाई तब बात करेम । हम कुछ कह ना सकनी । आज ले हमार हर बात में हं में हं मिलावे वाली के आज पहिला हाली हमार बात के विरोध करत सुनके हम निरुत्तर रहनी । नास्ता कइके स्कूल निकल गइनी ।

समाप्त...

बिनोद के चेहरा पे आत्मग्लानि के भाव आ गइल । उनका याद पड़ गइल की जब उनकर दुसरका लईका भइल रहे त बहुत कमजोर रहे शरीर से । माई-बाउजी भी गावें से भागत आईल रहे लोग । माई एगो ताबीज ले आईल रहे आ आवते आपन पोता के पहिना देहले रहे । एक हफ्ता बाद छोटका ठीक भइल । ओ दिन भी एतवारे रहे आ हमार ध्यान पहिला हाली गईल रहे ताबीज पे । हम माई पे बड़ी खिसियाईल रहनी । ई का कुल पोटली बांध देहले बाड़ू । एह दौर में भी तू ई कुल पे भरोसा कइसे कर सकेलू माई । आ हम निकाल के ताबीज ओहि बेरा अलमारी में बंद कर देहले रहनी । माई-बाउजी के चेहरा भावशून्य हो गइल रहे । ओ बेरा ना बुझाइल बाकी आज लागता की भावशून्य चेहरा के पीछे केतना दरद रहे । बिनोद भाग के गइलें आ अलमारी में से ताबीज खोज के छोटका के पहिनावे खातिर दे देहले । बिनोद बो के कुछ बुझाइल ना, बाकी उ कुछ-कुछ अंदाजा लगा सकत रहली । आ उहो त माईए रहली नू ।

जे छूटल बिकास के धारा बा

खेती-बाड़ी , कुटीर , कल - करखाना में
बदल गईल रंग रुप , मशीन मजूरा के ठेकाना बा
पुश्त - पुश्त से चलत परंपरा
टूटल एही किनारा बा
बहुते त गरीबी पार क गईल
बाकिर अभीओं ढ़ेरे पिछे छुटल बिकास के धारा बा।

बड़की- बड़की बिल्डिंग ,रोड़ ,कारखाना बईठल
एही " पईसा के समुंदर " में अमीर लो के रोजो डुबुकी नहाना बा
गांव - शहर में जब लहे- लहे करांति आईल
फूटल बिकास के नवका लहारा बा
बहुते त गरीबी पार क गईल
बाकिर अभीओं ढ़ेरे पिछे छुटल बिकास के धारा बा।

मजदूरा के थरिआ में अभीओं
दाल - तरकारी के पेड़ा जोहाना बा
खेती-बाड़ी के बढ़िआ होखे खाति
अभीओं देस में मानसून के सहारा बा
बहुते त गरीबी पार क गईल
बाकिर अभीओं ढ़ेरे पिछे छुटल बिकास के धारा बा।

सरकार गरीब के पार लगावे खाति कुछ करे भा ना
बाकि आश्वासन देत रहे के बहाना बा
योजना त देस में खूबे चलल
बाकिर प्रशासन एहीजा के बनल नकारा बा
बहुते त गरीबी पार क गईल
बाकिर अभीओं ढ़ेरे पिछे छुटल बिकास के धारा बा

प्रभाष मिश्र

छपरा, बिहार के रहे वाला प्रभाष मिश्रा जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बनी आ आखर के साथे जुड़ल बानी। इहाँ के कहानी आ कविता दुनु में हाथ सधल बा। फिलहाल इहाँ के नासिक में कार्यरत बानी।

सावन

इ दिन आसमान में बदरी अउर आंखि जहां तक देख सके हरियर हरियर देखे के ह, एही से एगो कहावतो बनल बा “सावन के जनमल आन्हर के सब हरियरे लौकेला ।” वैसे त इ कहावत नकारात्मक अर्थ में कहल जाला लेकिन देखल जाओ त अईसन आन्हर भईला से नीमन कौनो बात ना होई बड़ी जरूरी बाड़े अईसन आन्हर लोग, जे सगरे धरती के बारहोंमास सावन के रंग में रंगल देखिहें। गांव जवार में सावन बा हम बंगलोर में बानी, इहों सावने बा बाकि बरसात ओन्हे से इहंवा अगुताह होखे लागेला, लेकिन आकासे बदरी देख के मन हजारों किलोमीटर दूर

सांच कहल जाओ त बिया डाले के दिन से ही किसानी त्योहार के दिन शुरू हो जाला। खेत जोते आ धान के बिया डाले के साईत निकलेला फेर ओह दिन भिनसारे गाय के गोबर से अंगना लिपाला, पूरा घर धोआ पोछा के साफ होला, अंगना में कलसा रखाला पूजा होला आ एहीजुगे से कुदार आ बिया लेके घर के कोई संवाग जाला। साईत पर खेत कोर के बिया डाल दिहल जाला आ खरीफ के फसल के काम के शुरूआत हो जाला।

गांव जवार के धान के खेत में चहुंपे लागेला, कहीं से कान में सुनायी देला, चढत आषाढ़ घूमरी घन गरजे हो, साजु साजु हरवा—बैला पिया किसनवा कि, चढ़ल रोहिणी नछतर चल बो ल पिया धनवा। आ गाई गाई हम करब रोपनियां, हसी हसी गुनवा गाईब बदरिया के, बरिस बरिस हियरा जुड़ाईल, भर गईल सब नदिया नारवा पोखरिया हो।

अईसने में कब्बो कब्बो कच कच हरियर धान के खेत देखे खातिर अईसन मन कचोहे ला कि सहरिया से बाहर निकल जानी, चिकबल्लापूर, स्कांदागिरी, होसूर, कृष्णागिरी, मांड्या, रामनगरम, श्रीरंगपटनम एह दिन में ऐन्ने भी सब हरियरे लउकेला। दक्षिण भारत त अईसही पहाड़ के ओट में दूर

मनोरमा सिंह

सिवान , बिहार के रहे वाली मनोरमा जी , स्वतंत्र पत्रकार के रुप मे अपना लेखन शैली से बहुते प्रभावित कईले बानी । कई गो पत्र पत्रिका आ अखबार खाति ईंहा के लगातार लिख रहल बानी । एह समय ईंहा के बंगलोर मे बानी ।

तकले नरियर के बाग आ धान के खेतन के बीच छोट—छोट सुंदर गांव से मोह लेला। धान ऐने बारहोमास होला खरीफ जेकरा मुंगारू कहल जाला आ रबी जेकरा हिंगारू कहल जाला, फरक खाली इहे होला कि खरीफ के धान मॉनसून के बरिसल पानी में होला आ रबी के धान तालाब जेकर के इहां टैंक कहेला लो ओसे सिंचाई करके उगावल जाला। एकरा अलावे दिसंबर से मार्च के बीचों में भी अउर किसिम के धान के फसल लिहल जाला। खैर, हम बात करत रहनी आपन गांव के, पहिले गर्मी छुट्टी में डेढ़—दू महीना खातिर हर साल गांव जात रहनी, हमनी के रहते में बिया पड़ जात रहुए आ लौटे—लौटे के बेर ले रोपनियों शुरू हो जात रहुए। लाब्दा से एक—एक हाथ छोड़ के माटी में गुपी बना के ओहि में धान के पौधा लगावल याद बा हमके, रोपनी के मतलब एगो खेत में दर्जन भर से बेसी आदमी—जन, मजूरी करेवाला भी खेत के मालिक किसान आ उनकर घर के लईका बच्चा जईसन सवांग भी, माने खेते में एगो सामुहिक उत्सव जईसन माहौल। सांच कहल जाओ त बिया डाले के दिन से ही किसानी त्योहार के दिन शुरू हो जाला। खेत जोते आ धान के बिया डाले के साईत निकलेला फेर ओह दिन भिनसारे गाय के गोबर से अंगना लिपाला, पूरा घर धोआ पोछा के साफ होला, अंगना में कलसा रखाला पूजा होला आ एहीजुगे से कुदार आ बिया लेके घर के कोई संवाग जाला। साईत पर खेत कोर के बिया डाल दिहल जाला आ खरीफ के फसल के काम के शुरूआत हो जाला। बिया डाले के मूठ दिया गईल बा इहो कहल जाला, घरे दालभरल पूरी खीर, कढ़ी आ बारा पिट्ठा बनेला। एक महीना बाद धान के पौध तैयार हो जाला तब रोपनी होला। रोपनियों के दिने दालभरल पूरी खीर, कढ़ी आ बारा पिट्ठा बनेला रोपनी करेआला लो के खेते प खियावल जाला। एतने नाहीं आषाढ़ में आद्रा जब पड़ेला तब फेर अईसने कुल खाना आ पकवान बना के आदरा मनावल जाला। हमरा एगो और बात बड़ी नीमन लागत रहुए, मूठ दिअईला आ खेत कोरे जईसन मौका प जब बैलन के खेत में खूब खटे के पड़त रहुए तब सांझि के उनकर सेवा होत रहे, मालिश से लेकर, सुख के राखल गईल महुआ के फूल के आटा में मीठा के संगे घोर के तिली के तेल में पुआ जेकरा महुअर कहल जाला पकावल जात रहुए आ बैलन के खियावल जात रहे, कहेला लो कि महुआ में हल्का नाशा होला आ उ नाशा दर्दनिवारक जईसन होला, हालांकि महुअर बनेला बैलन खातिर लेकिन स्वाद अईसन कि सब केहु खात रहुए।

हालांकि धीरे—धीरे बहुत कुछ बदल गईल बा, हर—बैल बड़ी मुश्किल से कहीं लउकेला, खेती के काम में मदद करेवाला आदमी—जन बड़ी दिक्कत से मिलेला। अब तो गांवे के सब लोग मिलके कौनो नियत समय में धान रोपे आला मशीन आ बाद में काटे खातिर कंपाईन मंगवा लेला लो। हफ्ता भर में गांव के सगरे खेत के काम खत्म हो जाला। लेकिन जब तक किसानी बा चाहे मशीने से काहे ना होखे, ओ मौसम के गीत, खान—पान आ तीज त्योहार सब बा। सावन रोपनी के गीत के संगे संगे झूमर, कजली आ सावनियां गाए के भी दिन ह, तीज, रक्षाबंधन के भी महीना ह, झुलुआ प पेंग मारे के आ ससुरा में रह गईली बहिन के आपन भाई आ नईहर याद करे के भी मौसम ह। किसानी अउर गृहस्थी के काम आ हफ्तों तकले बुनी—बरखा के कारणे इ रीति रिवाज बनल होई कि सावन भादो में वियाह—सादी ना होला, बेटी—पतोह के नईहर ससूरा जाए के शाइत ना बनेला आ किसानों बड़ी जरूरी होखे प ही गांव से बाहरा निकलेला। सावन गांवे जाए के महीना ह, गांव से आए के ना।

www.bhojpurisahityangan.com

लय आ भोजपुरिया

कभी सोचले बानीं कि गिर्यसन भोजपुरिया के दिलेरपन,बांकपन ओकर शारीरिक बनावट के ले के काहे डफली बजावत रहस? भानु जी अपना रचना में भोजपुरियन के लऊर,पगडी आ धोती के गुन गवले बानीं?भारतीय सेना में भोजपुरियन के लडाई में आगे राखे के पाछे कवन तत्व छुपल बा?साँच बात इहे ह कि एकरा पाछे लय बा। लय आ सुर! जीS, रऊरा मानहीं के पडी। आज जवन भी पहिले के लिखल भोजपुरिअन पर केन्द्रित साहित्य पढीं,ओह में एह बधार के लोगन के शारीरिक बनावट के बडवागी, ओकरा मर्दानगी, जीवटता, हिम्मत, जुझारुपन भा मानवीयता के बडाई के पाछे लय के भी महत्वपूर्ण भूमिका बा। लय एगो महत्वपूर्ण कारक बा,जवना के टालल नईखे जा सकता।

मानव जीवन त छोडी,ई प्रकृति,ई ब्रम्हाण्ड,सभे एगो गति में,लयबद्ध होके आपन जीवन के उद्देश्य पुरावत बा। अब भोजपुरिया एह सिद्धान्त से अलगा कहाँ बा? आऊर त आऊर,प्रायोगिक रुप से ओकरा के ओकर माई-बाप जनमते लय के संगे जोडे के प्रयास भी करेला,जेकरा के रऊआ तनीं सा धेआन देहब त रऊओ बुझाए लागी। लय ही ऊ महत्वपूर्ण कारक बा,जवना से लईका-फईका हृष्ट पुष्ट होईहें स,एह बात के सभे बुढ-पुरनिया जानेला आ एही से लईका के जनम के पहिलही से ले के ओकरा के जवान बने तक तमाम जोगाड भा सरजाम कई ल गईल बा कि ऊ छव फूटा होखो।ओकरा में मर्दानगी के संगे-संगे भविष्य में जिंदगी के जिंदादिली से जिए के तत्व लय के घूँट पिआवे के जोगाड करावल गईल बा। कोल्हू के बैल भा हरवाही के बैल के गरदन में घंटी बान्हे के पाछे इहे नियम लागू होला-चाल के हिसाब से घंटी बाजी आ ओह लगातार आ रहल ध्वनि से एगो गति भा लय पैदा होई आ उ बैल बिना खटानी बूझले आपन काम पुरा कर ली।इहे लागू होला भोजपुरिअन पर आ ओकरा आवे वाला भावी पीढी परात आवल जाय,तनीं देखाव कि एगो भावी पीढी के भोजपुरिया लोग लय से कईसे ढींठ, जुझारु, कर्मवीर, साहसी बनावेला।

पूर्वी के टाँसी आवाज के अल्हरपन एक तरफ त दोसरा तरफ पूर्वी के ताल के उठान से ले के द्रुत भा फेरु स्थिर लय के दर्शन भी ओह जवान के जिनगी में भी हर हाल में जी लेवे के राह देखावेला।

अभिमन्यू अपना माई के पेटे में रहस त चक्रव्यूह तूरे के विधि सीख ले ले रहस। एकरा पाछे रहस्य बा कि माई के पेटे में लईका-लईकी,जे पलाता, ओकरा संवेदना आ जाला। अब हमनीं इहां के संस्कारन पर धेआन दिआव-लईका होखे के पहिलही ढोलक पर संझा-पराती गवाए लागेला। संझा-पराती गा के अपना पुरखा-पुरनिआ के सडे-सडे देवी-देवता के गोहरावे के एगो प्रयोजन पुरा कईल जाला। अब ढोलक के थाप,देवी-देवता के निहोरा वाला गीत अगर पेटे में पोसावे वाला लईका सुनीं त अभिमन्यू के नियम से ऊ का बनीं? अध्यात्म आ धार्मिकता,पितर लोग के प्रति आस्था के बिआ त बोआईए नूं गईल। ई ऊ कारन ह,जवन भोजपुरिआ के धरम के प्रति समर्पित बनावेला। लईका होते सोहर आ खेलवना जब ढोलक पर लय के सडे टांसी थाप दे के गवाला त बूझ जाईं कि जनमते ओह जनमवती लईका भा लईकी के एगो मनोवैज्ञानिक खुसी मिलेला।ऊ अपना के प्रफ्फुलित आ मनगर महसूस करेला। शुरु में त माई के दूध पिए घडी माई के हाथ के कोमल स्पर्श आ थपकी, जवना में लय के एगो निरन्तरता ओह जनमवती के आंख के बडी प्यार से झपकी में बदल देला आ ऊ तुरन्त सुत जाला। ई

उदय नारायण सिंह

संगीत के शिक्षक , लोकगायक आ भोजपुरी संगीत में नवीन प्रयोग करे खातिर उदय नारायण सिंह जी जानल जानी । छपरा , बिहार के रहे वाला हईं। ईंहा के भोजपुरी भाषा साहित्य आ संगीत में हरदम कुछ नया, कुछ अलग करे खातिर प्रयासरत रहेनी । अभी छपरा में बानी ।

सिलसिला कुछ दिन चलेला तब आवेला लोरी के बारी-जईसे रोज आवेलु त टेर सुनि के,अईयो रे निनिया निनरवन से-एह गीत के जब माई बडी प्यार से निरंतर लय दे के अपना वात्सल्य भरल सुर से धीरे-धीरे गावेले,त रऊआ बूझ सकतानीं,ऊ लईका चैन के अंघी में सुतेला। लय के कमाल त अब बा-तनीं रऊरो गुनगुनाईं ना एह गीत के-

ए चंदा मामा,आरे आव बारे आव,सोने के कटोरिया में दूध-भात ले ले आव,बबुआ के मुँहवा में घुटुSक-

लय लऊकल कि ना एह में? लईका खिलखिलात,ना नुकुर करत खा लेवेला।हई मामा के तरफ से घुटुक,हई नाना के तरफ से घुटुक।मन से त लईका खाइए ले ला तनिं आऊरो दाब लेवे में ओकरा परेसानी ना होला।

ई हृष्ट-पुष्ट बनावे के विधि हालय ओकरा के अईसही उमिर के पायदान पर आगे बढावत जाला।

अब लय धीरे-धीरे ओह लईका के दिन भर के संघतिया बन के ओकरा सङे हो जाला। उठत-बईठत, सुतत-जागत लय से ओकरा भेंट हो जाला। गाँव के लईका! उडत जात बकुला के झुंड के देखला पर आपन इयार-दोस्त के साथे उहो लय में दऊरत कहे लागेला- "बकुला-बकुला कहाँ जालS, मकई के खेत में,सेर भर सतुआ ले ले जा, गंगा में बहअवले आ" (भोजपुरिया बाल गीत आ ई आजो लईका सब गावे लें सS! एह गीत में एगो लय बा,अगर तबला पर बाजो त ई कहरवा ताल में बाजी)। छ: साल होत-होत पढे भेजे के तईयारी माई-बाबू करे लागेला लोग, जहवाँ लय राह जोहेला कि कब इहँवो इयारी गाँठी। "रामS गति, देहू सुमति" से सिरी गनेस कर के जब "आखर" के ज्ञान दिआला त उहवाँ लय लऊकेला-कSSSS, क हरसई किSSSS, कS दीरघई कीSSSS-----। तनीं पहाडा पर धेआन दीं- एका एक, दुआ दू भा दू का दूS, दू दूनीं चाSर, दू तीआईं छSव, दू चऊ के आSठ----। एह से एगो फायदा होला कि लयात्मकता आ रागात्मकता के चासनी में लईका डूब के इयादो कर लेवे ला आ ओकरा मानसिक थकान भी ना होखे। आखिर लय के सङे जे बा! एह में एगो पहाडा "काउंट डाऊन "के आवेला, जवन बिदेसिआ आजकाल्ह अपनईले हं सS, ऊ कहे लें सS-नाईन्टी नाईन, नाईन्टी एट,नाईन्टी सेवेन,नाईन्टी सिक्स--- ,जबकि हमनीं इहां कहाला-सईंया निनान्वेS अंठान्वेS संतान्वेS छिआन्वेS,पंचान्वेS -----। एह में इयाद पारीं रऊरा, अगर लईकाईं में ई पहाडा पढले होखेम त, एकर लय तनीं टेढ होला। एह में आड लय (शास्त्रीय ताल में लय के एगो अवस्था) के छींटा लऊकेला। माने अब धीरे-धीरे रऊरा गति के परिवर्तित रुप से भी भेंट होखे लागेला। ई लय जिंदगी के भावी आ अलगा -अलगा परिस्थिति में भी जिए के एगो अंदाज से परिचय करावेला।

किशोर हो गईल लईका त संघतिअन के साथे बहरसी मे खेला के मैदान में एके साँस में दऊरत ऊ एगो खेला खेलेला,जवना के हमनीं "कबड्डी" के नाम से जानींला सS। ओह में ऊ लईका एगो बोल पढेला-पहिल कबड्डी आईला, तबला बजाईला, तबला पर लईका, लाल-लाल बगईचाS! इयाद पड़ी अपना लईकाईं के, एह में लय रहे नूं? एके सांस में बोलत-बोलत ,एक-दू मिनट ले दऊर-दऊर के दुसमन गोल के कवनो के छू के आ मुआ के आवे के पाछे छाती के व्यायाम, स्फूर्ति-ताजगी के बना के राखे के ई उतजोग रहे कि ना? लय के ई प्रकार रऊआ जीवटता आ जुझारुपन के बानगी ह।

जवानी ले त लईका लय में एतना पकठा जाला कि का सीधा कि का टेढ,का तिरछा कि का आड भा बेयार-सभ लय के चासनी में ऊ जवान होत-होत पगा जाला। फगुआ के गवनई के तीनों अंदाज-विलंबित,मध्य आ द्रुत-जिनगी के तीनों हाल में जी लेवे के अंदाज बता चुकल रहेला। पूर्वी के टाँसी आवाज के अल्हरपन एक तरफ त दोसरा तरफ पूर्वी के ताल के उठान से ले के द्रुत भा फेरु स्थिर लय के दर्शन भी ओह जवान के जिनगी में भी हर हाल में जी लेवे के राह देखावेला।

लय त साचहुँ एगो क्रिया ह,जवन लगातार चलत रहेला बाकिर एकर मन पर, मिजाज पर कईसन प्रभाव पडेला । एह गूढ तत्व के भोजपुरिया पुरनिया लोग जान चुकल रहे आ एही से हँसी-खेल,पढाई-लिखाई में भी लय के संघत होत जाव,एकरा खातिर राह निकाल ले ले रहे सब। आज एकरे देन बा कि हमनीं के खटानी(श्रम शक्ति) के विदेसो में भाव लागेला। भलहीं बोका कहाईला सS बाकिर कलक्टर बन के भी देखाईला सS! त काहे ना एक हाली मन से बोला जाव-जीव रे भोजपुरिया आ तोर पुरखा-पुरनिया।

www.bhojpurisahityangan.com

लेखक :देवेन्द्र नाथ तिवारी

फोटो आभार : चेतन कुमार , मनेर

भोजपुरी लोक साहित्य, संस्कृति आ कजरी

सामाजिक चेतना के व्यापक अभिव्यक्ति के दर्शन लोक संस्कृति में मिलेला जहाँ साहित्य, कला, इतिहास, नीति, धर्म आ संस्कार जइसन तत्वन के समावेश रहेला। साहित्य संस्कृति में जीवनरस संचारित करेला आ संस्कृति साहित्य के कथ्य-तथ्य-भाव। सामाजिक विज्ञान में लोक संस्कृति के अध्ययन करे खाति लोक साहित्य के महत्व के उत्तरोतर स्वीकार कइल गइल बा। असल में लोक संस्कृति, जीवन में अंतर्निहित आधारबोध करावे में सक्षम होले जवना से वर्तमान आ भविष्य में सामाजिक-मनोवैज्ञानिक चेतना के भाव भरल जा सके।

भोजपुरिया लोक संस्कृति के समझे खाति सबसे बड़ आ महत्त्वपूर्ण साधन हऽ लोकगीत। साँच पूछी तऽ भोजपुरी लोकगीत मानवीय कार्य-व्यवहार आ आतंरिक संस्कारन से संबद्ध रहल बा। एहिजा मानवीय मनोभाव के शालीन आ आदर्श अभिव्यक्ति मिलेला। एह लोकगीतन के आँचर असीम विस्तृत-विशाल बा। इहाँ एक ओर दर्शन, धर्म, प्रकृति, पारंपरिक रीति-रिवाज, राजनीतिक चेतना के भाव बा ऊहें दूसरे ओर श्रृंगार, विरह, वियोग, संयोग, मिलन, संवेदना जइसन निठाह मानवीय भाव भी शामिल बा। एह लोकगीतन के तत्कालिक उद्देश्य खाली मनोरंजन भले नजर आवत होखे बाकि एह में मानवीय जीवन के मार्गदर्शन आ समन्वयवादी दृष्टि के संचार कइल भी शामिल बा। अध्यात्मिक चेतना के भाव से भरल निर्गुण गीत एकर उदाहरण के तौर पर देखल जा सकत बा।

भोजपुरी बधार में हर माहौल-परिवेश से संबंधित अलग-अलग लोकगीत मौजूद बा। ई लोकगीत भोजपुरिया जनजीवन के आत्मा आ प्राण दूनों होलें। एह लोकगीतन में मौसमी गीत जइसे कजरी-बारहमासा- झूलुआ गीतन के विशेष स्थान बा, जहाँ लय-स्वर आ राग के मिलन लोकजीवन के अपने रंग भींगो देला। कजरी गीतन में प्रेम, मिलन, विरह, सुख-दुख, समाज में फइलल कुरीति, विसंगती के प्रति लोक चेतना के पुनरुत्थान आ जन जागरण के तान अपना उठान प होखेला-

अरे बाबा बहेला पुरवैया,
अब पिया मोरे सोवे ए हरी...

देवेन्द्र नाथ तिवारी

देवरिया, युपी के रहे वाला देवेंद्र नाथ तिवारी जी , द संडे इंडियन भोजपुरी पत्रिका के कॉपी एडिटर रहि चुकल बानी। ईंहा के स्वतंत्र पत्रकार भी बानी आ एह घरी वर्धा महाराष्ट्र मे आगे के पढाई कई रहल बानी । कई गो शोध परक लेख अलग अलग पत्रिकन मे प्रकाशित हो चुकल बा । आखर पेज से शुरु से जुड़ल बानी आ भाषा साहित्य प कई गो लेख आखर प भी लागि चुकल बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

अइसे तऽ जेठ मास के गंगा दशहरा से कजरी गावल शुरू हो जाला। गंगा दशहरा से शुरू भइल इ परंपरा पचइयाँ (नागपंचमी) से लिहले कजरी तीज तक अपना उठान पऽ रहेला। अगर दिन के हिसाब से देखल जाए तऽ तीन महीना तेरह दिन तक कजरी गावे के विधान बा।

सावन के महीना श्रृंगार आ श्रद्धा के महीना हऽ। भोजपुरी लोक अँचल में सावन मास के पवित्रतम महीना मानल जाला। एही सावन में एह अँचल के लोक देवता शिव जी के पूजा-पाठ के विशेष महत्त्व सदा सर्वदा से रहल बा। सावन महीना में एह अँचल में सावनी गीत, रोपनी गीत, कजरी गीत, शिव भक्ति गीत के स्वर गूँजे लागेला।

मानसून के आगमन से कठोर आ जानलेवा गर्मी से राहत मिलेला। मानसून, नव सृजन के शुरूआत के प्रतीक भी हऽ। भोजपुरी अँचल के सारा खेती-किसानी अजुओ मानसूने पऽ निर्भर बा। मानसून आगमन के साथे खेतन में धान रोपल शुरू हो जाला। चहुँओर खुशी आ उल्लास के माहौल बन जाला। का चिरई-चुरुँग, का जीव-जंतु, का पेड़-पौधा, का खेत-खिरहान सभे मनई के संघे-संघे बिहँसे लागेला, खिलखिलाये लागेला। अइसना में रोपनी गीतन के स्वर- खेत में लेव लगावत बैलन के घँटी के धुन का साथे मिल के संगीत बन जाला-

अबकी रोपनिया में होई ताता-धइयाँ,
बरिस गइले बदरा मोर अँगनइयाँ।
झुकी-झुकी खेतवा में होइहन रोपनिया,
ठुमकी-ठुमकी बाजी पाँव पैजनिया
बैरी बदरिया के गवनइया,
बरिस... (जौहर शफियाबादी)

चढ़ते बसंत भोजपुरी अँचल में लगन शुरू हो जाला। चढ़ते सावन में नइहर से सुदिन आवेला, फिर ओह दिन पऽ उनकर विदाई होखेला। एक ओर जहाँ नइहर जाए के खुशी बा तऽ दूसरे ओर अपने प्रिय से दूर होखे के दर्द भी-

बादर बरसे बिजुरी चमके,
जियरा ललचे मोर सखिया
सइयाँ घरे ना अइले
पानी बरसे लागल मोर सखिया...

नइहर में मय सखि-सहेली, जुटेली आ हँसी-खुशी, सुख-दुख के बतकही होखे लागेला। आम के पेड़ पऽ झुलुआ पड़ेला। सभे सखि झुलुआ झूले लालेगा। बाकि नवविवाहिता के मन कइसे लागो, ऊ तऽ पिया लगे बा। सावन के फूहार आ झिहिर-झिहिर बहत ब्यार मन में कसक पैदा करेले आ विरहिन के बेदना कजरी बन के फूट पड़ेला-

सावन हे सखी सगरो सुहावन
रिमझिम बरसेला मेघ हे
सबके बलमउवा घर अइलन
हमरो बलम परदेस रे

कजरी आ गिरमिटिया

कजरी काहें शुरू भइल एह से जुड़ल कइगो लोककथा कजरी के नइहर कहल जाए वाला विंध्य क्षेत्र -मिर्जापुर में मिलेला। बाकि ओह से इतर एगो साँच इहो बा कि अंग्रेजी हुकुमत के जमाना में मिर्जापुर एगो डिपो रहे। जहाँ से ब्रिटिश कालोनी जइसे मॉरीशस, फीजी, त्रिनिडाड, सुरीनाम जइसन देशन के बगान में काम करे खाति गिरमिटिया मजदूर के भर्ती कइल जात रहे। गाँवे-गाँवे भर्ती एजेंट (अरकटिया) घूमऽ स आ लोग के अपना झाँसा में बहला-फुसिला के गिरमिटिया बने खाति तइयार करल स। अब अइसन गिरमिटिया बने जा रहल लोग अपना घर-परिवार के लोग के कइसे बतावे कि उ परदेश जा रहल बाड़े। अइसन में ऊ बहाना बना के कहे लोग कि हम मिर्जापुर जा रहल बानी। घरे के लोग तऽ इहे जानत बा कि ऊ मिर्जापुर गइल बाड़े बाकि ऊ तऽ अब परदेशी हो गइल बाड़े। अइसन परदेशिया से जुड़ल हई कजरी गीत आजो गावल जाला-

मिर्जापुर कइलऽ गुलजार हो
कचौड़ी गली सून कइलऽ बलमू

भोजपुरी लोक संस्कृति आजु अपना एही विलक्षणता के चलते जिवंत बिया। इ कहे में कवनो गुरेज नइखे कि भोजपुरिया संस्कृति पऽ भी भौतिकवादी तत्वन के प्रभाव पड़ल बा जवना चलते कुछ विकृति भी पैदा भइल बा। बाकि इ कहल जाला नू कि पाप के घड़ा फुटबे करेला, एहू अश्लीलता के घइली कबो फूटी आ लोक संस्कृति के कल्याणकारी स्वर फिर से भोजपुरी समाज के आपन इतिहासबोध करावत मार्गदर्शन करी।

www.bhojpurisahityangan.com

सावन महीना के विशेषता

प्रमोद कुमार पुरी

सावन के महीना आवे से पहिलही हर तरफ खासकर हमनी के भोजपुरिया क्षेत्र में एगो अलग ही रौनक देखाई देबेला, गर्मी से त्रस्त आदमी ,पेड़-पौधा , जीव-जंतु सबके मन हरिया जाला । माने की सगरो हरियरी लउके लागेला ,खेत –खलिहान , बाग़-बगईचा सब हरियर , सबका मन में एगो अजीब उत्साह देखे के मिलेला । बारिश के रिमझिम फुहार विरहन के सतावे लागेला , परदेशी के आपन घर आ घरनी सबकर याद आवे लागेला ।

सावन महीना के गीत संगीत में भी बहुत जगह प्रयोग भईल बा जईसे- सावन आये बादल छाये , सावन का महीना पवन करे शोर , चिंगारी कोई भड़के सावन उसे बुझाये –सावन जो आग लगाए । अईसन बहुत गीत बाड़ी स । खैर अब हमनी के ई जाने के बा की सावन के एतना महत्व काहे बा । अईसे त हमनी के हर महीना के एगो अलग-अलग महत्व बा बाकि सावन महीना के महत्व बहुत ही पुरान (पौराणिक) समय से बा , कहल जाला की ई देवन के देव महादेव बाबा भोले नाथ के प्रिय महीना सावन ह , आखिर काहे ! त रउआ सब के ई जानल जरूरी बा की देवी सती अपना बाबूजी दक्ष के घरे योगशक्ति से आपन देह त्याग देले रही ओकरा पहिले सती महादेव के हर जनम में आपन पति के रूप में पावे के प्रण लेले रही । अपना दोसरका जनम में रानी मैना आ राजा हिमाचल के बेटी के रूप में पार्वती जनम लिहली । सावने महीना में उ कठिन व्रत आ उपवास (बिना खईले-पियले) कई के ,महादेव जी के खुश कके उनका से बियाह कईली । एहिसे महादेव जी के प्रिय महीना सावन कहाला ।

एह महीना में महादेव जी के जल, दूध , दही , घी , गंगाजल ,शहद से नहवावल जाला फेरु बेलपत्र ,समीपत्र , दूब , कुश ,कमल , आक मदार इत्यादि फूल चढ़ा के उनका के खुश कईल जाला । उनका भोग के रूप में धतुरा –भांग चढ़ावल जाला । पूरा सावन महीना बम-बम भोले के जयकारा से गुंजत रहेला । गाँव देहात शहर हर जगह के शिवाला शिवमय हो जाला ।

अपना ओरी लईकी –मेहरारू खासकर जेकर नया –नया वियाह भईल रहेला झुला डारेला लोग आ झुलत –झुलत कजरी , वियोग –संयोग के पारंपरिक गीत गावेला लोग, कुछ स्वरचित गीत के मुखड़ा पेश बा-

कईसे झूली रे सखी झुलुआवा –पिया परदेशी भईले ना

पिया ना अइले मिलन –सावन बीतल जाय

अईले सावनवा साजनवा , झुलाव सखी हमके झुलानवा ना

एगो बहुत पुरान पारंपरिक गीत बा- हमके ना भावे भवनवा बिन सजनवा हो ननदी '' ई सब सुनके अईसन बुझाला जे केहू कान में अमृत रस घोर के डाल दिहले बा ।

सावन माह के शिव-भोले के बाद सबसे बड़ महत्व बा त उ ह ..राखी के त्यौहार (रक्षा बंधन) भाई –बहिन के रिश्ता के एगो अनमोल पल जेकर इंतिजार भर साल भाई-बहिन के रहेला । भाई चाहे कहीं रहो राखी बन्हावे खातिर बहिन किहाँ हर हाल में पहुँचही के बा । लईकी सब ससुरार से नईहर भाई के राखी बान्हे पहुँच जाली । राखी बान्हत समय पाहिले के युग में (अब कहीं-कहीं) एह श्लोक के पढ़ल जात रहल ह **" येन बद्धो बलि: राजा दानवेन्द्रो महाबल:। तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।"** मतलब जवना रक्षासूत से महाशक्तिशाली दानवेन्द्र राजा बलि के बान्हल गईल रल ओहि रक्षा सूत से हम तोहरा के बान्हत बानी जवन तहार रक्षा करि । ."रखिया के लाज हमार भईया निभईहSS रखिया बन्हावे तू कहीं से आ जईह । सावन मनभावन भोले शिव के महीना, गूंजेला सगरो बोल बम ए कांवड़ियां

शिव के व्रत कर वर के वरदान मिले , भर सावन होखे जय जयकार ए कांवड़ियां ॥

डाल झुला झुला डोलस सातो रे सुहागिन , काहे ना अईले हमरो सांवरिया

दिनवा त कट जाला कटे नाहीं रतिया , रेंगनी के कांट जस लागेला सेजरिया ॥

कोयल के कुक संगे हुक उठे हियरा , पिया परदेसी काहे नईखे हमरा नियरा

रहिया रोज निहारे अंखिया-कोर रहे भींजल , आ जईतS पिया जुड़ा जाईत जियरा ॥

www.bhojpurisahityangan.com

लेखक :बृज किशोर तिवारी

चित्र - स्वयंबरा बक्सी

दिल, जब बच्चा था जी (भाग –6)

(कहानी अब ले- रवा सभे लेखक के लईकायीं के बदमासी मे छुपल हास्य के श्रेणी में पढ़नी की कईसे दर्जी के कविता सुने के लालच में लेखक परेशान भईले। दर्जी के मजा चखावे खातिर आपन मित्र के कपड़ा सिलवा दिहले आ 40 रोपेया के मजा उड़ईले। अब आगे-)

लेकिन इ मामिला बहुते जल्दी बिगड़ गईल। लगले दशहरा के त्यौहार आ गईल। दशहरा में नया कपडा सियाए के रहे। बाबु जी नया कपडा किन के उहे दर्जिया के दे दिहनी सिये के नाप ओप लियायिल,कपडवो सिया गईल। अब बाबु जी के हिसाब में कपडा के सियाई में 40 रूपया और चढ़ गईल।

बाबु जी कहस की कपड्वा त हेतने बा... इ 40 रूपया कहा ले बढ़ गईल हो जुम्मन ?

दर्जिया कहल- एगो ड्रेस के भी कपडा रहे नु बाबु के (बाबु माने हम)

बाबू जी कहनी- ड्रेस कहाँ रहे यार, इहे कुल त हम कपडवे देले बानी। जवन की समनवे बा।

अरे ना गुरु जी ,बाबु से पूछी ना ?

अरे बाबु से का पूछी ? कपडवा त हमही नु किन के देब ,साल भर ले कौनो ड्रेस के कपडा हम कीनलही नईखी।

अरे गुरु जी ,गोसाई मत। बाबु से पूछ लेब। उहे लिया के देले रहनी। आ सिया के ले गईनी ,कहनी की एकर सियाई बाबू जी दे दिहे।

घरवा में क्रेडिट त हमार बहुत बढ़िया ना रहे। लेकिन बाबू जी हमार ,हमार पक्ष में एह से रही कि कपडवा त हम कीनलही नईखी ,त सियाई कहवा ले उ। भईल किच किच ! एही में ओह दूकान पर कई लोग जमा हो गईल।स्वस्थ माहौल में ही बात होत रहे, भईल कि हमरा के बोलावल जाव। हमरा अवते दर्जिया कहल -

का जी,एगो ड्रेस नईखऽ सियवले 20-25 दिन पहिले ?

हमार त हाड़ काप गईल ,बाबू जी के देखते साफे कह देनी -

ना... तऽ ,

अब त परल फेरा ! लोग कहल - लईका झूठ ना बोली ए जुम्मन मिया !

तू ऐसे कैसे कहऽतारऽ ?

जुम्मन मिया के मुह ताके लायक हो गईल,उ का कहस ,लास्ट में जुम्मन कहलन -

देखी गुरु जी ,रउवा पैसा भले मत दी लेकिन कपडा त सियवले बाडन इ बाबु। हम झूठ नईखी बोलत।

हमरो (झुठका) जमीर जागल - रोवायिन मुह कईके, लोगन के सामने कहनी- सियवले रहिति त कपड्वा हमार घरही में ना रहित,कि उड़ जाईत !

बाबु जी के ओरी देख के कहनी- घरे बा हमरा लगे कौनो नया ड्रेस ?

देखले बानी रउवा ?

आ टप - टप लोर चुवे लागल हमार दुनु आँखी ले, अब तऽ बाबु जी भी कहनी -

देखऽ जुम्मन 40 रूपया कौनो बड़ बात ना ह , तोहके लेवे के बा तऽ ले लऽ ,लेकिन झूठ बोल के मत लऽ !

अब तऽ जुम्मन कबो हमार मुह देखस ,कबो लोगन के, आ कबो हमार बाबु जी के। का कहस बेचारू

www.bhojpurisahityangan.com

लोग (भीड़)अलगे बतियावत बा- अरे जुम्मन तऽ बढ़िया आदमी हवे जी, उ झूठ ना बोली , आ गुरु जी भी बहुते बढ़िया आदमी हई, 40 रूपया खातिर। उहाका इतना किचिर किचिर ना करिति। आ गुरु जी के लईकवा , उ तऽ अभी लईका ह। देखनी ह ना कैसे टुसू -टुसू लोर चुवत रहल हऽ ?

आ उ तऽ कहते बा - डरेसवा रहित तऽ घरवे में नु रहित। अब का होखो ?जुम्मन हमरा ओरी देखस। हमरो नज़र, एक बार उनका के देखल उनका से नज़र मिलवते। तड़ दे बाया आँख दबा के धीरे से मुस्कियाके नजर घुमा लिहनी। जुम्मन मिया हमार बाबू जी के ओरी देखलन, आ मुस्कुरा के कहलन- गुरु जी ! जाये दी लागत बा, हमरे से भूल होत बा। एक बार फेरु से हमरा ओरी देख के जुम्मन जोर से मुस्कुरऽयिलन आ उनकर मुह से धीरे से निकलल-

बाबु बाबु ब्लैक शिप, हैव ए एनी वूल

हमहू धीरे से मन में बुदबुदा के कहनी बहुत पोयम सुनले बाड़ऽ ये जुम्मन मिया ! वसूली हो गईल !

चंट

सदियन से चलत बाटे, चलनवे ई पुरान बा,
नौनिहालन से आजु के, बाप, माई हैरान बा।
बउक बनल बड़कन आगे, छोटके सयान बा,
गुच्ची-मुच्ची देहिं बाकि, गज भर जुबान बा।

टिविया में कार-टून, मोबइलवा में गेम चाही,
रोटिया पे घिऊआ नाही, ब्रेडवा पे जैम चाही।
ननिए के आगे जी, ननिअवरा के बखान बा,
गुच्ची-मुच्ची देहिं बाकि, गज भर जुबान बा।

बाउर लागे गोड़ छुअल, हाय-बाय नीक लागे,
कोरा-गोदी कैद लागे, पुरनियन से दूर भागे।
घरवा से ढेर नीमन, खेलौना के दोकान बा,
गुच्ची-मुच्ची देहिं बाकि, गज भर जुबान बा।

तेज बा दिमगवा, आ पढ़इयो में ठीक बाड़े,
सुतावे पे जागल रहिहें, पढ़ला में, सूत जाने।
रोजाना फरमाइस में कौनो, नया समान बा,
गुच्ची-मुच्ची देहिं बाकि, गज भर जुबान बा।

चाह-परयास बा सही, संस्कार दीहल जाओ,
माँटी बा काँच, एके ठीक-ठाक गढ़ल जाओ।
जिनगी में आपन जेह से, हरिहर बगान बा,
गुच्ची-मुच्ची देहिं बाकि, गज भर जुबान बा।

अनूप श्रीवास्तव

देवरिया , उ. प्र. के रहे वाला अनूप श्रीवास्तव जी कला प्रेमी हई , संगीत गीत से इँहा बहुते गहिराह लगाव ह। भोजपुरी मे इँहा के निरंतर लिख रहली बानी। इँहा के गीत आ कविता बहुत ही सामयिक आ भाव से भरल होला। अनूप जी एह समय दिल्ली मे रहत बानी।

भोजपुरी भाषा हमार माई , लजाई काहे ?

जईसन कि आदत बा, मेट्रो में चढ़ते हम गेट के लगे कोना में खड़ा हो गईनी | अबही कुछ देर ही भईल रहे खड़ा भईले कि बहुत धीरे से एगो आवाज कान में पड़ल, 'नायका दवईया से बाबूजी के आराम बा नु ?' मुड़ के देखनी त हमरा ठीक पीछे बईठल एगो भाई कान से फोन सटा के एकदम धीरे-धीरे शायद अपना गांवे बतिआवत रहलन | बातचीत के टोन अउरी उनकर सूट-बूट आ टाई वाला पोशाक बतावत रहे कि भाई कवनो बढ़िया कम्पनी में कवनो बढ़िया पोस्ट पर काम करे लन | बातचीत के जेतना अंश हम सुन पवनी ओसे त इहे लागल कि उ अपना बाबूजी के तबियत के बारे में बात करत रहलन बाकी आवाज के धीमापन ई साबित करत रहे कि उ ना चाहत रहलन कि लोग उनका भोजपुरिया पहचान के जानो | हमरा ई बात तनी खराब लागल काहे कि अब जबकि बहुत लोग आगे बढ़ के भोजपुरी के एकर असली सम्मान दिलावे के लड़ाई लड़ रहल बा ए समय अगर अइसन बुद्धिजीवी भोजपुरिया लोग ही अपना मातृभाषा के साथ उपेक्षा के भाव राखी त फेर दिल्ली जईसन शहर में लोग भोजपुरिया लोगन के 'अजीब नजर' से ही देखत रही | हम सोचनी ई मुद्दा पर ओ भाई से कुछ बात करी | लेकिन फेर सोचनी कि कहीं उनका खराब ना लाग जाए | एही से एगो दोसर रास्ता अपनवनी उनका के देखावे ला कि भोजपुरिया माई के बेटन में अइसन लोग भी बा जे अपना व्यक्तित्व विकास के साथे-साथे अपना मातृभाषा के विरासत से भी जुड़ल बा | ओही बेरा हम अपना अघरे फोन लगा देहनी आ एतना आवाज में कि वो भाई के सुनात रहो बतिआवे लगनी | आस-पास के लोग भी सुनत रहे, ताकत रहे बाकी लोग का कही एकरा कारण अपना मातृभाषा के साथे अन्याय नईखे नु कईल जा सकत | हमरा फोन पर भोजपुरी में बात करे के क्रम में उ भाई बहुत बेर हमरा तरफ देखलन | उ जब देखस हम तनी हंसमुख चेहरा बना ली | ई सब में ही हमार गंतव्य 'जीटीबी नगर मेट्रो स्टेशन आ गईल | हम फेर बिना उनका तरफ देखले उतर गईनी मेट्रो से | मेट्रो स्टेशन से निकले ला जब हम मशीन पर कार्ड सटावत रहनी तले हमरा पीछे से एगो आवाज आईल, 'तनी जल्दी करअ भाई' पीछे मुड़ के देखनी त उहे भाई रहलन | हमरा चेहरा पर त आश्चर्य के लकीर खिंच गईल | जब उ भाई कार्ड सटा के निकललन त हमही पूछनी कि 'भैया अपने के घर कहाँ पड़ी', 'सिवान' उ बतवलन | बिना देर कईले हम अपना मुद्दा पर आ गईनी, 'रउरा एही से नु धीरे-धीरे भोजपुरी में बतिआवत रनी ह ताकि लोग ना सुने ?' उ कहलन, 'ए भाई जब तू पहिलके वाक्य बोलल ह फोन पर, गोड़ लाग तानी दीदी, त देखलअ ह केतना लोग के अचानक से मुड़ी उठ गईल ह, लोग अब भी भोजपुरी के हेय दृष्टि से देखे ला |' उनकर ई जवाब सुन के हम कहनी, 'अईसन भी हो सकता कि उ मुड़ी उठावे वाला लोगन में बहुत लोग भोजपुरी बोले वाला होखे आ ओमे से बहुत लोग के आज हिम्मत मिल गईल होखे कि उ लोग भी मेट्रो में भोजपुरी में बतिया सकेला | अबही एतने बात भईल रहे कि उनकर फोन बाजल आ उ 'ठीक बा बाय, अच्छा लागल तोहार भोजपुरी भक्ति' कह के चल देहलन | हम सोचनी, 'भोजपुरी भाषा हमार माई, लजाई काहे ?

निरंजन कुमार मिश्र

पश्चिम चम्पारण, बेतिया (बिहार) के एगो गाँव जयसिंहपुर के रहे वाला 'निरंजन कुमार मिश्रा' जी, अभी दिल्ली के एगो कॉलेज 'इआन स्कूल ऑफ़ मॉस कम्युनिकेशन से पत्रकारिता स्नातक के पढाई कर रहल बानी। पढ़ाई के साथ-साथ विभिन्न समाचार पत्र/पत्रिका में भी नियमित लेख लिखे नी। राजनीति, समाज, साहित्य-सिनेमा आ संस्कृति पऽ इहाँ के सअधिकार लेखनी।

www.bhojpurisahityangan.com

सेनुर

ओह राति के उमा के उंघाई ना लागत रहे। बीच आँगन में पलंगरी पर अपना मेहरारू के बगल में चितान लेटल उ आसमान के तिकवत रहलन। असमान अबे असाढ़ के पहिला पानी बरसावे खातीर आपन मिजाज बनावत रहे। अँजोरिया राति रहे बाकी रहि-रहि के करिया करिया बदरी चनरमा के तोपी के राति भकसावन बना द सन। कहीं-कहीं पर छितराइल तरई जरूर लउकसन। मउसम गरमसल रहे काहेके की हवा के बहाव एकदम सांत रहे बाकी आँगन में ओठन्घल उमा के दिमाग में कवनो तुफान दउगत रहे। असली में ओह्घरी उमा के मन भितरे-भितर बहुत बेआकुल रहे बेचैन रहे मन में कवनो सवाल दउगत रहे भा कवनो बाति के टीस बनहाइल रहे। उमा कवनो झुरखुट में अझुराइल रहलन आ उ एह से निकले के सोच में बुडल रहलन। आदमी अपना के जब कवनो मुसीबत में पावेलन त उ ओकरा से निकले खातीर कवनो भी तरीका अपनावेलन कइसनो भी जोजना बनावेलन चाहे ओकर रहता निमन होखे भा जबुन उ ओह घरी बस अपना तन-मन पर गुजरि रहल बिपत बलाई से बचे के कोसिस करेलन।

बड़ी देरि बाद उमा आपन धेयान अकास से हटवलन। मुडतारी तकिया के निचे मोबाइल रहे उ मोबाइल निकाल के समय देखलन। राति के डेढ़-दू बजि गईल रहे। तनकी देर खातिर बारल मोबाइल के मधिम रोसनी में उनका अपना मेहरारू के चेहरा चमकल जवन सुतला राति में भी कवनो फुलाइल फूल सरीखा फुलल रहे आ ओहसे एगो अजीब मदहोसी फइलावे वाली गमक आवत रहे। इ बाति साचि रहे उमा के मेहरारू के सुघराई के कवनो तोड़ ना रहे आ उमा ओह पर मोहित रहलन अइसे मोहित रहलन जइसे कबो नारद जी बिस्वमोहिनी पर भइल होइहन। बाकी ओह घरी ओह छनभर घरी खातीर उमा के अपना मेहरारू के चेहरा देखि के जइसे मन घिना गइल भिनुक गइल आ खिसीन दांत किटकिटा गइल। हाथ के मूठी कसी के अपने आप बन्हा गइल कपार भारी हो गइल जइसे चले भर के मोटरी ओहपर अच्चके केहू लाद देले होखे। अइसना में आदमी के मन पितपिता जाला आ उ कुछो करे से गुरेज ना रखे ला। उमा के भी अइसन लागल। मन कइलस की हाथ से केहुके घटई टिप दीं केहू से बाझ जाईं अझुरा जाईं भा अपना कपार के कवनो पथर पर पटकी दीं बाकी अइसे कइला से उनका का भेटाई कुछ ना, उ आपन कवनो नुकसान नइखन करि सकत आ फेरु जवन काम आराम से हो जाई ओकरा खातीर अझुराए के का बा। उमा कइसहू अपना भितर लहकत किरोध के अहथिर करे के कोसिस कइलन आ गते से पलंगरी से उतरि खमीहा में रखल घइली के लगे पहुचि बइठ के एक गिलास पानी पिअलन। पानी पि के बइठले-बइठल थोरकी देर कुछ सोचला के बाद उ सिधे बखारि में घुस गइलन। जब बखारि से निकललन त आँगन में इ तजबीज कइलन कि उनकर मेहरारू पुरा तरह से निंद में बिया। उमा अब कुछ देरी ना कइल चाहत रहलन जइसे मन कवनो बाति खातीर अफनात रहे। ह, ओहघरी मन में जरूर कुछ डर रहे आ करेजा भितर से कांपत रहे बाकी उ आपन निरणय सायद ले चुकल रहलन आ ओकरा के बड़ी अराम आ सजग होके पुरा कइल चाहत रहलन।

अब छनो भर के देरी ना कइले बिना उमा निकसार में पहुचलन। निकसार के दरवाजा के उ कले से खोलि के बहरी भइलन आ फेरु बहरी से दरवाजा बन कइके सिकड़ी चढ़ा दिहलन। लागे कवनो बिलारि गाड़ा में ढाकलि दही के बेहुड़ी के पेहान हटावत होखे संचेती होके की कही केहू कुछ अवाज ना सुनि ले। घर के बहरी हाता में चउकी पर बाबुजी

बृज भूषण चौबे

बक्सर के रहे वाला बृज भूषण चौबे जी, भोजपुरी गद्य साहित्य मे युवा उभरत नाव बानी। ईंहा के लेख कहानी पहिले भी आखर प आ चुकल बा। एह घरी ईंहा के मुम्बई मे रहि रहल बानी।

सुतल रहलन आ हाता के गेट जवन कराकट के रहे बंद रहे। उमा के बुझाइल उ कुछ गलती करत बाड़न। उनकर मकसद हाता से बहरी निकले के रहे, बाकी हाता से बहरी निकले खातीर करकट के गेट खोले के परित आ गेट खोलत समय अवाज जरूर होई जवना से बाबुजी जागि सकत रहलन। उमा अइसन ना चाहस। उ फेरु केवाड़ी के सिकड़ी खोलि के घर में घुसलन आ घर के दरवाजा भितर से बन्द कई दिहलन। आँगन में मेहरारू अबे ओहितरे बिना होस परान के सुतल रहे। उमा छत पर जाए वाली सीढी से छत पर चढ़लन आ छत से हाता वाला छत पर। हाता के आगे एक ओरि एगो छोट छरदेवालि देके एकपलिया छान्हि छावल रहे आ ओह छरदेवालि के डाढा हाता के देवालि से हि निकलल रहे। उमा उहे डाढा ध के छान्हि पर उतरलन आ एकरा बाद छान्हि से निचे। छान्हि के बहरी एगो बसहट पर निखहरे उघारे-निघारे उमा के घर के चरवाह बलिया सुतल रहे। उमा बलिया के खटिया के लगे पहुचि के ओकर कान्हि हिलवलन। बलिया अचकचा के जागल बाकी ओकरा इ ना बुझाइल कि ओहके के जगावल ह। उमा जब बलिया से कहलन कि साँझि के हमार मोबाईल खेते पर छुट गइल बा से चलु लेले आवल जाऊ ना त सुबेरे कवनो ले लिहसन त उ समझी गइल कि इ छोटका मालीक हवन। बलिया उमा के बाति सुनते खाडा हो गइल। उ ओह घरी अभी उंघाई के मारे झपात रहे बाकी फिर भी उमा के पिछे -पिछे उठि के चअल दिहलस।

उ लोग गाँव के तरी से निकलला के बाद कुछे देरि में सिवान के परती परल खेत में चले लागल। बलिया के आंखि अबे मचमचात रहे दीन भर के काम कइले थाकल-खेदाइल ओकरा निंद अबे पुरा ना भइल रहे। कुछ दूर चलला के बाद उमा बलिया से खइनी मंगलन। बलिया अपना लुंगी के खुंट से चुनवटी खोलि के दु खिली खइनी उमा के तरहथी पर दे दिहलस आ जब चुना देबे के भइल त उमा मना क दिहलन इ कहि के कि चुना हमरा भीरी बा। बलिया चुनवटी के फेर खुंट में बान्हे लागल बाकी ओह घरी बलिया के मन में एगो छोटीगो सवाल कउधल कि मालीक त खइनी खालन ना आ अगर मन कइले होई आज खाए के भी त अचानक इ चुना काहें राखे लगलन। बाकी ओकरा एह कुल से का मतलब उ खइनी दे दिहलस ओकर काम हो गइल। अब उ लोग एकदम मध सिवान में आ गइल रहे। उमा थोरकी देरि तरहथी पर खइनी रगरला के बाद आपन हाथ बलिया के तरफ बढवलन। बलिया एक खिली खइनी ले के ओठ निचे दबा लिहलस। खइनी के ओठ के तरी दबावत छनो भर ना भइल कि बलिया के देहि में एकबाएक लुत्ती फुटे लागल जइसे चिलींगा लेसि देले होखे आ अचानक पेट अइठे लागल। बलिया अबे कुछ सोचित समझित तबतक पेट के दरद अतना बढ़ी गइले कि उ तुरते पेट धइ आहि दे कई के बइठ गइल। बलिया अब चिचियाए के कोसिस कइलस बाकी उमा जइसे एकरा खातीर पहिलही से तइयार रहलन उ झपेटा मारि के बलिया के ध के दबोच लेहलन। बलिया अपना दरद में गोताइल रहे। उमा ओके लाथार के ओकरा छाती पर बइठ के ओकरा मुह में ओकरे लुंगी ठुसी दिहलन। खइनी में मिला के दिहल सलफास बलिया पर पुरा तरह से आपन असर कइ देले रहे। बलिया के सरीर दरद से फाटे लागल देहि से पानी चले लागल उ छपिटाये के कोसिस करे बाकी उमा ओकरा के हुमची के दबोचले रहलन आ अब बलिया में उमा से बिरोध करे भरि के सकस भी कहाँ रही गइल रहे। धीरे-धीरे बलिया के देहि अहथिर होखे लागल आ कुछ देरि में उ एकदम परि गइल उमा समझी गइलन काम हो गइल बलिया मरि चुकल बा। अब उमा बिना कवनो देरी कइले गाँव के तरफ भगलन गाँव में जाके फेनु छान्हि पर से डाढा आ एकरा बाद छत से आंगन में उतरि के मेहरारू के बगल में जाके सुति गईलन। मेहरारू अबे ओहितरे सुतल रहे।

होत भोरे हडकम्प मचि गइल। उमा के मेहरारू उमा के झकझोरि के जगवलस। उमा हडबडा के जगलन। - के जाने के बलिया के धठिया देले बा जी से जागी ना सिवान में ओकर लासि परल बिया। उमा कान में बाति पड़ते लुंगी के फेटा मारत गाँव के बहरी सिवान के तरफ भगलन। उमा के बाबुजी पहिलही ओइजा पहुच गइल रहलन। गाँव के लोग बलिया के अचम्भा से देखत रहे जेकर आज भरल-पुरल नीचाठ देहि लासि बनि परती परल आ जेठ बइसख के घाम लागि के चडचडाइल खेत में निफिकिर परल रहे। अबे का अबे काल्हे त दउर-दउर के टहल ओरीयावत रहे। अरे भाई काल्ह किरिन बुडला हम एहके नहात धोवत देखनी। राति के नव बजे त हमारा दोकान पर खइनी लेबे आइल रहे। एकरा का ! आ केकरा से दुसमनी रहल ह ! आदमी बलिया के छोह में आपन सम्बेदना राखत रहलन। उमा के बाबुजी चकुदार से बाति-चित करत रहलन उहो अचम्भिते रहलन। उमा भरि गाँव के बिना नाव लिहले गारी देबे लगलन – कवना के हमरा घर के सुख चएन ना देख पावल गइल ह बलिया हमारा घर के चरवाह ना बल्कि सावंग रहल ह। खैर जवन भि रहे बाकी बलिया अब एह दुनिया में ना रहे।

थाना से मंसी जी आ गइल रहलन साथ में दु गो सिपाही भि रहे। मंसी जी के आवते चकुदार लपकलन पिछे से बाबू साहेब भी। ममिला मर्डर के रहे बाकी केहू पर कवन सक सुबहा ना रहे। बलिया के केहू मुदई भि ना रहे जेकर नाव लिहल जाव बस अचरज रहे बलिया आखिर का ! कवन ! बेजाई क दिहलस कि ओकर इ हालत भइल। गाँव के लोग खदबदाइल रहे कि आगे का होत बा ? का बलिया के मउवत के रहस के कवनो गाँठ खुलत बा ! बाकी केहू कुछ जादा करे के झंझट ना समझल लासि के पंचनामा भइल आ एकरा बाद एकरा बलिया के निरजीव परल चकइठ देहि के एगो जुट के चट में बन्हाइल जेकरा के दु गो डोम जवन डेरा से बोला लिहल गइल रहलन सन। एगो बॉस में टांग के थाना पर लेके चल दिहलसन। अब थाना से लासि सायद पोस्टमार्टम खाती जाई भा कवनो बाति बिचार कके लासि लासि के मालिक बाबू साहेब के दे दिआई। हमनी के समाज में इ परम्परा ह रिवाज ह भा इंसान,जिव के भाव ह जब केहू मरेला त ओकरा मरला पर दु चार लोग आंसू बहावेलन। कवनो गाँव में एगो कुकूर भि मरेला त ओकरा बिछोह में ओह गाँव के अउरी कुकूर भोका फारि के रोवेलसन। बाकी बलिया खातिर रोवे वाला ओह समय केहू ना रहे ... बलिया के आपन एगो अलगे कहानी रहे। दरअसल हमनी के समाज में उहे ना होला जवन लउकेला।

आगे जारी रही ...

छंद विधा

दू गो छंद

मंगल पाण्डेय (घनाक्षरी)

बागी, बलिदानी, त्यागी रहलें भोजपुरिया,
क्रांति के बिगुल बजवलें मंगल पाँड़े।

चरबी वाला कारतूस मुहें नाहि छुवलें,
सेना में बगावत कईलें मंगल पाँड़े।

गरदन कटल बाकि मुड़ी नाहि झूकल,
माटी के करजा चुकवलें मंगल पाँड़े।

बैरकपुर के आग चारु ओरी फईलल,
सुतल देसवा जगवलें मंगल पाँड़े॥

नारी (सवैया)

देस स्वतंत्र भईल तबो अबहीं ल गुलाम सुँ जामत नारी,
हैरत के बलु बात हवे पर नारिहिं गर्भ उजारत नारी,
का हम बात करीं नर के जब नारि क खूब सतावत नारी,
सास जिठान कबो ननदी धर राछछि रूप हुँकारत नारी॥

गणेश जी 'बागी'

गणेश जी बागी भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य के उभरत साहित्यकार हई , साहित्यिक वेबसाइट ओपन बुक्स ऑनलाइन डॉट कॉम के संस्थापक आ पथ निर्माण विभाग बिहार सरकार में सहायक अभियंता के रूप में कार्यरत गणेश जी बागी पटना (बिहार) में निवास करेनी। इहा के पैतृक जिला बलिया ह। बागी जी छंद युक्त आ छंद मुक्त कविताई करेनी, इहाँ के लघुकथा बहुते पसन कईल जाला।

www.bhojpurisahityangan.com

गँजेड़ियन के दाशा

बात ओह समय के ह जब नौकरी नया नया लागल रहे। गाँव के समीप ही जिला के एगो महाविद्यालय में। शुरू में गाँव से ही आना जाना होत रहे। जब मन गाँव में ही लाग गईल त शहर में घर लेके रहे के विचार भी बिसर गईल। गाँव में रहे के माने इहे रहे कि खेती गृहस्ती बाग बगइचा में रूचि।

एहि बीच हम आपन दस कट्ठा के एगो प्लाट में आम के बिखाई लगा देहनी। दूरी 35'×30' फीट पर। प्लाट के चौकोर रहला के कारण दस गो पौधा ओह में बइठल। ऊ प्लाट चंवर के करीब रहे बाकिर तीन ओरि से ओह में बगइचा भी रहे। सहारा खातिर बांस के टेना पवधन के बगल में गाड़ के सुतरी/ पटुवा से पवधन के बान्ह देहल गईल ।खेती बगइचा में रूचि के कारण हाट बजार , सीवान आदि सड़क के राहे ना जा के चंवर के राहे ही गईल उचित समुझत रानि हाँ।

क्रोध से मन मिजाज खउले लागल। सोच लेहनी , जेहि दिने रंगे हाथ गँजेड़िया सब धरा जइहें ओहि दिने माटा के खोंता मूड़ी पर झार झार के पीटब।

एक दिन धेयान देला पर बुझाइल कि दू तीन गो पवधन के बन्धन गायब बा। दूसरी बेरा पवधन के सुतरी से बान्ह देहनी। दूसरे दिन फेरु दू तीन पवधन के गायब मिलल। फेर अगिला दिने भी इहे दाशा। हम बान्हत जाईं आ दोसरे बेरा केहू खोल लेव। मन चिंता में परल। सोचे लगनी , केहू जरताही से नइखे चाहत कि हमार गाछ तईयार होखो। अब गाछ ना लाग पायी। दिन रात अगोरल पार लागि ना। निराशा के भाव घेरे लागल।

फेर शंका के सूई दू तीन गो नया निकलल गाँव के गँजेड़ियन पर आ के टीक गईल। हो न हो ई ओकनिये के काम ह। ई छोकरा कुल्ही गाछी में लुका के गांजा पियत बाड़े सन। सूखल पतईयन के बिटोर के आग जरावत बाड़े सन आ ओह में बंधन वाला सुतरी के गुल सुनगावत बाड़े सन। गुल के चिलम पर धई के दम मारत बाड़े सन। मौका मिलते ही बगइचा में के सूखल पातर लकड़ी के तूर के बेंचतो बाड़े सन जेमे जे गांजा कीना सको।

एह लाइन पर जतने सोचीं ओतने ओकनी पर शंका पक्का होत जात रहे। जवानी के दिन रहे। क्रोध से मन मिजाज खउले लागल। सोच लेहनी , जेहि दिने रंगे हाथ गँजेड़िया सब धरा जइहें ओहि दिने माटा के खोंता मूड़ी पर झार झार के पीटब। एक साँझ बजार से लवटत घरी खेत बगइचा का ओरि रुख कई देहनी। ई का ? एगो रूखी बांस के टेना पर से उतर रहल बिया आ ओकरा मुहँ में पवधन के बन्हन वाला सुतरी/ पटुआ के गोला बा।

समुझते तनिको देर ना भईल कि रूखी बच्चा देबे खातिर मोलायम घोसला बनावे के जोगाड़ में लागल बिया। मन आनंद से भर गईल कि हमार मेहनत अब दू गो नान्ह जीव के बिछावन बने जा रहल बा। हृदया में करुणा के भाव भर गईल। ओह करुणा के एक छोर गँजेड़ियन के प्रति दया भाव में भी डूबल रहे।

पी राज सिंह

छपरा , बिहार के रहे वाला पी राज सिंह जी आर एस कालेज सिवान मे एसोसियेट प्रोफेसर बानी , नया तकनीकी से जुड़ल अपना मातृभाषा खाति हर तरह से लागल भीड़ल , अपना विशेष कैमरा से जवार के हर पहलू के कैद करत भोजपुरी भाषा के एगो साहित्यिक कलात्मक उंचाई दे रहल बानी। एह घरी इँहा के छपरा मे बानी।

दू ठो लघुकथा

बेमारी

एतना बड़का बनला के काऽ गरज रहल हऽ? ई नइखे बुझात कि अभीन तीन-तीन गो अउरी कुँआर बाड़ी सन। बड़कीए में मुड़ी के रोंआ नोचा जाई तऽ बाकी में का होई?' - सावित्री के माई अपना पति परमेश्वर बाबू से पूछत रहली।

बात ई भइल रहे कि परमेश्वर बाबू सावित्री के बिआह एगो बड़ घर में तय कऽ आइल रहले। परिवार बड़ा खानदानी आ आदरनीय बाऽ। लइका सुबोध, मरीन इंजीनियर बाड़े। अफरात पइसा कमाला। परमेश्वर बाबू के लागल कि हमार बेटी एह घर आ वर के साथे सुख से जिनगी बिताऽ ली। बेचारू अपना चदरा से बेसी पैर पसारत ई बिआह तय कऽ लिहले।
सुबोध के बाबुजी गिरीश बाबू पहिलहीं सोच लेहले रहलन कि एह बिआह में आपन सगरो सरधा पूरा कऽ लेब, से दबा के दहेज टाने के प्लानिंग रहे। परमेश्वर बाबू कवनो हाल में सुबोध के हाथ से ना निकले देबे के चाह में तैयारो हो गइले। तैयार भइल अलग रहे आ दहेज देबे के कुबत अलग। केहू तरे निमन -चिकन खाइल अलग बात बा, आ मोटरी गँठीआ से दबावल अलग बात। खैर, आज बारात आवे के रहे, टोला-मुहल्ला के पटी-पट्टीदार देखल लोग तऽ परमेश्वर बाबू के दुआर पर कवनो साने-गुमान ना। बाबुआन में बारात आवता आ ना एको खोंसी कटाइल ना पोखरा में जाल फेंकाइल। ईऽ देख के सबके कपार चकराए लागल।

परमेश्वर बाबू सगरो जतन कऽ लेहले रहलन बाकीर अधो दहेज के व्यवस्था ना भइल रहे। बेचारू के अब चिंता हो गइल रहे। चिंता से कपार एतना टनके कि मुड़ी पर पसेरीभर चमेली के तेल धराव आ छन्ने भर में बंजर खेत लेखाँ परती हो जाव। जब पट्टीदारी के लोग जुमल तब आपन दशा सुनवले। छन भर खातीर तऽ सबके साँप सूँघ लेहलस बाकीर बुढ़ऊ अंबरीश सिंह आपन चश्मा पोंछ के चिंता के भगवलन।

बारात दुआर पर जुमे से पहिले टोला के पुरुब प्राथमिक विद्यालय में टिकल। गिरीश बाबू पहिलहीं तैयारी में रहले कि जबले दहेज के पइसा ना मिली, तब ले द्वारपूजा ना होई। ऊ बेटहा के ताव में दस गो रिश्तेदारन के बीच में बइठ के मोंछ अँइठत रहले। सभे बरतिया ओहिजा नया-पुरान होत रहे तले दू जने कोल्ड-ड्रिंक के बोतल ले के जुमले। अभीन पहिलके बोतल खोलात रहे कि सावित्री के मामा हकासल-पिआसल हाँफत अइले। लगले चिल्लाए कि परमेश्वर बाबू के हार्ट अटैक हो गइल बा। पछाड़ खा के गिर गइलन हवें। हाथ-गोड़ पाला हो गइल बा। तनी एगो गाड़ी दे दीं कि अस्पताले ले जाइल जाव।

एतना सुनते सभे बरतिया बउआ गइल। सुबोध के बुझाइल कि सावित्री हाथ से गइली। गिरीश बाबू के लागल कि दहेजो गइल आ बारातो बैरन वापिस ले जाये के पड़ी। तबे सावित्री के फूफा हाँफत अइले कि गड़िया के का भइल?

गिरीश बाबू पूछलन, - 'ये महाराज, अब बारात के का होई?'

'का बताईं महाराज, ओने परमेश्वर बाबू के जीअन-मूअन लागल बा। पहिले ऊ देखल जावा' तनी रूक गइले, - 'चाहे अइसन होखे कि द्वारपूजा आ बिआह होत रहे, हम उनका के अस्पताले भेज देऽ तानी।'

ई बतीया गिरीश बाबू के जच गइल बाकीर दहेजवा के संकेत कइलन तऽ उनकरे आगा-पाछा वाला लोग लागल कहे कि ए हाल में रउरा दहेज के मुँह बवले बानी? महाराज, बिआह होखे दीं। ऊ ठीक हो जइहें तऽ दहेजवा देबे करीहें। बात एही पर तय हो गइल। एने लइका गाड़ी से उतर के द्वारपूजा खातीर बइठल आ ओने ओही गाड़ी से परमेश्वर बाबू के अस्पताले पहुँचावल गइल।

केशव मोहन पाण्डेय :

तमकुही रोड, सेवरही, कुशीनगर, उ. प्र. के रहे वाला केशव मोहन पाण्डेय, एम.ए.(हिंदी), बी. एड. बानी। अलग अलग मंच ला दर्जनो नाटक लिखले आ निर्देशित कइले बानी। अनेक समाचार-पत्र आ पत्र-पत्रिकन में अढ़ाई सौ से अधिका लेख, आधा दर्जन कहानी, आ अनेक कविता प्रकाशित। भोजपुरी कहानी संग्रह 'कठकरेज' प्रकाशित। आकाशवाणी गोरखपुर से कईगो कहानियन के प्रसारण, टेली फिल्म औलाद समेत भोजपुरी फिलिम 'कब आई डोलिया कहार' के लेखन-निर्देशनकइले बानी। केशव जी ए घरी दिल्ली में रहेनी।

ना जाने का होई? से एही डर-शंका में सभे एक मति हो के ओही लगले सगरो विधान पूरा करे पर राजी रहे। से ओही लगले गुरहथनी से ले के सेनुरदान आ कोहबर आदि सब हो गइल। ना केहू के अब खाये के सुधि रहे ना मान-अपमान के। मिनिट-मिनिट पर अस्पताल में फोन होखे कि परमेश्वर बाबू के का हाल बाऽ? खबर मिले कि डाक्टर बस दू घरी के खेल कहऽ ता। गिरीश बाबू दहेज के आस पोसते ओही रतीए में अपना पतोह सावित्री के विदाई करा के बारात ले के चल गइले।

बिहाने जब सुरूज के किरीन चटकार होखे लागल त परमेश्वर बाबू बिहसत अस्पताल से आवत लउकले। सभे चारू ओर से घेर लिहल। बुढ़ऊ अंबरीश बाबू मुस्की मारत पूछले, - अब का हाल बा? .... बेमारी दूर भइल?

अधर्मी

सहाबुद्दीन सिद्दिकी के दूनो लइकनिया आपन पढ़ाई खतम कS के शहर में नौकरी जोहे आ गइली सन। एक त लइकी के जात आ दोसरे नया शहर, ना रास्ता पता बा, ना रीता। ओहपर ई कि एने कुछ बरीश से एह शहर के दोसरे रूप दुनिया देखले बिआ, से सिद्दिकी साहेब निहोरा कS के किसोर मिसिर से कहले कि एकनी के अपना नजरी में राखेब। आपन बुझि के तनी रास्ता देखावत रहेब। देखेब कि चढ़ला उमिर में दोसरा डगर पर गोड़ ना जाव।

साँचो मिसिर जी तन, मन आ धन से आपन बुझे लगले। गाँव से अपनही साथे शहर ले अइले। मलिकाइन पहिले समझइबो कइली बाकीर ऊ एह परिवार के रीति-रंग के अलगे रूप जानत रहले। कहले कि ई लइकनिया सलाम के बदले प्रणाम करेली सों। बड़ के खातीर हर बात में एकनी के अदब झलकेला। जाए दS। बेसहारा के सहारा बनल ठीक ह। बसावल ठीक ह, उजाड़ल ना।

अपनहीं घरे राखे लगले। का करें? ना नोकरी रहे ना जोगाड़। कई दिन ले छुट्टी ले के ओकनी के एह ऑफिस से ओह आॅफिस इंटरव्यू दिवावें। किराया -भाड़ा अपनहीं लगावें। बेरोजगार लइकनीन के एको पइसा खरचा ना होखे, एह पर नजर रखले रहस। ओकनी के हर सुविधा आ व्यवस्था के जाने भर ध्यान राखें। एक्के थरिया में खाना होखे, एक्के गिलास में पानी पिअल जाव। कबो-कबो ओकनी के दोस्त-सँघतियो आवे सों, ओकनियो के साथे ऊहे भाव। बड़की के सँघतिया रहे मेराज। हर दू दिन पर जुम आवे। देखे में त लायक रहे, बाकीर विचार से चालाक लागे। खैर, दिसम्बर-जनवरी के शीत में अपना से अधिका ओकनी के खयाल राखल जाव। मोटका रजाई ओकनी के दिआ गइल। ओकनी के लगे हमेशा हिटर जरावे के व्यवस्था कइल गइल रहे। एक बेर किकुरत देखली त मिसिराइन आपन सबसे दुलरूआ शाल दे देहली। कहीं आवत-जात बेरा बेचारी ओकनी के पर्स में दू-चार सौ रूपयो ध देस।

खैर, प्रयास से परिणाम मिलल। दूनो के नोकरी लाग गइल। मेरजवा के साथे एकनीयो के विचार बनल आ ऊ तीनो जने दोसरा मुहल्ला में रहे लगले। धीरे-धीरे समय बदलल त सुभावो बदल गइल। मिसिर-मिसिराइन के चार महिना के तपस्या ऊ भुला गइली सों। बेचारू फोन करस त हाँ-हूँ क के काट दे सों। मिसिराइनो बड़ा ईयाद करें। बाते-बाते में आँख बरसे लागे। अपना मेहरारू के दसा देख के मिसिर जी मिले के विचार बनवले। कहले कि चल ना तनी देखल जाव कि लइकीया के तरे रह तारी सों। मिसिराइनो तैयार हो गइली।

ओने कमरा के दुआरी पर पहुँचल लोग त आवाज सुनाइल। मेराज पूछत रहलन, - मिसिर चाचा आवे वाला बाड़े का? तहनी के काहें ना कबो भेंट करे जालू स?

बड़की कहे लागल, - उनकर बतिए छोड़। उनका त ना अपना रीति के पता बा, ना नेम-धरम के। बाभन हो के हमनी के अपना घर में रखले। एही तरे केहू के आदर देबे लागे ले। छुआछूत के तनीको चिंता ना करे ले। एक्के थरीया में खिआवे ले, एक्के गिलास से पानी पिआवे ले।

छोटकी कहलस, - ओइसन अधर्मी से दूरे रहल ठीक बा। मिसिर जी के गोड़ काँपे लागल आ अँखिया भर गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

सोशल मीडिया प लोकविधा कह-मुकरी

कह-मुकरी लोक-काव्य के एगो विधा ह। एह विधा प अमीर खुसरो सबसे बेसी काम कईले बाड़े। भारतेंदु हरिश्चंद्र भी बहुते कह-मुकरियन के रचना कईले बाड़े। बाकिर भारतेंदु युग के बाद जब द्विवेदी युग आइल त आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के शास्त्रीयता की ओर पूर्ण झुकाव के चलते ओह बेरा के तकरीबन सब रचनाकार शास्त्रीय छंदन की ओर एकोन्मुख हो गईलें अऊर ई शास्त्रीय एकोन्मुखता अईसन बढ़ल कि खुसरो के बेटी अऊर भारतेंदु के प्रेमिका कहलाए वाली 'कह-मुकरी' जईसन रसपूर्ण अऊर मनोरंजक काव्य-विधा के रचनाकार कम होत गईलें। एकरा बाद क्रमशः छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद अऊर आज माने नया कविता के दौर आईल, पर एहमें से कौनो भी बेर के कौनो भी रचनाकार 'कह-मुकरी' की ओर कौनो ख़ास नज़र ना फेरलें। आज के बेरा में जब अतुकांत अऊर मुक्तछंद कविता अपने जवानी प बा, तब 'कह-मुकरी' विधा में रचना करे वाला कमे लऊकेला लोग।

आई एही क्रम में 'कह-मुकरी' के स्वरूप अऊर विधान पर भी आँख डालल जाव। 'कह-मुकरी' के मूल रूप ओकरी नामे में छिपल बा। 'कह-मुकरी' मने कह के मुकर गईल। ई दू सखियन के बीच के चुहल आ हंसी-मजाक से भरल बातचीत पर आधारित होला। एहमे चार चरण होलें। एह चार में से पहिला तीन चरण में एगो सखी दूसर सखी से अपना साजन के कुछ लच्छन बतावेले अऊर आखिरी चरण में दूसर सखी ओह लच्छन की आधार प पहिला सखी से उत्तर विषयक प्रश्न (ए सखि साजन ?) करेले। बाकिर एहिजा पहिला सखी लाज के मारे अपना बात से मुकर जाले अऊर साजन से अलग अऊर वर्णित लच्छनन से मिलत-जुलत कौनो अऊर उत्तर दे देले। उदाहरण की रूप में अमीर खुसरो के एगो 'कह-मुकरी' के देखल जाव-

> वो आवै तो शादी होय
> उस बिन दूजा अऊर न कोय
> मीठे लागें वा के बोल
> ऐ सखि साजन?
>
> ना सखि ढोल।

खुसरो के एह मुकरी में साफ़ लऊकता कि पहिला तीन चरण में एगो सखी कुछ लच्छन कहले बिया, जवन कि ओकरी साजन से सम्बंधित बुझा ताड़ सन, बाकिर आखिरी पंक्ति में जब दूसर सखी प्रश्न पूछ तिया त पहिला सखी अपना बात से मुकर के साजन के छोड़ 'ढोल' उत्तर दे दे तिया। साफ़ बा कि एहिजा छेकापह्नुति अलंकार बा, जवन प्रस्तुत के ना मान अप्रस्तुत के मान लेला।

'कह-मुकरी' के मूल रूप ओकरी नामे में छिपल बा। 'कह-मुकरी' मने कह के मुकर गईल। ई दू सखियन के बीच के चुहल आ हंसी-मजाक से भरल बातचीत पर आधारित होला।

एही क्रम में अब जे बात 'कह-मुकरी 'के मात्रिक-विन्यास के कईल जाव त खुसरो संभवतः एकरा खातिर कवनो निश्चित मात्रा-क्रम के निर्धारण नाही कईलें रहलें। काहें कि उनका मुकरियन में अलग-अलग तरह के मात्रा क्रम लाऊकेला। अब चूँकि, खुसरो भी काफी हद ले कबीरे की तरे चलत-फिरत कविता रच डालें, तब संभव बा कि ऊ आपन कह-मुकरियन के भी रचना अईसही कईले होखस अऊर एह चलते उनकर मुकरियन में मात्रिक असंतुलन रह गईल होखो। हालाँकि,

पीयूष द्विवेदी भारतीय

देवरिया युपी के रहे वाला पीयुष द्विवेदी भारतीय जी, स्वतंत्र लेखन के क्षेत्र मे बानी , कई गो अखबार पत्र पत्रिका मे ईंहा के लेख छप चुकल बा। भोजपुरी मे ईंहा के लगातार लिख रहल बानी। एह समय ईंहा के नोयडा मे बानी।

भारतेंदु हरिश्चंद्र के मुकरियन में मात्रिक संतुलन लऊकेला अऊर मोटा-मोटी ओहीके आधार प 'कह-मुकरी 'के विषय में मात्रा-क्रम निश्चित कईल गईल बा । भारतेंदु के मुकरियन प गौर कईल जाव त ओहमे भी चार चरण ही बाड़ सन अऊर प्रत्येक चरण में 15-15 चाहें 16-16 मात्रा के क्रम बा । आज एही मात्रा-क्रम के आधार मान के 'कह-मुकरी' रचना हो रहल बिया।

फेसबुक पर 'कह-मुकरी' नाम के एगो समूह बा । एहमे 500 से अधिक सदस्य बाड़ें जेमे से लगभग 25-30 सक्रियता से कहमुकरी विधा में रचना क रहल बाड़ें । तमाम छोट-बड़ रचनाकार न सिर्फ समूह से जुड़ल बाड़े, बल्कि नया मुकरी भी रचल जा रहल बाड़ी सन अऊर लोग मन से एह के पढ़ियो रहल बा । धिरही-धीरे आजु 'कह-मुकरी' सोशल मीडिया के एगो छोटे जगहि में सही, रचनाकार लोगन के अपनी और खींचे लागल बिया । एतने ना ! एहमे कुछ रोचक अऊर नया परिवर्तन भी ले आईल गईल बाड़ सन । विशेष रूप से 'कह-मुकरी' के कथ्य के सखि-साजन के घेरा से बहरा ले आईल गईल बा अऊर राजनीति, विज्ञान आदि आधुनिक आ समकालीन विषयन तक एकर फईलाव करके कोशिश भईल बा । एह बात के भी ध्यान रखल गईल बा कि कहमुकरी के मूल स्वरूप बनल रहे अऊर ओकरी छंद से अधिक छेड़छाड़ न होखे ।

एह सब बदलावन के खातिर बहुते चरचा के साथ आगे बढल गईल बा । संवाद अऊर परिसंवाद के बाद 'कह-मुकरी' के दूगो धारा बनावेके रास्ता निकालल गईल, जेसे 'कह-मुकरी के मूल स्वरूप भी ना बिगड़े अऊर ओहमे नयापन के समावेश भी होखे । पहिला धारा के 'कह-मुकरी' अऊर दूसरा धारा के "नव कह-मुकरी" नाम दिहल गईल बा । नव 'कह-मुकरी' चरणों अऊर मात्राओं के लिहाज से हुबहू मूल 'कह-मुकरी' जईसन ही बा, अंतर बा त बस कथ्य के । "नव कह-मुकरी" के कथ्य, 'कह-मुकरी' की तरे ही सखि-साजन जईसन कवनों भी दायरा में नईखे बंधल । राजनीति, सिनेमा, खेल, समाज आदि कवनो भी क्षेत्र से सम्बंधित विषय पर "नव कह-मुकरी" रचल जा सकेला, बल्कि रचल जाता । बाकिर अपने कथ्य के ई सब अलगपन के बावजूद भी 'नव कह-मुकरी', मूल 'कह-मुकरी' के ही एगो हिस्सा बिया, एहके कह-मुकरी से अलग नाहीं समझल जाव ।

मिड डे मील त्रासदी देने एक नजर

हम जब जब गाँव आइले त कुछ चीज देख के मन गदगद हो जाला, लईकिन के रोड प साइकिल चलावत देखिना त लागेला कि बहूत हद तक ससक्त भईली सन पहिले के अपेक्षाकृत, रोड प बाइक चलावत रोड के बेहतर स्थिति एगो अच्छा विकास वाला अनुभूति देला, गाँव में गर्मी में भी बिजली के अच्छा प्रबंधन खुश करे में पीछे ना रहे लेकिन जब नजर शिक्षा व्यवस्था प जाला तब ढेर प्रश्न मन में उमड़ आवेला। अइसन बात बिल्कुल नईखे कि खाली बिहार में ही अइसन चुनौती बा बल्कि पूरा मुल्क में बा, कही ज्यादा बा कही कम बा लेकिन हर जगह लगभग कॉमन समस्या बा। ढेर प्रश्न इंफ्रास्ट्रक्चर, पढाई के गुणवता, विद्यार्थी के स्कूल के प्रति निष्ठां अउरी विश्वास, सरकारी नीतियाँ जईसे सर्व शिक्षा अभियान, मिड डे मील, आंगनवाडी इत्यादी, विद्यार्थी के पढला के बाद ओकर आत्मविश्वास, विद्यार्थी के स्वस्थ्य स्तर अउरी अह सब चीज में लूप होल से सम्बंधित प्रश्न उफान मारेला। एह सभ में एगो स्कीम (मिड डे मील) जवन भारत सरकार द्वारा लागु कईल गइल रहे ताकी विद्याथी के स्वस्थ के बेहतर बनावल जा सके, एही प विस्तार से नजर गडावे के कोशिश कईल जाई।

सबसे पहिले इ जाने के कोशिश कईल जाव कि मिड डे मील ह का ? इ काहे खातिर बनल ? स्कूली छात्र के अधिकार क्षेत्र में कतना हिस्सा बा ? ग्राउंड लेवल प का का मिल पावता ? कहाँ कहाँ लूप होल बा ? अउरी ओकर सुझाव का हो सकेला ? ओकर फंडिंग प्रक्रिया का बा ? राजनितिक प्रभाव कतना हावी रहेला ? मिड डे मील मूल रूप से भारत सरकार द्वारा डिजाईन कईल स्कीम ह जवन मुफ्त में स्कूली विद्यार्थी मध्यान भोजन के व्यवस्था करेला ताकी न्यूट्रिशनल स्टेटस के एगो बेहतर स्थिति तक पहुचावल जाव। सबसे पहिले खाली सरकारी प्राथमिक क्लासेज (कक्षा 1-5) खातिर रहे राष्ट्रीय स्तर प लेकिन बाद में अप्पर प्राइमरी (कक्षा 6-8) खातिर लागू कईल

गौरव सिंह

रोहतास, बिहार के रहे वाला गौरव जी इंजीन्यरिंग के छात्र हईं। भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। ए घरी गौरव जी VIT यूनिवर्सिटी वेल्लूर , तमिलनाडू से पढ़ाई कर रहल बानी।

गईल रहे। एगो अउरी खास बात इ बा कि इ स्कीम सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत बाकी के शैक्षणिक केंद्र जईसे मदरसा अउरी मकतब प भी सक्रीय रूप से लागू बा।

अब थोडा एकर ऐतिहासिक पक्ष ओरे झाके के कोशिश करब। एह प्रोग्राम के जड़ मूल रूप से आजादी के पहिले से ही जुडल बाटे जवन 1925 में मद्रास कारपोरेशन में अंग्रेज प्रशासन द्वारा जोडल गईल रहे। बस अंतर इ रहे कि नाम अलग रहे अउरी कुछ मैकेनिज्म अलग रहे लेकिन सिधांत एक ही रहे, ओकरा बाद 1930 में केंद्र शासित प्रदेश पोंडिचेरी में फ्रेंच प्रशासन द्वारा लागू कईल गईल रहे। आजादी के बाद सबसे पहिले साठ के दशक में, कामराज के नेतृत्व के दौरान, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के रूप में, चेन्नई फिर बाकी के जिला के प्राथमिक विद्यालायन में लांच कईल गईल रहे। फिर गुजरात दूसरा राज्य बनल जवन इम्प्लेमेंट कईलस 1984 के आस पास लेकिन बाद में कुछ कारन से आगे प्रोसीड ना कर पवलस। फिर धीरे धीरे सभ राज्यन में लागू भईल जवना में कुछ जईसे आंध्र अउरी राजस्थान त पूरा के पूरा विदेशी फंड के बूते ही लागू कर दिहलस। 1997-1998 के आस पास राष्ट्रिय स्तर प पर लागू कईल गईल, ओह समय लगभग ढाई हज़ार ब्लाक में इम्प्लेमेंट कईल गईल।

मिड डे मील के अंतर्गत शुरुआती दौर में इ टारगेट लेके चलल गईल कि हर एक छात्र के, जवन एक से पांच क्लास के अंतर्गत आवत होइ ओकरा के पकावल भोजन, 300 कैलोरी अउरी 12 ग्राम प्रोटीन के साथे मिले के चाही कम से कम 200 दिन तक। बाद में, 2007 में पांचवा क्लास से आठवां क्लास यानी अप्पर प्राइमरी क्लास खातिर भी लागु भईल, ओही घरी एकर नाव नेशनल प्रोग्राम फॉर न्यूट्रिशनल सपोर्ट से मिड डे मील भईल। ओकरा पहिले सुखा राशन मिलत रहे 3 किलो चावल चाहे गेहूं, लेकिन ओकर कवनो खास फायदा ना मिलल। लईका बेच देत रह सन मिलल आनाज। जबकी छव क्लास से आठ क्लास के विद्यार्थी खातिर पकावल भोजन 700 कैलोरी अउरी 20 ग्राम प्रोटीन के साथे देवे के लक्ष्य रखल गईल बा। जहाँ तक फण्ड के सवाल बा, जवना में FCI (Food Corporation of India) के सहायता से 100% केंद्र के तरफ आनाज आवेला ओमे राज्य के योगदान ना होला। जबकी दूसरा दने लेबर, ट्रांसपोर्ट, किचन शेड, कुकिंग खर्च इ सब में राज्य सरकार अउरी केंद्र सरकार संयुक्त रूप से काम करे ला लोग जवना में 75% खर्च केंद्र सरकार वहन करेले अउरी 25% राज्य सरकार।

ऊपर लिखल पैरा में एगो स्केच खीच देनी कि कवन चीज का ह, कईसे होला जवना से आगे बात समझे में आसानी होखी। अब बात कईल जाई लूप होल के जवना चलते बहूत हद तक सफल नईखे हो पावत। इ मोटा मोटी खाली लेक्चर क्लास के रूप में उपलब्धि लेखा लागेला लेकिन ग्राउंड लेवल प आज भी एकर वास्तविकता कुछ अउरी बाटे। बहूत सारी चुनौती से आजो जूझ रहल बा स्कीम, चाहे बात भरपूर मात्रा भोजन ना मिले के बात होखे, चाहे भोजन के गुणवता में कमी के होखे, चाहे कुकिंग प्रक्रिया अउरी रख रखाव प्रबंधन के कमी के होखे, बर्तन से साफ़ सफाई के होखे, किचन के समस्या होखो, प्रतिदिन भोजन ना मिले के शिकायत होखे इत्यादी। एह सब समस्या के अगर मूल्यांकन कईल जाव, ओकर कारन ढूंढे के कोशिश कईल जाव, तब ढेर बात सामने निकल के आई, राजनितिक हस्तक्षेप अउरी मिलीजुली गोलमाल के कहानी लउकी। एक-एक करके कुछ मुख्य बात प ध्यान देवल जाई। जब भी कवनो घटना घटेला तब राज्य सरकार हमेशा जिम्मेदारी लेवे से कतरात नजर आवेले। कबो कबो हमरा लागेला कि राज्य सरकार जानबूझ के अझुराइले राखल चाहेले राजनितिक द्वेष के चलते काहे कि मूलतः इ केंद्र सरकार के प्रोग्राम हवे, ठीक ओकरे लेखा जईसे कई साल से नदी के लेके विवाद केंद्र अउरी राज्य सरकार में चलत आवता।

सबसे पाहिला बात, राज्य सरकार अक्सर कहत नजर आवेला कि भोजन के गुणवता एह से ठीक नइखे काहे कि FCI के तरफ से पूरी तरह से मुफ्त आवे वाला आनाज बहूत ख़राब ग्रेड के आवेला। जबकी इ खाली बहाना हवे काहे कि पहिला बात FCI में सारा आनाज बिना चेक कईले ना जाला, दूसरा बात मान भी लेनी कि सीलन अउरी कुछ कारन से कवनो ख़राब प्रभाव पडल, जवना चलते आनाज प्रभावित हो गईल होखे, स्कीम में एह बात के स्पष्ट कईल बा कि राज्य सरकार आनाज रिसीव करे से मना भी कर सकेला अउरी बढ़िया आनाज के मांग कर सकेला। कमी केकर भईल रिसीव करे वाला राज्य सरकार के एजेंट के नु कि केंद्र सरकार के ? दूसरा एगो भ्रम होला कि इ कुल खाली गरीब लईकन खातिर होता जवना के ढेर लोग उपकार के रूप देखेला बल्की इ उपकार ना ओह सभ लईकन के हक बा संविधान के फंडामेंटल राईट (आर्टिकल 39A अउरी 47) में एह बात के स्पष्टीकरण भी कईल गईल बा। हम बिना रिसर्च आ प्रूफ के कवनो बात ना लिखिला काहे कि जवाबदेही

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर हमेशा तईयार राहिला लेकिन ओही में एगो अइसन बात मुहे मुह सुनले बानी जवना के प्रूफ ना दे सकिला उ इ कि कव बे अईसन भी भईल बा कि FCI के आवल आनाज बेच के थर्ड क्वालिटी के आनाज खरीद के केंद्र सरकार के बदनाम करेला, जवना में बरियार बचत होला दलाल लोग के।

चली अब मान लेवल जाव कि आनाज भी आ गईल बढ़िया तब राज्य सरकार ओकर कुकिंग प्रक्रिया कईसे करेला ? सामान्यतः इ पावल गईल बा कि ज्यादातर केस में राशन या त रिश्तेदार के दुकान से आवेला जवना में गोलमाल या त तौल में होत रहेला या फिर ओकर प्राइस में। या फिर कमीशन लेके ठिका दे दिआला दोकान के। एह स्कीम के उद्येश इहो रहल रहे कि छात्र उपस्थिति भी बढ़ी अउरी बढ़ल भी बा लेकिन ओतना ना जतना कागज प बा, काहे कि लईका कतनो आवस उपस्थिति लगभग 90% देखावेला ताकी ओह सभ के पईसा मिल जाव। सरकारी डाटा के मुताबिक प्राइमरी लेवल प प्रतिदिन प्रत्येक छात्र के कुकिंग कास्ट 3.59 रुपया अउरी अप्पर प्राइमरी लेवल प प्रतिदिन प्रत्येक छात्र के कुकिंग कास्ट 5.38 रुपया बाटे। चुकी फण्ड एल्लोकेट भी उपस्थिति के आधार पर ही होला। मिड डे मील प खाली कुकिंग खर्च 2007-08 अउरी 2013 -14 में दुगना के लगभग अंतर बा लेकिन सुधार में कवनो विशेष अंतर ना देखे मिलल। एगो अउरी डाटा रखी पूरा स्कीम के लेके 11वीं पंचवर्षीय योजना अउरी 12वीं पंचवर्षीय योजना में लगभग 134% के इजाफा भईल बा।

मिड डे मील के अंतर्गत शुरुआती दौर में इ टारगेट लेके चलल गईल कि हर एक छात्र के, जवन एक से पांच क्लास के अंतर्गत आवत होइ ओकरा के पकावल भोजन, 300 कैलोरी अउरी 12 ग्राम प्रोटीन के साथे मिले के चाही कम से कम 200 दिन तक।

अगर प्रभाव के बारे में बात कईल जाव त एकर दुनो पहलू बाटे सकारात्मक अउरी नकारात्मक। एकरा ने दू मत नइखे कि लईकन के आकर्षित त निश्चित रूप में कईले बा लेकिन ओतना ना जेतना कागज पर बा। मूल रूप से ओह वर्ग के जवन निचला तबका से सम्बंधित होखे अउरी लड़की, दलित, आदिवासी पर असर लउकल बा। कुछ हद तक लईकन के स्कूली नियमितता, पोषण, सामाजिक विकास भईल बा। लेकिन जातिगत भेदभाव के मामला भी सामने आईल बा खाना सर्व करत समय। कई राज्य में जहरीला खाना होखे से मौत भी भईल बा छात्र के, इ बात कोई से नइखे छुपल। टाइम्स ऑफ़ इंडिया के एगो खबर के मुताबिक attendence में गोलमाल अउरी आनाज चोरी प्रक्रिया स्कूली शिक्षक भी जिम्मेवार बाड़े। सरकार द्वारा तय कईल आनाज स्कूल तक नइखे पहुच पावत जवना चलते भरपूर खाना लईकन के नइखे मिल पावत। आहार असंतुलित रह जाता गोलमाल के खेल में एकर निगरानी ढंग से नईखे हो पावत। शिक्षा व्यवस्था भी डिस्टर्ब रहता एह सभ गोलमाल से।

अब बात आवेला कि के एकर जिम्मेवारी ली, हमरा समझ से एकरा खातिर हमरा लगे दू रूप में हल बा, पहिला हल बा केन्द्रित रूप में खाली सुधार कईल चाहत बानी तब, जिम्मेवारी अउरी पूरा देखभाल खातिर एगो स्वतंत्र बॉडी होखे के चाही काहे कि प्रिंसिपल का का के जिम्मेवारी ली जनगणना ओकरे जिम्मे बा, वोटरलिस्ट ओकरे जिम्मे बा, पोलियो ओकरे नेतृत्व में होला, फिरू मिड डे मील तब उ पढाई प ध्यान कब दी। माने इ कि खाए पिए के चक्कर में मूल सिधांत से दूर हो जाई सरकारी स्कूल, पढाई चौपट हो जाई तब मिड डे मील के भी कवनो मतलब ना होई। जवन सिस्टम बा ओकरे में सुधार करके स्टैंडिंग कमिटी के बढ़िया गठन होखे जवन निरतर निगरानी बढ़िया से रखत रहो, ओकर गुणवता अउरी स्वाद के बढ़िया से जांच करत रहो। हरेक दिन भोजन के सैंपल पास में स्थित PHC(प्राइमरी हेल्थ सेंटर) में चेक खातिर भेजे के अनिवार्यता कर देवे के चाही। कुकिंग में ज्यादा से ज्यादा महिला के इन्वोल्व कईल एगो अच्छा कदम जवना में साफ़ सफाई वाला समस्या से निजात मिल सकेला।

दूसरा हल इ लउकेला बाहर से बने बनावल खाना पैक्ड लंच PPP(Public-Private Partnership) के सहायता से लावल जा सकेला। पहिला फायदा इ होई कि पढाई के माहौल बरक़रार रही अउरी मिड डे मील के सिधांत भी पूरा हो जाई। अक्सर जमीनी स्तर प होला का कि आस पास खाना बने से पढाई के मोमेंटा ख़राब हो जाला, लईकन के उद्देश्य खाली खाए मात्र रह जाला। दूसरा फायदा इ होई जिम्मेवारी केन्द्रित रही, ना त अक्सर देखल गईल बा कि कवनो घटना घटेला तब सभे एक दूसरा प ब्लेम गेम खेले लागेला। तीसरा फायदा इ होई कि अगर अच्छा गुणवता नइखे मिलत तब रुआ दोसर कैटर रख सकिला पुरनका के हटाके, लईकन के फीडबैक के आधार प। एगो अउरी महत्वपूर्ण बात कि कैटर के चुनाव पास के शहर में स्थित सारा कैटरस में से एगो कैटर के ऑक्शन के आधार पर होखो ताकी

www.bhojpurisahityangan.com

सरकारी खर्च न्यूनतम लागो। ओकर खाना के गुणवता अउरी स्वाद दुनु बढ़िया होई काहे कि जिम्मेदारी केन्द्रित बा अउरी ब्लेम गेम के सम्भावना कम बा। बहूत सारा लूप होल बंद हो जाई एह हल से अगर एकरा के संज्ञान में लेवल जाई तब।

अंत में निष्कर्ष के रूप में इहे कहल चाहब कि जवन सिस्टम बा ओकर मैकेनिज्म इम्प्रोव कईल बहूत जरूरी बा। अगर मोनिटरिंग समिति देखल जाव त बहूत हडाह बा, बस सक्रीय नइखे बढ़िया से, जवना चलते तमाम तरह के समस्या लउकता। नेशनल, स्टेट, डिस्ट्रिक्ट, मुनिसिपल, ब्लाक, गाँव, स्कूल हर लेवल के इन्वोल्वेमेंट बा। समय सीमा भी तय बा कि केकरा साल में कव बे जांच करेके बा। इहाँ तक की पंचायत लेवल, टीचर, अउरी अभिभावक तक बाड़े समिति में फिर भी अइसन हाल ? के जिम्मेवार बा ? ग्रामीण स्तर प अवेयर कईल भी जरूरी बा ताकी अभिभावक के नियमतः जुडाव रहो समिति से ताकी बेहतर विकास के ओर झाक सके देश। लॉ के अन्दर लॉ बनईला से समस्या के समाधान ना निकलेला बल्कि जवन बनल बा ओकरे के बेहतर तरीका से इम्प्लेमेंट करके सफल बनावल जा सकेला।

छनुकी

अरविन्द कुमार पाठक

निन्दा

निन्दा रसवा से

भईल ना ऊब

खोदत रह

जगलवा के दूब।

***

दुरगुन

हमनी हमेसे

देखनी पराई के

अन्दरा ना तकनी

अपना के झाक के।

***

रोवे

रोवे

अवरू रोवे में

भेद ह

सरथक ह

रोवलका उनका खातिर

बेअरथ के रोवलका

अपना के खातिर

***

नेकी

दाता की नेकी

हरदम

रहेला

सुखाय ना समुन्दर

दुआ की गंगीया

बहे कलन्तर।

***

पियार

माई बाबू आ गुरू

जीनगी के अधार

सरग जमीनिया अगईल

मिलल तिनहुं के पियार।

***

समीक्षा - देवेन्द्र नाथ तिवारी

तहरे नाम: संगीत आ साहित्य के संगम

मन-मिजाज आ मष्तिष्क के तार जब संवेदना से जुड़ जाला तब आत्म-अनुभुति के भाव के अभिव्यक्त करे खाति मचले लागेला, हिलोरे लागेला। एही भाव के शब्द का साँचा में ढाल के साहित्य सृजन होखेला। ई सृजना भाव-विषय बिंदु के अनुकूल आ छंद-विधान से निरूपित होखेला। जहाँ काव्य के मूल तत्व यथा- रस, लय, गति, भाव, छंद, बिंब, प्रतिक, अंलकार आदि आकार ग्रहण करेला।

हम साहित्य मर्मज्ञ ना हईं बाकि एगो सजग पाठक के तौर पऽ हमरा इहे लागेला कि साहित्य के धरातल पऽ बहर काफिया के माध्यम से भाव के मर्म के बतावे के कलाकारी के नाम ग़ज़ल हऽ। ग़ज़ल के समझे खाति रचनाकार के मनोभाव से तालमेल बइठावे के होई आ ई तालमेल जेतने सहज होई ओतने ऊ रचनाकार आपन मनोभाव के अभिव्यक्त करे में सफल होई। सहज, सरल आ मौलिक सृजन के एह साहित्यिक पैमाना पऽ सुभद्रा वीरेंद्र के 'तहरे नाम' खरा उतर रहल बा।

हमरे पढ़ले-लिखले कुछ अउरी बात बा।
तहरे प्रीत क पाति पढ़ल अउरी बात बा।।

सुभद्रा वीरेंद्र जी के लगे भोजपुरी-हिंदी गीत लेखन के करीब दू दशक के अनुभव बा आ साथे-साथ ऊ संगीत के एगो साधक भी बाड़ी। संगीत आ साहित्य के एह साधना के मिलल जुलल स्वर एह ग़ज़लिका संग्रह में मुखरित हो रहल बा। गीत के लय आ ग़ज़ल के बहर काफिया के साथे तालमेल से ग़ज़लिका के निर्माण होखेला। अइसन सृजन कवियत्री के नवहा सोच आ प्रयोगधर्मिता के गवाही दे रहल बा-

बनि के हरसिंगार हम रात भर झरी।
खुशबू के तहरे तन-मन नेह से भरी।।

एक ओर जहाँ एह संग्रह में नेह से भिंजल ग़ज़ल बा जवन रूमानियत के अहसास दिलावत बा ऊहें दोसरे ओर समकालीन सामाजिक नैतिक संदर्भन के समेटत कई रचना

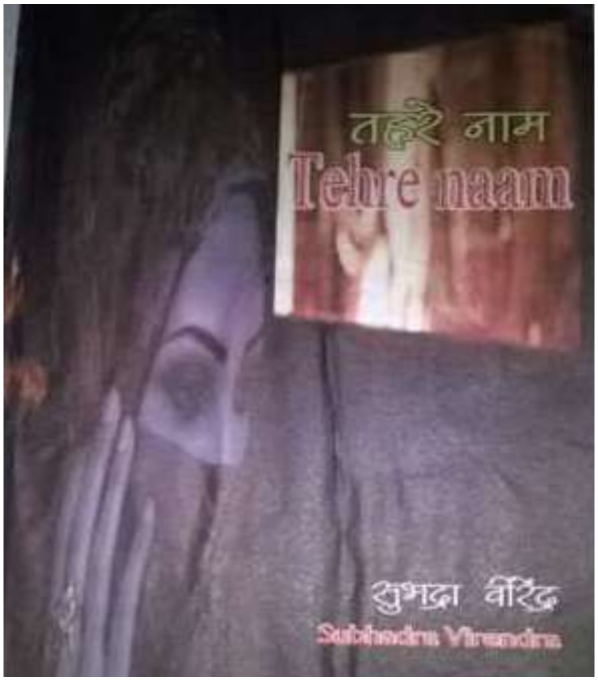

पुस्तक: तहरे नाम (ग़ज़लिका संग्रह)
लेखक- सुभद्रा वीरेंद्र
किंजल्क प्रकाशन,
आशियाना नगर पटना- 25
प्रथम संस्करण: अक्टूबर, 2008
मूल्य: ₹150/
कुल पृष्ठ संख्या: 104

भी शामिल बिया जवन वर्तमान युग के विद्रुपता प गंभीर चोट मारे में सक्षम बिया-

मनसा जे रहे हमरे हम उड़ी अकास
कइसे डैना बन्हाइल, बन्हाइल कहाँ ?

मंदिर-मस्जिद से मिली कबो चैन नाहीं
सद्भाव क मूरत बनावे क अब जरूरत बा।

एगो और शेर देखीं-

कहीं धूप तलफत बा कहीं अब छाँव कलपत बा,
बिना असमान के सूरूज जे अब ढँकि रहल बाटे।

कवयित्री के मन में प्रीत के जवन भाव भरल बा ओकर अभिव्यक्ति के हई दूनो शेर बखूबी ब्याँ करत बा-

www.bhojpurisahityangan.com

गीत मीत के हम, जे सुनावत रही,
अँगुरी धरि के राह, बनावत रहीं।

हम प्रीत के रीत निभावत रहब,
एक जनम ले ना सौ जनम तक ले।

प्रेम सहज हऽ, उन्मुक्त हऽ, नेह के जवन सुगंध बा ओह से कवयित्री के परिचय कवने तरे होत बा हई शेर खुद बतावत बा -

हमरे नस-नस में बसि गइल बंसरी,
राग बनि ओह में हम ढरकि जाई।

प्रस्तुत संग्रह के भाषा सहज होखला के बादो लाक्षणिकता से भरल बिया। दोसर शब्दन में कहल जाए तऽ एह संग्रह के भाषा में लय बा जवन चित्रात्मकता आ ध्वन्यात्मकता से भरल-पूरल बा।

चुप हो गइल बा दिन जे हमरे निहोरा पर,
अब रात से बा डर ना कहीं चाँदनी उगे।

एह गजलन से होके गुजरे में पढ़े के ख्याल कमजोर पड़ जात बा आ सूने के भाव बीस होखे लागत बा- पढ़ते मन-मिजाज गुनगुनाये पऽ मजबूर होखे लागत बा। कवियत्री के शब्दकारी के असर बतावे खाति काफी बा बतौर बानगी एगो शेर देखीं-

हम त दियना जरवनी अँचरा के ओट,
जाने कइसे सगरो अँजोर हो गइल।

भोजपुरी जइसन मीठ भाषा के चासनी में पाक के 'तहरे नाम' समर्पण, सौंदर्य, प्रेम बोध के साहित्यित मिसाल भी बा। हई दू गो शेर एह भाव के गवाही खुद दे रहल बा-

अँखियन में जबसे बसावल केहू
ई दुनियाँ में जइसे कदर मिली गइल।

जेके देखे बदे सपना देखीं
भइल अइसन कि उनसे नजर मिली गइल।

सरल-सहज ठेंठ भाषा, शास्त्रीय शैली में प्रस्तुति भाव से भरल एह संग्रह के खास बनावत बा। साँच पूछीं तऽ भाव, शिल्प, कथ्य के अनूठापन के चलते इ ग़ज़लिका संग्रह पठनीय आ संग्रहनीय बन गइल बिया।

www.bhojpurisahityangan.com

समीक्षा - सौरभ पाण्डेय

ग़ज़ल संग्रह – तस्वीर जिन्दगी के : समीक्षा

तस्वीर जिन्दगी के' के दोसर संस्करण के प्रति हाँथ में बा। एक बात एह माने में संतोषजनक बा, जे मनोज भावुक के ग़ज़लन के बिम्ब, भासा जहवाँ नवहा भोजपुरिहा के रंग-ढंग आ सोच के जमीन पर बात उठावत लउकत बीया, उहवें, शिल्प के अस्तर पर ग़ज़ल के व्याकरण (अरुज़) के मनोज भावुक कवनो मतिसुन्न लेखा नकल नइखीं करत लउकत, जइसन अकसरहाँ ग़ज़ल सीखे आ कहे के फेरा में ग़ज़लकार लोग उर्दू लिपि के वर्णमाला सङे आपन सिर फोरत-धूनत लउकेला। मनोज भावुक के लगे वर्णमाला आ शब्दन के हिज्जे खातिर 'भोजपुरी में मान्य देवनागरी लिपि के वर्णमाला' आ 'भोजपुरी उच्चारण' आ बेवहार में आइल जमीनी मानक सोझा बा। ई जरूर बड़ुए जे ग़ज़ल के पंक्तियन (मिसरा) में 'भी', 'ही', 'जो', 'कभी', 'तभी' आदि जइसन अव्यय शब्दन के प्रयोग भोजपुरी भासा में काँच लागेला। जाने कइसे, जाने काहें, बाकिर, अइसने बोले आ लीखे के चलन आजकाल जबरदस्त ढंग से चलल निकलल बा। खैर, एह विन्दु पर अबहीं चर्चा ना होखी। चूँकि, मनोज भावुक के ग़ज़ल में अइसन अव्ययन के प्रयोग भइल बा, एह से एहू विन्दु पर इशारा कइल जा रहल बा।

आमजन के अनुभव के प्रस्तुत करे आ यथार्थ-चित्रण प्रस्तुत करे खातिर काव्य-जगत के एगो नया विधा त मीलि गइल, बाकिर, आगे चल के आम-अमदी के आवाज़ के नाँव प, यथार्थ-चित्रण के नाँव प भा कुबेवस्था का विरोध के नाँव पर खलसा असाहित्यिक शब्द से बोझल 'बाँझ' चीख-पुकारे भर ले ना सोझ-सोझ गारा-गारी चले लागल बा। ई एगो नवहा तकनीक लेखा ग़ज़ल के बेवहार में रचे-बसे लागल बाटे। तवना प ग़ज़ल के व्याकरण से अनजान तथाकथित ग़ज़लकारन से ग़ज़ल विधा के आत्मा कराह रहल बीया। ग़ज़ल के व्याकरण के ना मनला के बादहूँ ग़ज़ल के नाँव प भाव झोंकत प्रस्तुतियन पर ग़ज़लकार आसिफ़ रोहतासवी के उद्धृत कइल बेजाईं ना होखी -- *रचनाकार ग़ज़ल के नाँव प खलसा तुकबन्दी करत आत्ममुग्ध बाड़न. बहर और शास्त्रीयता से कोसों दूर 'ग़ज़लनुमा' उनकर रचना, दरअसल, ग़ज़ले होइबे ना करेले।*

एह संदर्भ में ग़ज़ल का हऽ ईहो तनिका बूझि लीहीं जा। का जवन कलेवर ग़ज़ल आजकाल अपना ले ले बीया ऊ ग़ज़ल के

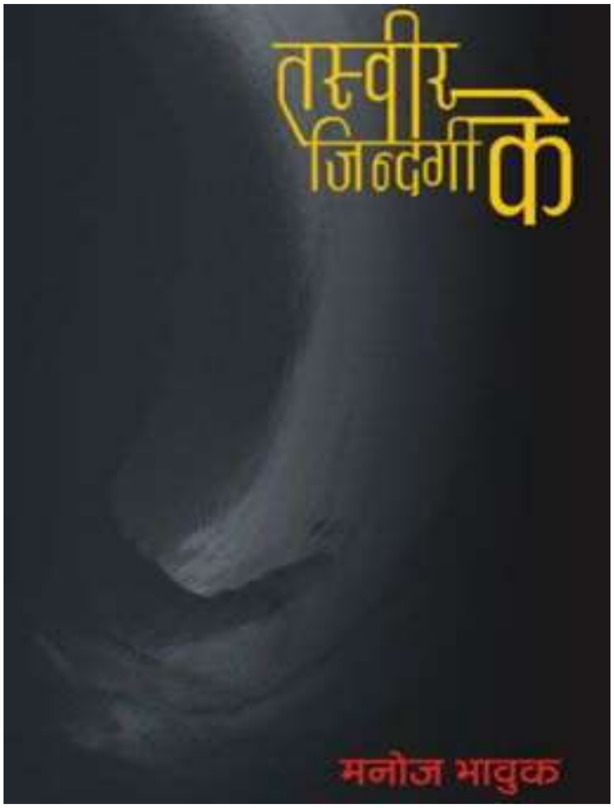

सटीक कलेवर बटलो बा ? एह के देखल जाओ त ग़ज़ल के माने अरबी भासा के शब्दकोश के लिहाज से 'रूआ पूनल' भा 'सूत कातल' होला। बाकिर, आगा जाइ के ई फ़ारसी भाषा से उर्दू में आवत ना आवत 'प्रेम विषयक चर्चा' आ 'प्रेमिका से बतकही' के रूप में रूढ़ि हो गइल। एगो दोसर मत एही ग़ज़ल के माने हिरनी के कण्ठ से निकसल आह भा घाही भइला प कवनो हिरनी के दरद में रेघारी पारत आवाज मानेला। बात कवनो होखो, ग़ज़ल अपना शिल्पगत विशेषता के कारन आपन उर्दू वाला पारम्परिक ढंग में बन्हाइल ना रहि सकल। संभवो ना रहे। उर्दू से हिन्दी आ आगा अउरी भासा में ई धमकत आइल। समाज के हर तरहा के भाव-भावना के ई विधा के माध्यम से शब्द मीले लागल। ग़ज़लकार कहन के हिसाब से लगातार समर्थ होत गइलन। एकरा साथे, भोजपुरी भासा में ग़ज़ल के एगो लमहर परम्परा बा। भारतेन्दु के जमाना में भोजपुरी ग़ज़ल लीखत तेग़ अली के नाँव कवन भोजपुरिहा बिसर सकेला ? तबसे अबले खलसा पत्रिका आ कितबिये में ना बलुक काव्य-सम्मेलन तक में ग़ज़लकार आ श्रोता एह के एगो बरियार काव्य-विधा के रूप में अपनावत गइलन। बाकिर, ई काव्य-विधा ग़ज़लकारन से जवन विधाजनक महीनी के उम्मीद करेले आ जतना अदबी कोरसिस के चाहना राखेले,

www.bhojpurisahityangan.com

ओह खातिर लगन कमही ग़ज़लकार लोगन में लउकेला । हालत ई बा जे श्रोता-पाठक लोगन के बीच धमक बनावे के कुल्हि उत्जोग करत ढेर ग़ज़लकारन के ग़ज़ल विधा के व्याकरण (अरुज़) के लिहाज से खारिज होली स, आ नाहीं, त कमजोर होली स। ई एगो अइसन सच्चाई हऽ जेके ग़ज़ल के मर्म बूझे आ जाने आला सभे समझे ला । बाकिर, नवहा ग़ज़लकारन के उन्मादी सोर में एह प नीमनो लोग बोले से बाँच रहल बा, दुख के बात ई बा । हाँ, कुछ लोग ठोंकि-बजाइ के जरूरे कहत बाड़न, बाकिर कहलका सोझ असर नइखे करत। एह तथ्य पर आसिफ़ रोहतासवीजी के फेर से सूनल सही रही - *पहली नज़र में ऊपर से एकदम सीधा-सपाट लउके आला ई काव्य-रूप जतना जटिल बा, ओतने नाज़ुको बा. एकर शिल्प आ 'व्याकरण' जतने दुरूह बा, एकर मिजाज ओतने कोमल बा.*आजके, माने, अइसना दौर में ग़ज़ल-संग्रह 'तस्वीर जिन्दगी के' अदब के अकास में एगो झलकत उम्मीद अस आइल।

एह संग्रह के पढ़त खा भोजपुरिहा क्षेत्र के 'आजु के' गाँव-जवार आ एहके समाज आ वातावरण से गुजरला लेखा अनुभव होला। आजु के गाँव-जवार आ एहके समाज आ वातावरण के माने ई, जे भोजपुरिहा समाज खलसा गाँव के खाँटी माहौल में रमल, शहरी आधुनिकता के बयार से तनिका फरिका जीयत समाज नइखे रहि गइल।

लाश के ढेर पर जे बनत बाटे घर,
ओके मन्दिर कहीं, चाहे मस्जिद कहीं
देवता दू घरी ना ठहरिहें उहाँ,
ऊ पिशाचन के डेरा कहइबे करी

लोर पोछत बा केहू कहाँ
गाँव अपनो शहर हो गइल
तीन-चौथाई गुजारत रोड पर बा जिन्दगी
तब कही पगले नू कवनो देश ई खुशहाल हो गइल

एह बदलल माहौल में एगो बऽड़ वर्ग के दुख-दरद-खुशी-उछाह के आवृति भा ढंग अब पुरनके लेखा नइखे रहि गइल, जवन पहिले भोजपुरिहा समाज के जीवन के ढंग आ बर्ताव मानल जात रहे। अमदी के मूल भाव-सुभाव ना बदले। ई बदलबो ना करी। बाकिर, अमदी के रंग-ढंग आ माहौल जरूर बदलेला।

भीखमंगा सड़क पर सुतल
जइसे बालू प मछरी पड़ल
हरदम रहल अधूरा चिचरी परा-परा के
कबहूँ खिंचा सकल ना तस्वीर जिन्दगी के
फाट जाइत करेज कहिये ई
आँख से दर्द जो बहित ना तऽ

'तस्वीर जिन्दगी के' के ग़ज़लकार मनोज भावुक एह मायना में आज के गाँव के ओह अमदी के मनोभाव सोझा ले आवत लउकत बाड़न जेकर सोच त निठाह भोजपुरिहा बा बाकिर ओकर भासा, रहन-सहन, बोल-बिचार ठेठ गाँवें के नइखे रहि गइल, ऊ आधुनिक माहौल में साँस ले रहल बा।

आखिर जुबां के बात कलम में समा गइल
गजलो में हमरा जिन्दगी के रंग आ गइल
नइखे एहसास, जज्बात, धड़कन जहाँ
जख्म उहवाँ अनेरे देखावल गइल
अनजान शहर बाटे, अनजान सफ़र बाटे
मजबूर मुसाफिर बा, चलहीं के डहर बाटे

भलहीं लोगन के मन में कतनो भेद आ आपसी मनमुटाव होखो, भोजपुरिहा समाज आपना लोगन के एकवटिये जीये के गुण के कारने जानल जाना। एह समाज में अबले एकल-परिवार खातिर कवनो विशेष भाव नइखे बन सकल, नाहीं, एकरा खातिर कवनो कवनो भाव इजतिये पा सकल बा। जबकि बाजारवाद आ आधुनिक जीवन-शैली से लगातारे घोर दबाब मीलि रहल बा। संयुक्त-परिवार में रहल एह समाज के मूल भाव हऽ। एह संयुक्त परिवार पर चोट बर्दाश्त नइखे होत। भोजपुरिहा समाज के एही सर्वसमाही चरित्र के संतुष्ट करे के फेर में आ अइसने पारिवारिक विन्यास के मान देबे के फेर में ग़ज़लकार मनोज भावुक अपना ग़ज़लन में कतना-कतना शेर कहत चलि गइल बाड़न –

एगो थाली के दूगो रोटी अब
दूगो चूल्हा प आ गइल भाई
जिनिगी चले ना कबहूँ सहयोग के बिना जब
कइसे कहा ई जाला केहू हमार नइखे

बिम्बात्मक प्रयोग के कसौटी पर :

ग़ज़ल के पहिल शर्त हऽ एकर हर पंक्ति (मिसरा) में ग़ज़लियत के बहाव। आखिर, ई ग़ज़लियत हऽ का, ई देखल जाओ -

ना परे मन घर कबो बबुआ के भलहीं
रोज बुढ़िया भोर में कउवा उचारे
जे भी बा, बाटे बनल बरगद इहाँ

www.bhojpurisahityangan.com

पास के सब पेड़ के रस चूस के
कहाँ साफ लउकत बा केहू के सूरत
तलइया के पानी थिराये त देतीं

कहे के मतलब ई जे शेर के माध्यम से सोच के कुछ एह तरे सोझा ले आवल जाओ जे ओकर प्रभाव तिर्यक होखे। ईहे ग़ज़लियत हऽ। एकरा अइसहूँ समझल जा सकेला जे समय के धार में बहत बूझल-बेबूझल घटना के जमा अनुभव जब शब्द के साँचा में कसाइल ग़ज़ल के व्याकरण के कसौटी पर आवे त ऊ ग़ज़लियत कहाले। एह कसौटी पर एह संग्रह के कौ गो ना ग़ज़ल सफल भइल लउकऽता। संग्रह के ग़ज़लन में निकहा गहिराई बा।

शब्द-भाषा के प्रयोग के कसौटी पर :

कवनो शाइर के क्षमता एह मानक पर जरूरे आँकल जाये के चाहीं जे ओकर भासा कतना सहज आ समर्थ बीया। एकरे सङे ईहो, जे जवना भासा में ग़ज़ल भइल बा, ओह भासा के लालित्य, भासा के गहिराई सोझा आ सकल बा कि ना। इहवाँ कुछ शेर देखल जाओ –

कबहूँ त भोर होई, कबहूँ छँटी कुहासा
'भावुक' ई मान लऽ तू आगे अन्हार नइखे
बन्हाइल कहाँ ऊ कबो छन्द में
जे हमरा के हरदम लुभावत रहल
अबले ना जिन्दगी से मुलाकात हो सकल
ऊ साथे-साथ जबकि बहुत दूर आ गइल
केहू के निखोर देले बा घाव सब पुरनका
आवँक में आ रहल ना दुख-पीर जिन्दगी के

पतई के बिम्ब पर जिनिगी के माने लगावत हेह शेर के देखल जाओ जहवाँ देसी बिम्ब असंयत मन के ऊहापोह के का खूब निकहा राखि रहल बा -

'भावुक' हो ई जिनिगी तऽ पतझार के पतई हऽ
ई काल्ह रही कहवाँ, केकरा ई खबर बाटे

बाकिर, एह बात के कहल कवनो बेजाईं नइखे जे संग्रह के भासा के भोजपुरी के रंग जरूरत से ढेर बदलि गइल बा। साहित्य के भासा आ बोलचाल के भासा के बीच हर काल आ जुग में अंतर रहल बाटे। ढेर संवेदनशील रचनाकार लोग बेवहार भा बोलचाल के भासा लेखा साहित्य के भासा के राखे के कोसिस करेला। तबहूँ एगो सीमारेखा त रहहीं के चाहीं। मनोज भावुक के भोजपुरी शहरी भोजपुरी बीया। पढ़त खा ई कौ जगह खटकत जाला। एही लगले शब्दन के सरूप प कवनो एकमत वर्तनी नइखे निबाहल गइल। जवन जगहा शब्द के जइसन सरूप चाहीं अपना लीहल बा। दुष्यंत कुमार के ग़ज़लन पर आपन बेबाक टिप्पणी देत वरिष्ठ ग़ज़लकार एहतराम इस्लाम के कहनाम बा जे, *दुष्यंत के शहर आदि शब्दन के प्रयोग प कवनो बवाल ना मचित, खलसा ऊ प्रयोग करत खा शब्दन में एकरूपता रहे देले होते। ईहे बात मनोज भावुक के मामला में लउकत बा। कतना शब्द के उदाहरण मीलि जाई जे कौ गो ना प्रारूप में अपनावल गइल बाड़न स। तवना पर हिन्दी के क्रिया विशेषण आ अव्यय शब्दन के प्रयोग से बाँचल ठीक होखित। ई बात कवनो रूप में ना मनाई जे ईहे आजकाल के भोजपुरी भासा के सरुप हऽ। एह ओरे मनोज भावुक के ध्यान देबहीं के चाहत रहे। हिन्दी के पनही में भोजपुरी के गोड़ असकसावन अस बुझाये के कारन बनल बा।*

ग़ज़ल-विधा के व्याकरण के कसौटी पर :

एह संग्रह के सबसे बऽड़ खासियत मनोज भावुक के ग़ज़लन के तकनीकी पच्छ से मजगूत भइल बा। ग़ज़लन के शेर दर शेर बहर के कसौटी पर सफल हो के चढ़ल बीया। एह संदर्भ में हम खूब सम्हर के आपन बात कहल चाहब।

भोजपुरी में कुछेक गंभीर ग़ज़लकारन के छोड़ि दियाओ त सायदे कवनो ग़ज़लकार आपन ग़ज़ल के बहर के कसौटी पर चढ़ा सकेलन। अपना पच्छ में चाहें केहू कतनो ना बोलो। उच्चारण के हिसाब से शब्दन के प्रयोग आ मिसरा के तक़्तीह (शेर के पंक्ति के अपनावल गइल बहर के साँचा में फिट करेके के लूर) कइला प सुखद अचरज होता। एह गहीर कोसिस खातिर मनोज भावुक बधाई के पात्र बाड़े।

एक बात जवन हमरा एगो पाठको के हिसाब से खटकल ऊ बा संग्रह के ग़ज़ल संख्या – 6 | ई ग़ज़ल गोपालदास नीरज के बड़ा मशहूर ग़ज़ल के अनुवाद अस सोझा आवत बीया। प्रेरणा एक बात हऽ बाकिर एह ग़ज़ल के कौ गो शेर नीरज के ओह ग़ज़ल से मिलान में आजा तारन स। अइसन होखे ना चाहत रहे।

कुल्हि मिलाके ई बात कबूले में कवनो बेजाईं नइखे जे मनोज भावुक अरुज़ आ भावदशा के दम पर भोजपुरी ग़ज़ल के एगो अलगा ऊँचाई देबे के प्रयास कइले बाड़े। ई प्रयास भोजपुरी ग़ज़ल विधा के हर हमेसा नाँव बनवले रही।

www.bhojpurisahityangan.com

समीक्षा - डा. गुरूचरण सिंह

गजलगोई के कसौटी पर रंगमहल

कबो झील तितली, कमल बन के आइल।

दरद जिन्दगी के गजल बन के आइल।।

(बहरे मुतकारिब, मसमन सालिम (फऊलुन,4 बार 1ऽऽ-4))

एतना झकास यादगार शेर कहे वाला कवि केहू दूसर ना ख्वाजा मोहम्मद इमामुद्दीन निज़ामी जेकरा के साहित्यिक जगत डा०जौहर शफियाबादी के नाम से जाने ला। गजल के काव्य कायिक स्वरूप आ व्याकरणीय चौकसी के चमत्कार जवन जौहर के इहाँ बा ऊ दूसरा खातिर अनुकरणीय बा। इनका गजलगोई के सफरनामा पर एक नजर-

2003 में प्रकाशित भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल-संग्रह 'समय के राग' जवना के संपादक बानी भोजपुरी के वरिष्ठ गजलकार श्री जगन्नाथ जी आ भगवती प्रसाद द्विवेदी जी ओह लोग के उद्गार :- सन् 1992 में अपना उन्तीस गो खूबसूरत गजलन के गुलदस्ता 'धरोहर' का रूप में सौंपे वाला जौहर शफियाबादी के गजल में इश्केमिजाजी-इश्केहकीकी आ जदीदी शायरी के तीनों रंग एके साथ देखल-परखल जा सकेला, जवन त्रिवेणी के त्रिधारा अस प्रवाहित हो रहल बा। मूल्यन के पतनशीलता आ सामाजिक विसंगति विद्रूपता जौहर साहेब के गजलन में अपना अंदाजे बयानी का संगे खुल के उभरल बा। जवन आज समाज के मांगो बा। ई उहाँ के वैचारिक प्रौढ़ता आ साफ दृष्टिकोण के परिचायक बा। जिनगी के व्यथा-कथा के गजल में उकेरल रवानी आ खूबसूरती के साथे आसान ना होला, बाकिर उहाँ के एह काम के बखूबी अंजाम देले बानी। ('समय के राग' पृष्ठ-10 प्रकाशक-भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान, पटना) 1992 में जौहर जी के प्रथम मानक गजल संग्रह 'धरोहर' प्रकाशित भइल, जवना किताब पर विचार देत हस्ताक्षर गजलकार 'प्रो० सतीश्वर सहाय वर्मा, 'सतीश' प्रथम भोजपुरी विभागाध्यक्ष, बिहार विश्वविद्यालय, पहिला बेर एह सच्चाई के उजागर करत 'धरोहर' पृष्ठ 15 पर लिखले बानी :- जौहर साहब का गजल के बारे में अगर ई कहल जाव कि इनकर भोजपुरी गजल पर गालिब के पकड़ बा त अतिशयोक्ति ना होई । आ फेर पृष्ठ 18 पर लिखले बानी कि भोजपुरी गजल संग्रह में भोजपुरी में गजल लिखे वाला लोग के सही माने में

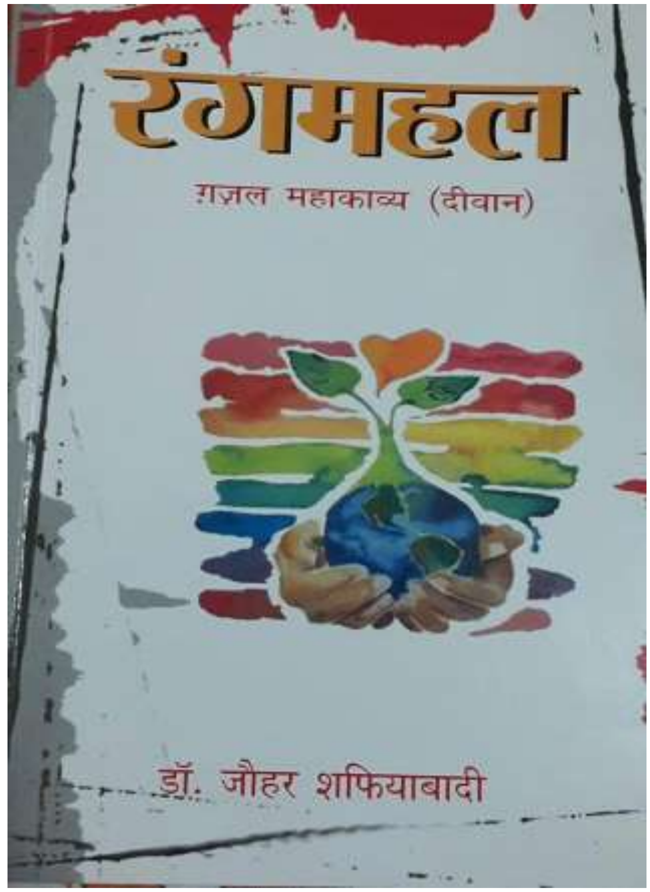

गजल के रूप देखे के मिली, जवना में ठेठ भोजपुरी शब्दन का साथ गजल के तकनीक आ मिजाज बोल रहल बा, धरोहर, भोजपुरी गजल के धरोहर साबित होई (1 जनवरी 1992)।

अंग्रेजी, हिन्दी, भोजपुरी के जानल-मानल विद्वान आ भोजपुरी के प्रथम समीक्षक प्रो० डा० विश्वरंजन जी धरोहर पढ़ के ई कहे पर मजबूर हो गइनी कि 'जौहर शफियाबादी' के गजल पढ़ के बुझाइल जे ऊ उस्ताद बाड़न। एह फन के मन-मिजाज के माफिक बहर ऊ बना लेलन। सबसे अधिक सराहेवाली बात बा उनकर भोजपुरीपन। भोजपुरी शब्द के संगीत उनका पाले बा। एहसे अगर जौहर शफियाबादी गजल लिखले बारन, त ऊ शिल्प उर्दू से लेलन आ कथ्य भोजपुरी के देलन। (छपरा 22 जनवरी 1992 धरोहर पृष्ठ-11)

डा०सुधाकर मणि त्रिपाठी के विचार :- डा०जौहर के जानला के मतलब बा भोजपुरी गजल के नया दशा-दिशा, तेज-प्रताप, युग आ परंपरा के जानल। गजल के काव्यशास्त्रीय विधान का

www.bhojpurisahityangan.com

धरातल पर दोहा, सोरठा, सवैया, रुबाई आ चैपाई के मूल काव्यशास्त्रीय छन्द का साथ स्थापित कर के दुनू के काव्यशास्त्रीय छन्द विधानमय सौन्दर्यबोध के त्रिवेणी अस भाव के धारा प्रवाह सरिता बहावल एगो गजब के प्रयोग धर्मिता के चमत्कार बा जवन काव्यकायिक ढाँचा मात्र ना अपना काव्यात्मक लालित्य आ वैचारिक उर्जा का साथ अपना मौलिक स्वरूप में जगमगा रहल बा। जौहर भोजपुरी गजल में अपना प्रयोग धर्मिता खातिर हमेशा याद कइल जइहन। (हिन्दी विभाग-चित्रकुट, बायन मासिक, पृष्ठ-14-1996)

भोजपुरी हिन्दी के ख्याति प्राप्त हस्ताक्षर सिने गीतकार गजलकार मोती बी० ए० के विचार :- जौहर जी भोजपुरी गजल के वैचारिक उर्जा आ सांकेतिक श्रृंगार रचावे-बसावे के कला रउरे हिस्सा में बा । रउरा गजल के ई शेर हमार करेज काढ़ लेलस:-

देके संतोष हमरा के रो देलें ऊ ।

बारें कबहूँ के उहो निशाना भइल ।।

(बरहज जि० देवरिया, 30 अप्रैल 1992)

इहो बात बा कि भोजपुरी, हिन्दी में गजल कहे वाला लोग त बहुते बा बाकी जवन बात जौहर का गजलन में बा ऊ बहुत कम लोग का नसीब होई। बलुक हमरा इहो दु-टुक कहे में कवनो हरज नइखे कि जौहर शफियाबादी भोजपुरी के बेजोड़, लाजबाब गजलकार बारन आ इनका गजल में जवन बात बा ऊ दोसरा में नइखे। एकर सबसे बड़ा कारण ई बा कि हिन्दी, भोजपुरी में गजल कहे वाला लोग का ऊ माहौल नइखे मिल सकल, जवन इनका मिलल बा। आउर लोग गजल के प्लास्टिक के पौधा भोजपुरी के फुलवारी में लगावे के कोशिश कइले बा जबकि जौहर शफियाबादी उर्दू आ फारसी के माहौल में परवान चढ़ के अपना मातृभाषा भोजपुरी में गजल सरा भइल बारन। इहे वजह बा कि ग़ज़ल के फन, तकनीक से ई जेतना वाकिफ (जानकार) बारन, ओतना दूसर लोग नइखे। - डा०एस0 एम0 मंजूर नुमानी उर्दू के प्राख्यात समीक्षक 2007 (रंगमहल पृ०-209)

'रंगमहल' डा०जौहर शफियाबादी द्वारा रचित दीवान भोजपुरी काव्य साहित्य को मान-सम्मान दिलाने में अग्रणी भूमिका निभाएगा। डा०जौहर को पढ़ने के बाद मुझे पता चला कि भोजपुरी में भी इतनी सही बहर-छंद की ग़जलें लिखी जा रही हैं। - प्रो० केदारनाथ सिंह

(साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त वरिष्ठ हिन्दी कवि तथा पूर्व अध्यक्ष भारतीय भाषा केंद्र, जे० एन० यू०, नई दिल्ली।)

(द संडे इंडियन के सई भोजपुरी साहित्यकार अंक से सभार 2009 ई० में)

भोजपुरी गजल का क्षेत्र में प्रथम प्रयोगधर्मी-सृजनशील, आधुनिक भोजपुरी गजल- बोध के प्रथम श्लाका पुरुषो का रूप में प्रतिष्ठित बारन। जौहर साहब के विशाल ऊर्जावान रचना-संसार में गजब के दमखम, नजाकत, नफासत आ साफगोई का साथ गजल के व्याकरणीय चौकसी, शिल्प-विधान पर मजबूत पकड़ भोजपुरी गजल विधा के एगो नया दिशा देबे में लमहर सहयोगी सिद्ध भइल बा । इहे कारण बा कि जौहर साहब के गजलन में काव्यात्मक वैचारिक उँचाई का साथ गजल के परंपरागत कथ्य आ आधुनिकता से भरल-पुरल समकालीन, समसामयिक बोध-विस्तार सूक्ष्मता से नवो रस से परिपूर्ण होके मणिकांचन जस चमक-दमक रहल बा । चाहे श्रृंगार रस होखे, चाहे वीर रस, कवनो हालाबादी आ अखोर-बखोर ढ़ाँचा नइखे। सब अपना नैतिक उर्जा का साथ भोजपुरी के ठेठ शब्दन से सुसज्जित, अलंकृत, सुसंस्कृत आ संयमित बा, जवन कवनो उच्चस्तरीय साहित्यिक रचना खातिर बहुते जरूरी अंग होला।- प्रो० सच्चिदानंद श्रीवास्तव-(रंगमहल पृ०

डा. गुरुचरण सिंह 'गुरु' , रोहतास , बिहार के रहे वाला गुरुचरण सिंह 'गुरु' जी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बानी । ईंहा के भोजपुरी के लगभग हर विधा में साहित्य सिरजन कईले बानी । कई गो भोजपुरी किताब प्रकाशित हो चुकल बाड़ी स । कुछ दैनिक अखबारन मे इँहा के स्तम्भकार भी बानी। व्यंग्य के सहारा लेके जटिल से जटिल बात सरलता से कह देबे में गुरु जी के कवनो जोड़ ना ह । सम्प्रति वीर कुंवर सिंह वि. वि. के अंतर्गत एस. पी. जैन कॉलेज में हिंदी के एसोसिएट प्रो. बानी ।

सं०-215)

भोजपुरी के समर्पित गजलकार शीर्षक से डा० शम्भुशरण जी के उद्गार :- जौहर शफियाबादी भोजपुरी के बहुचर्चित आ समर्पित गजलगो बारन। आज के देहात आ शहर दुनू के जिनगी पर इनकर खास नजर बा । इतिहास आ किंबदन्तियन के आधार पर जिनगी के जवन सुनहला सपना इनका भावुक मन पर बनल रहे, ओह से आज के जिनगी के कवनो ताल-मेल ना देख के उनका कोमल मन पर झटका लागत बा।

एह तरे बा समय बेवफा हो गइल। हाल जिनगी के बहुते बुरा हो गइल ॥

बहुत रंग बा भोजपुरी गजल में। दिया साधना के जरा देले बानी॥

जौहर के साधना के दीया हाल फिलहाल से ना, एगो लंबा अरसा से जल रहल बा। 1992 में उनकर गजल संग्रह 'धरोहर' आइल रहे तब से अबले उनकर मौन साधना अनवरत जारी बा। कथ्य या शिल्प के दिसाईं भी जौहर के प्रतिभा के जौहर उनका गजल में साफे झलकत बा। - डा० शम्भुशरण श्रीवास्तव- (रंगमहल पृ० सं०-220)

उपर्युक्त विद्वानन के समीक्षात्मक दृष्टिकोण से सफरनामा 'रंगमहल' तक पहुचल बा। भोजपुरी गजल के क्षेत्र में जौहर साहेब के जादू सभका सिर पर चढ़ के नाचता। एकर मतलब ई कतई नइखे कि एहिजा दोसर गजलकार हइये नइखन। बहर, रदीफ, काफ़िया इत्यादि गजल शास्त्रीय नियमन के पालन क के वजनदार गजल लिखेवाला त बहुते बाड़न, बाकिर गजल के तहजीब मानके इश्क मिजाजी से इश्क हकीकी तक के बात सफलतापूर्वक गजल में कहे वाला लोग चंद भोजपुरी गजलकारन में डा०जौहर साहेब अगिली कतार में सबसे आगे मुस्कुरात खड़ा बाड़न।

गजल साहित्य-जगत के बड़ा नाजुक विधा ह, जेकर मतला से लेके मक्ता तक हर शेर में नजाकत आ नफासत के नूर चमकेला। प्रसिद्ध आलोचक जनाब रशीद अहमद सिद्दीकी के अनुसार "गजल शायरी नहीं, तहजीब है।" बहुत गजलकार आ विद्वान लोग गजल के स्वरूप विवेचन पर विस्तार से चर्चा कइल। ई लोग मुख्य रूप से गजल के अर्थ प्रेमिका से वार्तालाप आ विरही-विरहिन के व्यथा-कथा मनलस, बाकिर डा०जौहर शफियाबादी त गजल के उदात्त भाव-भूमि पर खड़ा कर देलन।

सच्चा-सच्चा, प्यार गजल हऽ। मन-गंगा के धार, गजल हऽ ॥

दुख के अंधियारी कोठरी में। आशा के उजियार गजल हऽ ॥

जौहर ह इतिहास समय के। जिनिगी के व्यापार गजल हऽ ॥

गजल शायरी के ऊ विधा ह, जवना के कला पक्ष आ भाव पक्ष में बारीक कारिगरी के प्रौढ़ता झलकेला। ई छन्द कवनो नजर से खोट बर्दास्त ना कर सके। छोटहनो खोट अदबी पाठकन के, श्रोतन के ओसहीं खटकेला, जइसे शरद पूर्णिमा के चमकत चाँद के दाग बड़का कलंक बन के करक जाला। एही से गजल लिखे वाला कवियन के एह फन के बारीकी से वाकिफ होखे के चाहीं। ई सामान्य छन्द ना ह कि लघु-गुरू के जोड़-घटाव क के एकर रचना कर दिहल जाव। जेकरा हिया में भाव के सोता उमड़त होखे, आ ऊ गजल के तत्वन से वाकिफ आ शब्दन के तराशे आ सजावे में माहिर होखे, उहे सफल गजलकार हो सकेला। महाकवि तुलसी दास के ई पंक्ति-"गिरा अरथ जल वीचि सम, कहियत भिन्न ना भिन्न" एह छन्द पर अक्षरशः लागू बा। गजल के कसौटी पर उहे विशिष्ट छन्दवद्ध रचना सफल हो सकेला, जवना के शब्द आ अर्थ दूनो से भाव टपकत होखे। रंगमहल एह कसौटी के ताजमहल बा। जवना में गजल के हर बहर पर सफल गजल परोसल बा। जबकि अब तक प्रचलित चार-पाँच बहर पर हीं भोजपुरी में सब लोग गजल लिखले बा। जौहर साहेब के प्रयोग धर्मिता रंगमहल में देखल बनत बा। दोहा, सोरठा, चैपाई, रूबाई, सवईया जइसन विद्यागत छंदन पर गजल कहल एगो चत्मकारी प्रयोग बा।

गजल अरबी, फारसी आ उर्दू के पहचान बा। भारतेन्दु युगीन प्रसिद्ध कवि तेग अली 'तेग' द्वारा 'बदमाश दर्पण' के नाम से भोजपुरी के पहिला गजल संग्रह सहृदयन के सामने परोसल गइल। ओही घरी से भोजपुरी गजल के परंपरा आगे बढल आ आज ई भोजपुरी के लोकप्रिय आ समृद्ध छन्द बन गइल बा, उर्दू आ हिन्दी के तुलना में कवनो नजर से उन्नीस नइखे, रंगमहल पढ़ के देखीं।

भोजपुरी में आज धड़ाधड़ गजल लिखा रहल बा, बाकिर दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ई बा कि हाराहुंसी में गजलकार लोग अइसनो गजल लिख देत बाड़न, जवना के कवनो दृष्टि से गजल ना कहल जा सके। कुछ तथा कथित गजलकारन में विधागत भा छन्दगत दोष बा, त कुछ भोजपुरी गजलकार लोग विधागत जानकारी त राखत बा आ बहर, काफ़िया-रदीफ, मतला-मक्ता, मिसरा-ए-उल्ला मिसरा-ए सानी इत्यादि के

पालन करत पूरा-पूरी गजल उतारतो बा, बाकिर ओह गजलन में भाव पक्ष के कमी 'बिन घरनी, घर भूत के डेरा' जइसन खलता। कुछ लोग खाली जोड़-घटाव के गजल बुझत बा जइसे - छव चार दस। बस यार बस।। डा०जौहर शफियाबादी गजल के हकीकत बतावत लिखत बाड़न-

"मुहब्बत के सोना ह, चानी गजल हऽ। गजल जिन्दगी, जिन्दगानी गजल हऽ ।।

बहर काफ़िया के खेतौनी ई ना हऽ। कठिन साधना के कहानी गजल हऽ ।।"

आज साहित्य में जिस्मानी इश्क के बात गुजरल जमाना के साथे दफन हो गइल। खाली नायिका के शबाब आ चमन के गुलाब के जिक्र, रोटी के फिक्र में जूझत समाज के नीक ना लागी। डा०जौहर एह सच्चाई से वाकिफ बाड़न कि आज के दौर में लकीर के फकीर बनला से काम ना चली। गजल के बदलल युगधर्म आ जमाना के स्वर सुनाए के चाहीं। एही से आज के गजलकार से निहोरा करत रंगमहल में आपन बात ऊ कहले बाड़न-

"गजल कहके रउआ नया कुछ हुनर दीं। बड़ा जस मिली अपने अइसन जे कर दीं ।।

असरदार बहुते ह नाजुक विधा ई। जमाना के सुर एकरा तेवर में भर दीं ।।

खुशी होई जौहर के दुख ना बुझाई। कला जानीं छाती पर कोदो ना दर दीं ।।"

सूफीसंत डा०जौहर शफियाबादी बहुआयामी व्यक्तित्व के शुद्ध भोजपुरिया व्यक्ति बानी, जेकरा साहित्यिक संसार में उच्चस्तरीय चिंतन आ काव्य-कौशल के मौलिक स्वरूप हर शेर से ध्वनित हो रहल बा, जवन एगो लमहर कालजयी काव्य 'रंगमहल' के मौलिक विशेषता बा।

आदमी का चबाई रोटी के।

आदमीयत चबा गइल रोटी ।।

आज जमाना एकइसवीं सदी के दौर से गुजर रहल बा। हर तरफ पीड़ा, भय, संत्रास, जलालत, लालच, आतंक आ द्वेष के बोलबाला बा। लागता एह रोगन से सउसे दुनिया प्रभावित हो गइल बा। एह जमाना के दर्द 'रंगमहल' के एगो शेर में देखल जा सकेला-

"कैंसर के वार्ड में जे पड़ल बा सुघर जवान। सुनलीं ह, ओकरे नाम ह एकीसवीं सदी ।।"

प्रगतिशील चेतना के धनी जौहर साहेब शोषकन के चेतावत ई कह रहल बाड़नः-

जे चाहीं रउआ छीन लीं, पहुँचा मरोड़ के। बाकिर ई आग सुनुगी, त जाई ना छोड़ के ।।

कुर्सी के लोभ नाच रहल बाटे रोड पर। जागत बा गाँव रात भर टोला अगोर के ।।

जब-जब समाज में आतंक के दबदबा बढ़ेला, भाई-भाई के खून से आपन तिसनगी बुझावे लागेला, त संत-फकीर लोग समाज में प्रेम के लहलहावे के कोशिश करेला आ साम्प्रदायिक सद्भावना, भाईचारा आ प्रेम-मोहब्बत के बात क के समाज के एगो रास्ता देखावेला। ओही तरह से 'रंगमहल' में सामाजिक यथार्थ के खाली व्यर्थ कथा नइखे कहल गइल, बलुक सामाजिक परिवर्तन खातिर प्रेम के संदेशो दिहल गइल बा। कबीर, दादू, जायसी, दरियादास इत्यादि के भाषा में समाज के चेतावत सूफी संत मौलाना जौहर साहेब कह रहल बाड़नः-

मंदिर, मस्जिद, चर्च, शिवाला, सबके एके तार बा जौहर।

प्रेम करम ह, प्रेम धरम ह, बाकी सब बेकार बा जौहर ।।

जौहर जी बस प्रेम धरम, अउर करम सब क ख ग। साम्प्रदायिक सद्भावना जौहर के रोम-रोम में बसल बा। प्रेम के पीड़ पहचाने वाला डा०जौहर स्पष्ट कहताड़न कि धार्मिक उन्माद में सँउसे दुनिया जर जाई, एकरा के प्रेम के गीते बचा सकेला:-

"धर्म के पागल चिंगारी, केतना घर के फूंक गइल।

गीत के बदरा ना बरसी त, सारा जग जल जाई रे ।।"

एही से ऊ कहताड़न:-

पत्थर के मोल कवनो ना लेबुल घटा सकल।

काबा में याद आवेला काशी कबो कबो ।।

बाहरी ढोंग पर करारा व्यंग्य करत जौहर साहब अन्तर्मुख होखे के बात कहत बाड़न:-

www.bhojpurisahityangan.com

पंडित आ मौलवी कहस तन के किताब पढ़।

दूनो से हम कहीले कि मन के किताब पढ़॥

धोखा कपट कपोल के का कल्पना में बा।

भलही पढ़े के बात त मगन के किताब पढ़॥

एही से डा०जौहर मजहबी जुनून आ धार्मिक ठीकेदारन के भत्र्सना, कर रहल बाड़न:- मजहब धरम के कारगुजारी के हाय -हाय। मुल्ला के हाय-हाय, पुजारी के हाय-हाय॥

ऊ जानत बाड़न कि:-

लगा के आग जे घूमत बा जौहर। पुजारी राम के रहमान के बा॥

इहे कारण बा कि ऊ सभका से प्रेम करे के बात करताड़न:-

"चुपके-चुपके प्यार के दिअना जरा के देख लीं। आस के तुलसी कबो मन में लगा के देख लीं॥

शब्द अक्षर में कबो ऊ दर्द ना उतरी हुजूर। प्रेम में जे दर्द बा, ऊ आजमा के देख लीं॥

आज तक के इतिहास रहल बा कि दुनिया खातिर उहे कुछ कर सकेला, जे आपन सब कुछ लुटा दे। कबीर साहेब एह तरफ इशारा करत कहले रहन:-

"जो घर जारे आपना चले हमारे साथ।"

एही तर्ज पर जौहर साहेब कह रहल बाड़ेन:-

"नदी के धार जे मरुस्थल के ओरी मोड़ देवेला। उहे तरसत धरा के जल से नाता जोड़ देवेला॥

कबो ऊ यात्रा के यातना से ना डरे राही। जे चलते-चलते फोड़ा गोड़ के सब फोड़ देवेला॥"

ओसहीं

"आपन जे पेट काट के अनकर क्षुधा भरे। उहे सरग उतारेला, जौहर जमीन पर॥"

एह तरह से 'रंगमहल' के गजलन में भाव-पक्ष के प्रौढ़ता झलकता, जवन जौहर साहेब के एक तरफ सूफी संत सिद्ध करता, त दुसरा तरफ गालिब, मीर, फिराक जइसन माहिर गजलकारन के कतार में स्थापित कर देता। प्रो० सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश' आ प्रो० विश्वरंजन जी ठीके कहले बा लोग कि "जौहर शफियाबादी भोजपुरी गजल के गालिब के तरह माहिर गजलकार बारन।" मिर्जा गालिब लिखले रहलन:-

"ऐसा भी कोई है जो गालिब को नहीं जाने।"

ओसही डा०जौहर अपना गजल के गालिब के समानान्तर मानतो बाड़न:-

"भोजपुरी में हमरो बाटे, गालिब जइसन चोख गजल।"

बहुत रंग बा भोजपुरी गजल में। दिया साधना के जरा देले बानी॥

इनका गजलन में मजल उस्ताद नियन मतला, रदीफ, काफिया, मक्ता मिसर-ए-उल्ला, मिसर-ए-सानी आदि तत्वन के साथे शब्दन के सटीक प्रयोग आ वाक्य संयोजन के चातुर्य अद्भुत बन पड़ल बा, त बहर-वजन के बारीकी बहुत उस्तादी के साथ उपस्थित बा। डा०जौहर कई बहर में गजल कहले बाड़न। दोहा, चैपाई, सवैया, सोरठा, रूबाई इत्यादि हिन्दी छन्दन के जवना सफलता के साथ गजल में प्रयोग कइल बा, ऊ काबिले तारीफ बा। एह गजलन में अलंकार योजना, प्रतीक योजना छन्द विधान, रस योजना इत्यादि काव्यशास्त्रीय तत्वन के सहज आ चमत्कारी प्रयोग भइल बा, जवन गजल में निखार पैदा कर देता। डा०जौहर द्वारा लिखल भोजपुरी के पहिला दीवान इनका के अरबी-फारसी आ हिन्दी-उर्दू के उस्ताद गजलकारन के बगल में गर्व के साथ खड़ा कर देता। यद्यपि इनका गजलन में अरबी-फारसी आ उर्दू से नजाकत लिहल गइल बा, बाकिर ओकर तेवर खांटी भोजपुरी बा। जइसे इनका व्यक्तित्व पर भोजपुरी के फक्कड़ कवि कबीर दास आ दरिया दास के छाप झलकता, त इनका गजलन में भोजपुरी साफगोई आ अक्खड़पन के दर्शन होला। हमरा ई कहे में तनिकों हिचक नइखे कि यदि जौहर शफियाबादी अउर कुछ मत लिखस, तबो अकेले (दीवान-गजल महाकाव्य) 'रंगमहल' इनका के साहित्यिक जगत में अमर बनावे खातिर काफी बा।

हमार पहिला पहाड़ के ट्रैकिंग :

सरकुंडी दर्रा (अंतिम भाग)

फोटो साभार :रौशन कुमार

अब ले - लेखक के पहाड़ से लगाव आ ट्रैकिंग के मौका के बारे में पढ़नी । ट्रैकिंग के मौका मिलल आ आपन आधा अधूरा तैयारी से उ शुरुआत कईले। आपन अनुभव के साझा करत लेखक एह भाग में आगे के घटनाक्रम बटावत बाड़ें आ साथहीं ट्रैकिंग खाति बाकी जानकारी भी दे रहल बाड़ें -

बेस कैंप से सेगली (8 किमी, 7200 फीट): अगिला दिन हमनी के ट्रेकिंग शुरू होखे के रहे । बैग एक दिन पहिलही तैयार हो गइल रहे। आज के दिन हमनी के कसरत से छुट्टी मिलल रहे। हमनी के सुबह नास्ता क के रकसैक के एक बार फेर से चेक करे के कहाइल की अगर कुछ समान फालतू बा त अभिओ निकाल दी जा। कहल गइल की एहिजा के एक ग्राम उपरे एक किलो लागे लागी । खैर जतना संभव रहे समान निकाल दियाइल । फेर पैकेट लंच मिलल जे की परोठा आ सुखल सब्जी रहे। उ राह खाती ले लियाइल। 8:30 बजे लाइन मे तैयार भइनी जा । करतल ध्वनि से आउर ग्रुप वाला हमनी के स्वागत कइलस। कैंप लीडर हमनी के जरूरी सुझाओ देले। फेर एगो थैली मे बिस्कुट आउर खट्टा मीठा लेमंचूस आ बेदाम पट्टी मिलल। आ हमनी के जैकारा करत ट्रेकिंग सुरू कइनी जा। एह घरी फेर हमरा मन मे तनी डर लागल कि ऊपर का होखी कइसन होखी अगर कुछ तकलीफ़ मे पडनी त के देखि ? बाकी जब ऊपर चढ़ाई शुरू हो गइल त सब डर भाग गइल । पहाड़ के चढ़ाई शुरू भइल। रास्ता गाँव से हो के गुजरत रहे। हमनी के साथे दु गो गाइड रहन जा। एक जाना सबसे आगे और एक जान सबसे पीछे चलत रहन ताकि केहू रास्ता जन भटको। रास्ता न भटके केहु एह खाती खाती जगह जगह प तीर के निशान लगल रहे जे रास्ता बतावत रहे। पीठ प 5-6 किलो के बोझा आउर पहाड़ के चढ़ाई हालत खराब करत रहे । रास्ता मे पास के कवनों गाँव के मेहरारू लस्सी (मट्ठा) बेचत रहे। तीन चार गिलास पियल गइल तबों गर्दन सूखते रहे । धीरे धीरे हमनी के लंच पॉइंट तक पहुचनी जा । उ एगो तनी खुला जगह रहे जहा तिरपाल बंधल रहे। ओहिजा हमनी के आपन ले आइल लंच कइनी जा आ करीब 1 घंटा आराम कइनी

रौशन कुमार

भलुनी जिला रोहतास के रहेवाला हईं। पढ़ाई लिखाई गया से भईल बा। पठन पाठन के अलावे इनहा के नया नया जगह घूमे के शौख राखिले । इनहा के फिलहाल कलकत्ता में राजस्व विभाग में कार्यरत बानी।

जा। चढ़ाई चढ़े मे कई गो छोट छोट ग्रुप बन गइल। एही समय हमारो एगो छोट ग्रुप बनल जे मे 5 लोग रही जा – दु जाना दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर, एक जाना आई आई टी के इंजीनियर, आ एगो अधेढ़ उम्र के जे की टाटा कंपनी मे इंजीनियर रहीं । खैर बात चीत करत हमनी के सेगली कैंप पहुचनी जा। हमनी के ओहिजा करीब 3:00 बजे पहुचनी जा। ओहिजा के नियम रहे कि कैंप मे 4:00 बजे से पहिले ना घुसल जा सकत रहे । त हमनी के कैंप के बहरी इंतेजार करे के पडल। 4 बजे तक बाकी सब कोई भी आ गइल। हमनी के ओहिजा लाइन मे खड़ा भइनी जा। हमनी के गिनती भइल । आ ओहिजा के नियम कानून बतावल गइल। ओहिजा कैंप लीडर केहु न रहे । एगो राजकुमार जी रहीं । ऊहा के खानसामा भी रही आ कैंप लीडर भी । उहाँ के हमनी के जे नियम बतइनी बड़ा स्टाइल मे बतवनी। पूरा राजकुमार (सिनेमा के हीरो) वाला स्टाइल मे बोलले की “मैं आपके लिए यहाँ का कूक भी हूँ और कैंप लीडर भी हूँ”। ए सब होला के बाद हमनी के स्वागत पान (वैल्कम ड्रिंक) मिलल। ओहिजा 5 गो टेंट रहे । चार गो हमनी के लइकन ले लेनी जा आउर एगो टेंट लइकी सब के मिलल। ओकर बाद सबके सुते वाला बेग मिल गइल जे की अगिला दिन लौटावे के रहे । टेंट मे थोड़े देर आराम के बाद पहिले चाह (चाय) आ फेर सूप के सिटी बाजल । सब कोई चाह आ ओकर कुछ देर बाद सूप पीहलस । ओकर बाद करीब 7 बजे तक खाना तैयार हो गइल। अतना जल्दी खाना के भूख त ना रहे बाकी खाये के पडल काहे की कैंप मे लाइट के कवनों इंतजाम ना रहे आ खाना अन्हार होखे से पहिले खालेवे के रहे । खाना मे रोटी चावल दाल सब्जी आ खीर रहे । आ लगभग ईहे खाना हर कैंप मे मिलल। खाना सादा रहे पर लकड़ी प बनल रहे एह से ढेर स्वाद लागत रहे । आ पहाड़ के झरना के पानी से भूखों तनिका ढेर लागत रहे । खाना खतम कईला के बाद हमनी के आपन आपन टेंट मे पहुचनी जा । हमार टेंट मे हमनी के कुल 7 आदमी रहीं जा। प्रत्युष पांडे, अनेक गोयल जी, ईश्वर सिंह जी, चेतन पेदंबकर, चिराग, आरएन डीसूज़ा आउर हम। ई ग्रुप शुरू से अंतिम तक साथे रहल। प्रत्युष पांडे आईआईटी से इंजीनियर रहन आ आईएएस के तैयारी करत रहन । अनेक गोयल जी आ ईश्वर जी दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर, चेतन जी मुंबई मे आईटी सेक्टर मे काम करत रहीं, चिराग जी के आपन कम्प्युटर के व्यवसाय रहे आ आरएन जी पिरामल मे सुरक्षा अधिकारी रहीं। अनेक गोयल जी हमनी के टीम लीडर भी रहीं। रात के अनहेरिया मे हमनी के आपन टॉर्च के सहारा रहे आ उहे टॉर्च के रोशनी मे अंताक्षरी भइल। फेर बोर्नवीटा पी के सभे केहु जल्दी आपन आपन टेंट मे सुते चल गइल। अगिला दिन जल्दी उठे के रहे। उठ के makeshift toilet मे मर- मैदान भइल आदमी । ओकर बाद चाय आ फेर जल्दी नस्ता कइल गइल। हमनी के आपन आपन टेंट साफ करे के रहे आ जे कंबल आउर सुतेला बैग मिलल रहे उ जमा कइल गइल । दुपहरिया खाती लंच मिलल आ थोरीका देरी बाद आगे खाती प्रस्थान।

सेगली से होरा थैच (10 किमी, 9000 फीट): सेगली से हमनी के करीब 8:30 से 9 बजे तक होरा थैच खाती निकलनी जा। आज रास्ता घना जंगल से हो के गुजरत रहे । आज के ट्रेक तनी आसान रहे । । बाकी दिन के वही प्रोग्राम रहल । दुपहरिया मे एक जगह सब केहु रुकल । लंच खाइल गइल । फेर आगे के चढ़ाई कइल गइल । हमनी के बेस कैंप मे बतावल गइल रहे की जंगल मे चल त प्रकृति के आनंद ल, चिरई के आवाज़ सुन । त प्रकृति के त खूब आनंद लेनी जा बाकी चिरई एको ना लउकली स। लागत रहे की एक साथे हतना आदमी के देख के ओहनी के भाग गइल रही स। लंच बिन्दु प हमनी के करीब 1.5 से 2 घंटा रहनी जा। ओकर बाद

www.bhojpurisahityangan.com

करीब 1 घंट के आउर चढ़ाई क के हमनी के होरा थैच पहुचनी जा। उचाई ओला कैंप सब मे तापमान कम रहेला तबो जब आदमी चढ़ाई करेला तब बहुत पसेना चलेला आ तनिकों ठंडा ना लगेला। बाकी जब कैंप मे पहुचला के बाद सांझ होखेला तब अचानक से ढेर ठंडा लागेला। एहो कैंप मे पिछलके नियन सब व्यवस्था रहे । पहुचला के तनी देरी बाद स्वागत पेय , फेर चाह, फेर सूप आ करीब 7:00 या 7:30 तक खाना । एहिजो सुते वाला बेग मिलल जे मे आदमी बोरा मे बँधाये नियन होके सुतत रहे। एह कैंप के नजदीके एगो छोट झरना रहे। झरना मे हमनी के नेहाए के प्लान बनल । देह गरम रहलही रहे त हमनी के ढेर लोग नहाये चल दिहलस। जब झरना के नीचे खड़ा भैनी त लगल जैसे करेंट लागत होखे। पानी लागत रहे की बरफ होखे । जल्दी जल्दी एक हाली देह भिंजा के बाहर भगनी । बाकी ओहिजा हमार ट्रेकिंग के संघाती अनेक जी फोटो खींचत रहनी । आ ओह फोटो के चक्कर मे तीन बे झरना मे घुसे पडल । तीसरा बेर के बाद कान आ नाक सुन्न हो गइल तब हम कहनी की अब फोटो खिचाओ चाहे न खिचाओ अब झरना में ना घुसब। फेर रात के जब खाना भइला के बाद अंताक्षरी के प्रोग्राम चलल।

होरा थैच से माईली थैच (9 किमी, 10,500 फीट): अगिला दिन भी उहे प्रोग्राम रहल । नित्य क्रिया खतम क के नस्ता कई के लंच ले के हमनी के माईली थैच खाती निकल चलनी जा। रास्ता जंगल से हो के गुजरत रहे बाकी आज के चढ़ाई तनी बेसिये रहे एह से आज जल्दी जल्दी आदमी थकत रहन । कुछ रास्ता तनी खतरनाको रहे । हमरा तनी उचाई से डर लगेला आ आज के दिन अइसन रास्ता रहे कि चले खाती आरी भ के रास्ता आ ओकर बाद गहिर खाई । बाकी भगवान के नाम लेत आ खाई के ओरि बिना देखले रास्ता पार करत गइनी। आज के चढ़ाई के लोकल गाइड लोग "तेल की चढ़ाई" भी बोलेलन जा काहे कि आज चढ़े मे आदमी के तेल निकल जाला। एगो डेग बढावे खाती खूब मेहनत लागत रहे । लंच पॉइंट प लंच क के कुछ ढेर देरी आराम क के हमनी के माईली थैच पहुचनी जा। ओहिजा उहे पुरान प्रोग्राम रहल । पहुचला के तनी देरी बाद स्वागत पेय , फेर चाह, फेर सूप आ करीब 7:00 या 7:30 तक खाना । रात के अंताछरी के प्रोग्राम अब मजगर होखे लगल रहे । एहिजा टेंट एगो छोट मैदान मे रहे । ओह मैदान मे कई गो खेल खेलल गइल। एहिजा से नीचे के घाटी के बड़ा ही मनोरम दृश्य दिखाई देत रहे । जवन दिन हमनी के दौरा पहुंचानी जा ओकर अगिला दिन लोकल लोग के कवनों त्योहार रहे जे मे की उ लोग सौरकुंड मे जा के डुबकी लगावत रहे। त हमनी के कैंप से कुछ और ऊपर लोकल लईकन सब आपन टेंट लगइलन रहन स , रात के ओहनी के टेंट से खूब गावे बजावे के आवाज आवत रहल। आ उसब साचो के कैंप फायर कइलन स। फेर उ सब हमनी के उठे से पहिलही सौरकुंड खाती निकल गइलन स । जब हमनी के अगिला दिन आगे के यात्रा सुरू कैनी ज त ओहनी के लौटत रहन स। देख के लगल की जवान जगह प हमनी के जाए मे हतना दिन लागत ब उ सब एके दिन मे ज के चलिओ अइलन स । बाकी ओहनी के जनम करम एही पहाड़ मे भइल बा आ हमनी के ओकर मुक़ाबला ना कर सकीना सोच के मन के समझाइनि जा। आ हमनी के रास्ता एह तरीका से राखल गइल रहे की बूढ़ा से ले के कमजोर सभे केहु तय क लेवे।

माईली थैच से दौरा थैच (10 किमी, 11,300 फीट): सुबह सुबह आपन रोज के रूटीन पूरा क के दौरा थैच खाती निकलनी जा । एकरो रास्ता घना जंगल से हो के गुजरल। बाकी कुछ देरी चलला के बाद जंगल खतम हो गइल आ खाली घास के मैदान भेंटाइल । एहिजा चढ़ाई थोड़ा कठिन हो गइल, काहे से की उचाई बढ़ गइल रहे। ऑक्सिजन कम आ ठंडा बढ़ गइल

www.bhojpurisahityangan.com

रहे। लंच पॉइंट तक कुछ पेड़ भेंटाइल। जब हमनी के कैंप मे पहुंचनी जा त आ फेर उहे रोज के नियमित प्रोग्राम भइल। एहिजा के प्राकृतिक सुंदरता देखते बनत रहे। एक देने उंच बरफीला पहाड़ नीचे जंगल से भरल घाटी आ बीच मे मैदान। पूरा फिल्मी सीन लागत रहे। वोहिजा मौसम तनी खराब हो गइल। बाकी जतना जल्दी मौसम खराब भइल रहे उतने जल्दी धुंध छट गइल आ सूरज देवता चमके लगले। सभे केहु आपन कैमरा ले के आस पास निकल गइल आ खूब मन भ फोटो खिचल आ खिचवइलस। बरफीला पहाड़ मे डूबत सूरज देखे मे गजबे बढ़िया लागल। अगिला दिन हमनी के सौरकुंडी पास के पार करे के रहे। ओह खाती हमनी के सुबह जल्दी निकले के रहे। हमनी के 5 बजे उठ के 6 बजे तक निकल जाए के रहे। एह से खा पी के हमनी जल्दी से सुत गइनी जा। आज ठंडा व कुछ जादे रहे त ओह दिन अंताछरी के प्रोग्राम ना भइल।

दौरा थैच से सौरकुंडी पास(12900 फीट) होखत लोंगा थैच (10800 फीट) 12 किमी : आज जल्दी उठ के जल्दी निकले के रहे काहे से की अगर सौरकुंडी पास भीरी देरी से पहुंचला प मौसम खराब होखे के डर रहे। एह से सभे केहु जल्दी से तैयार हो के आगे के यात्रा शुरू कइल गइल। आज के चढ़ाई साँचो के चढ़ाई रहे। एकदम सोझ लगभग 70 डिग्री के चढ़ाई रहे। आ उचाई जाड़े होखे के कारण बहुत जल्दी दम फूल जात रहे। हमनी के आराम आराम से चढ़ाई करत रहीं जा। आज के दिन चार गो गाइड लोग रहन जा। शुरू मे समझ मे न आइल कि अतना गाइड काहे। बाकी कारण आगे जा के समझ मे आइल। तनिका सा उचाई आउर पहुंचला प दू चार कदम चढ़ते सांस फुले लागे। गाइडे लोग बोलले कि जल्दी जल्दी मत चढ़ जा। आराम आराम से एगो लय मे चढ़ जा। कुछ आगे पहुच के एगो चट्टान के पट्टी भेटाइल। एहिजा एक पत्थर से कूद के दोसर प जाए के रहे आ एही तरीका से पार करे के रहे जे के बहुत कठिन बुझाइल। एहिजा समझ मे आइल कि चार गो गाइड कहे दिहल गइल रहे आज। चरो गाइड लो कुछ कुछ दूरी प खड़ा हो के हाथ ध के सबके पार करावे लगलन जा। एहिजे पहिला बेरा बर्फ दिखाई देलस। दू को पत्थर के बीच मे जमल रहे आ ओह प चढ़ के जाए के रहे। खैर चारो गाइड लोग के मदद से सब केहु सुरक्षित पत्थर के पट्टी पार कर गइल अब आगे के रास्ता बढ़ते ही बर्फ लौके लागल। ओकरा कुछ आगे जा के हमनी के लंच पॉइंट रहे। आज पानी के कमी रहे। रास्ता मे कवनों पानी के श्रोत ना भेटाइल आ कठिन चढ़ाई होखे के कारण पियासो ढेर लागत रहे। बाकी हमनी के बेस कैंप प सिखावल गयील रहे की जब पानी के कमी होखे आ गरदन सुखत होखे त एक घोट पानी मुह मे कुछ देरी रखे के चाही। एह से गर्दन के सुखाइल कम हो जाला आ कम पानी मे काम चल जाला। लंच पॉइंट तक जाए के क्रम मे गाइड लोग से पता चलल की सौरकुंडी तालाब से पहिलही सौरकुंडी पास बा जहां से नीचे उतरे के होखी। बाकी उ लोग कुछ पैसा लिहे जा औरी हमनी मे से कुछ लोगन के सौरकुंडी झील तक ले जयही जा। तब हमनी के ग्रुप मे तय भइल की कुल 10 लोग जे की अपेक्षाकृत फिट रहे उ सब मिल के झील तक चलल जाओ। जब हमनी के लंच पॉइंट प पहुंचनी जा ओह घरी मौसम खूब खराब हो गइल। आँधी पानी आ बर्फ गिरे लागल। सभे केहु छुपे के कोई जगह ढूँढे लगल बाकी उ एगो सपाट जगह रहे। आ पेड़ त ढेर पहिलही खतम हो गइल रहे। सभे केहु कयिसहूँ रेनकोट आ प्लास्टिक ओढ़ के अपना के बचावल। ओहि घरी गाइड लोग कहलन जा की जेकरा झील प जाए के बा उ लोग चली जा। धुंध के से बाकी लोगन के पता न चली की हमनी के कहा जात बनी जा। त हमनी के ओहिजा से तेजी से निकल चलनी जा। हलकी तेजी से चलल आसान ना रहे तबों मजबूरी रहे। आगे सीधा चढ़ाई रहे आ जल्दी से जाए के रहे आ वापस आवे के रहे। आगे मौसम तनी आउर खराब हो गइल। पानी बर्फ मे बदल गइल। हमनी के जाकेट के ऊपर से बरसाती कोट पहिनले रहीं जा त पानी से बचाओ रहे बाकी बर्फ फाहा लेखा ना हो के महीन ओला नियन रहे जे चेहरा प लगे त चोट लागत रहे। कुछ ऊँचाई के बाद पूरा बर्फ मिले लागल आ हमनी के बर्फ प चले लगनी जा। पहिले त कुछ मीटर उतरे के रहे फेर आगे जा के एगो पहाड़ी के पार केरे के रहे। पहाड़ी पूरी तरह से बर्फ से ढकल आ ढलान करीब 60 से 70 डिग्री रहे। ओह ढाल ऊपर न जा के तिरछे आगे जाए के रहे। ढाल नीचे ढेर गहिर रहे। गिरला प चोट लगे के डर त ना रहे बाकी बहुत नीचे फिसल जाए के जरूर रहे।एह तरह से दु गो पहाड़ी पार कर के हमनी के सौरकुंडी झील प पहुंचनी जा जे की लगभग 80% जमल रहे। ओहि झील से पानी भर के पियल गइल आ आगे खाती भी ले लियाइल। लौटे घरी फेर उहे पहाड़ी पार करे के रहे बाकी अबकी तनी कम डर लागल। जब हमनी लौट के अईनी जा त पता चलल की बाकी लोग भी तुरंतही पहुंचल बा ओहिजा। आ केहु हमनी से इ ना पुछल की हमनी के कहा गइल रहीं जा। सभे केहु प्रकृति के आनंद लेवे मे लागल रहे। ओहिजा हमनी के 12800 फीट के ऊंचाई प रहीं जा। चरों ओरी बरफ से धन्कायिल पहाड़ के चोटी लउकत रहे। गाइड लोग कुछ के नामो बतवले जा जे की अब मन नईखे परत।

www.bhojpurisahityangan.com

हमनी के किस्मत भी बढ़िया रहल की ओह घरी मौसम पूरा साफ हो गइल । जे से आस पास के दृश्य आउर सुंदर आउर साफ लउके लागल। ताजा धूप खिल गइल जेह से ठंढा भी कम हो गइल । ओहिजा उ चार गो गाइड लोग हमनी से बिदा लेले आ एगो दोसर गाइड के हवाले कईले जे की हमनी के नीचे ले के जाइत। ओहिजा सभे केहु के एगो ग्रुप फोटो भइल आ फेर आगे के यात्रा शूरू भइल । ओहिजा नीचे जाए खाती कुछ दूरी बर्फ प सरक(slide) के गईनी जा । कोई बहुत ज्यादा ऊंचाई त न रहे बाकी मजा बहुत आइल। कुल मिला के सरकला से अइसन लागल जैसे जे थकान रहे उ सब खतम हो गइल। अब आगे खाली उतरे के रहे । कुछ दूर उतरतही बर्फ खतम हो गइल। ओकर बाद एगो तीखा ढलान वाल जगह आइल जेकरा के रस्सी के सहारे पार करे के रहे। रस्सी पहिले से बंधल रहे। उ रस्सी के ध के हमनी के धीरे धीरे उतरनी जा । कुछ दूर के बाद बुरांश के फूल के झाड़ी मिले लगल। गाइड हमनी के दूर पहाड़ी प एगो पियर टेंट दिखा के बोललस की पगडंडी धईले ओहिजा तक पहुँच जा। इ कुछ चढ़ाई कुछ उतराई वाला रास्ता रहे बाकी लगभग समतल ही रहे । अच्छा खासा दूरी चलला के बाद टेंट लउकल । ओहिजा पहुँच के हमनी के हालत खराब रहे पानी जे भर के ले आइल रहीं जा उहि खतम हो गइल रहे । टेंट प पहुँच के पता लागल की उ एगो दुकान रहे जहाँ कुछ खाये पिये के मिलत रहे । हमनी के सभे केहु पहिले त पानी पियलस फेर मैगी खाइल गइल आउर माजा पियल गइल । ए सब कईला के बाद असली उतराई शुरू भईल। पहिले लागत रहे की चढले खाली भारी होखेला बाकी आज पता लगल की उतरल चढ़े से जादे भारी होला। उतराई भी बड़ी तीखा रहे । कतना लोग गिरते गिरते बचलन। जब ढेर नीचे पहुँचनी जा त ओहिजा धुरभूर माटी रहे जेह प फिसले के जादे संभावना रहे । कुछ लोग फिसलबो कइलस। लौंगा पाहुचला प सभे केहु के हालत खराब रहे एह से सभे केहु आपन आपन टेंट मे आराम करे चल गइल। सुबह उठ के आज आराम से जाए के रहे ।

लोंगा थैच से लेखनी (8001फीट)10 किमी : लौंगा थैच से हमनी के आराम से चलनी जा एह से की आज जादे देरी के ट्रेक न रहे (करीब 4 घंटा) । आज खाली उतरे के रहे । चढ़े मे आदमी के मेहनत लागेला बाकी उतरे मे ठेहुन आ गोड़ के अंगूरी प ढेर जोड़ परेला। जब हमनी के लेखनी पहुँचनी जा त पता चलल कि ए एगो लकड़ी आ पत्थर के मकान रहे जेकरा हाता मे नासपाती आ सेब के गांछ लगवाल रहे । जब आराम करे खाती बैठनी जा त जांघ में के दरद बुझाइल। ए दर्द अतना तेज रहे कि लागे कि दवाई खाये के पड़ी । बाकी हम वज्रासन बैठ के एकरा के दूर करे के सोचनी। वज्रासन मे बैठला प लागल जैसे जांघ मे सुई चुभत होखे, बाकी 15 मीनट तक बैठला क बाद जांघ ढीला भइल आ दर्द से व बहुत आराम मिलल।

लेखनी से अलू ग्राउंड (मनाली) आ ओहिजा से बस से बेस कैंप: नास्ता क के आ टिफिन ले के हमनी के आपन अंतिम दिन के यात्रा शुरू कईनी जा। आज हमनी के बहुत कम लोग रहीं जा काहे कि अधिकतर लो एक दिन पहिलही बेस कैंप पहुँच गइल रहे । ओहिजा कोई नया टीम जाए वाला न रहे एह से धीरे धीरे टेंट उखड़ल जात रहे । ओहि दिन हम सांझ के दिल्ली खाती बस पकडनी आ फेर ओहिजा से वापस कलकत्ता।

एह तरह से हमार पहिला ट्रेक खतम भइल । एह ट्रेक मे कई गो नया साथी मिललन जा जिनका से आजों ओहिसही दोस्ती बा। एह ट्रेक्किग मे कई गो चीज सीखे के मिलल जैसे कि कही भी जा त पूरी तरह से तैयारी क के जा । अपना ऊपर एगो नया कॉन्फ़िडेंस आइल।

ट्रेक्किग प जाए वाला लोग के कुछ सलाह : जतना हो सके कम समान ले के जाई । बढ़िया ट्रेकिंग जूता खरीद के जाए के पहिले करीब 15 दिन से 1 महिना ओकरा के पहिन के घूमीं फिरीं । ट्रेकिंग प जाए से एक महिना पहिले कुछ कसरत करीं , खास क के दौड़ आ सांस खाती प्राणायाम । पहाड़ प कोई anti-fungal dusting powder जरूर ले जा आ मोजा पहिने से पहिले बढ़िया से गोड़ मे चारो तरफ लगावे के चाहीं । छोट makeshift toilet मे या बाहर खुला मे मैदान जाए खाती अपना के मानसिक रूप से तैयार क लिहि। ट्रेकिंग पूरा त सभे केहु क लेवेला। जे तैयारी क के जाला उ मज़ा से आ जे बे तैयारी के जला उ रो रो के । एह से शारीरिक रूप से अपना के जरूर तैयार का लीही।

www.bhojpurisahityangan.com

हथेली में समय-5

कहानी अब ले – कालिका चरण लाल के जिनगी ऑफिस से घर में आ के सिमट गइल रहे , उ लड़िकन के आगे बढ़ावे पर ध्यान देत रहले । द्वारिका प्रसाद सामाजिक क्षेत्र में आगे बढे खातिर संघर्ष करत रहले। इंद्रपुर कवनो एक खास जगह नइखे, ई ओह समय के निम्न मध्यम आ माध्यम वर्ग के आशा, आकांक्षा, निराशा आ संघर्ष के प्रतीक बा। आजादी के तुरत बाद चुनावी माहौल में सिद्धांत रहे लेकिन ओकरा अंदर जातिगत राजनीति भी शेर के खाल में भेड़ीया अइसन छिपल रहे। **अब आगे पढ़ीं....**

बाबू कालिका चरण लाल नौकरी से अवकाश ले लेहले रहले आ आपन सब जिम्मेवारी के बोझ द्वारिका के कन्धा पर डाल के पूरा दिन 'पेशेंस' खेलस आ शाम के तैयार होखे लागस क्लब जाये खातिर अपना साथी लोग के साथे शतरंज खेले। शाम के हाथ में आपन छड़ी लेहले ऊ खट-खट करत चल जास इंद्रपुर बाज़ार के दक्खिनवारी छोर पर जहाँ क्लब रहे, आ पीछे पीछे जाव उनकर पोंसल पियर पर उजर रेघारी वाला बिलार जेकर नाम ऊ भोला रखले रहले। आ जब नौ बजे रात के लौटस तब उनका आवेके पहिलहीं ऊ खिड़की से कूद के अन्दर आ जाव आ लागे दरवाजा के हिलावे, ऊ बता देवे घर के लोग के कि अब अकाउंटेंट बाबू घरे पहुँच गइनी। एक जमाना में ऊ क्लब इंद्रपुर एम्प्लोयीज क्लब के नाम से जानल जाव जेकर नींव मि० सैम रिचर्ड्स, अँगरेज़ साहेब, रेवेन्यु बोर्ड के मेम्बर डलले रहले। ब्रिटिश उपनिवेशवाद के अंत भइला के बाद ऊ इंगलैंड वापस चल गइले आ अपना पीछे छोड़ गइले चौबीस आलमारी किताब, एगो बिलिअर्ड्स टेबल आ तीस हज़ार रूपया। कुछ दिन तक क्लब के सामान बकिंघम स्कूल के पछिमवारी हिस्सा में रखल रहे। क्लब के नया जगह पर ले अइला पर बिलिअर्ड्स टेबल के बदला आ गइल ताश के खेल ब्रिज जे बाबू द्वारिका प्रसाद आ बाबू कालिका चरण लाल दूनू जाना के पसंद रहे आ दूनू जाना ओकरा के खेले में माहिर रहे लोग। ओ लोग के दिमाग वाला खेल ब्रिज आ शतरंज पसंद रहे काहेकि उ लोग तर्क पसंद लोग रहे। आ ओ लोग के ई स्वाभाव आजादी मिलला के बाद वाला समय में ओ लोग के राजनीतिक चयन में देखे के मिलल।

1952 के पहिलका आम चुनाव के समय द्वारिका जवान हो गईल रहले, पूरा उत्तसाहित आ अपना राजनीतिक रुझान में प्रतिबद्ध रहले। ऊ अपना साथी पंडित मंगल दत्त के चुनाव प्रचार में जी जान से लाग गइले। पंडित मंगल दत्त बहुत नामी सुराजी रहले आ लोग के सहानुभूति उनके तरफ रहे लेकिन मतदान के एक हफ्ता पहिले उनकर प्रतिद्वंदी सुरेन सुंदर अइसन चाल चलले कि पंडित मंगल दत्त 59 वोट से चुनाव हार गइले। एकर कारण भइल जात-पात के राजनीति। सुरेन सुंदर एक ख़ास जाति के पतिनिधि रहले आ ऊ अपना जाति के गुहार लगवले आ चुनाव जीत गइले। पंडित मंगल दत्त जिनगी में आपन हार कबो ना भुलइले, ऊपर से एक हसीं मजाक के पर्दा डलले रहस लेकिन एकर टीस जिनगी भर रहल। 1957 के आम चुनाव में भी उनका हार के मुंह देखे के पडल। 1962 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर ऊ चुनाव जीत गइले आ बाद में कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गइले आ उहे उनकर राजनितिक जीवन के अंत के कारण भइल

पंडित मंगल दत्त बहुत नामी सुराजी रहले आ लोग के सहानुभूति उनके तरफ रहे लेकिन मतदान के एक हफ्ता पहिले उनकर प्रतिद्वंदी सुरेन सुंदर अइसन चाल चलले कि पंडित मंगल दत्त 59 वोट से चुनाव हार गइले।

अनिल प्रसाद

मूलतःहथुआ, बिहार के रहेवाला हयीं। अंग्रेजी साहित्य में शोध। साहित्य अकादमी खातिर यशपाल के 'झूठा सच' के कुछ अंशन के अंग्रेजी में अनुवाद। भारत, मिडिल ईस्ट, अमेरिका, चाइना, कनाडा अउरी ऑस्ट्रिया में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनन में पेपर प्रेजेंटेशन अउरी कविता पाठ।अंग्रेजी, हिंदी अउरी भोजपुरी में लेखन। यमन, लीबिया, पटना अउरी मुंबई के विश्वविद्यालयन में अध्यापन। सऊदी अरेबिया में अंग्रेजी भाषा आ साहित्य के प्रोफेसर बानी।

रहे। 1957 के चुनाव में उनकर मुकाबला सत्य बिहारी वर्मा से रहे। सत्य बिहारी वर्मा आजादी के लड़ाई के दौरान अंदमान निकोबार के सेलुलर जेल में सजा भी कटले रहले । पंडित मंगल दत्त भी 1942 के अगस्त क्रांति के समय जेल में रहले। 1962 के चुनाव में बाबू कालिका चरण के घरे पंडित मंगल दत्त, सुरेन सुंदर आ सत्य बिहारी वर्मा तीनो आदमी राती खान ठहरे लोग आ सबेरे अपना अपना चुनावी प्रचार में चल जाव लोग।

बाबू कालिका चरण लाल के द्वारिका के राजनीति में सक्रिय भाग लेहल तनिको पसंद ना रहे। लेकिन द्वारिका खातिर राजनीति उनका के समाज में पहचान बनावे के माध्यम रहे। इ बात कि द्वारिका सरकारी नौकरी ना कर सकले कलिका बाबू के मन के मलाल के कारण रहे जे कभी-कभी उनकर द्वारिका के साथे राजनितिक बहस में उलझे के कारण बन जाव। कलिका बाबू के एगो आदत रहे जे उनका क्रोधित भइला पर सामने आवो – ऊ भोजपुरी में बात करत करत गुस्सा चढला पर अंग्रेजी में बात करे लागस। जब जब उनका गुस्सा आवे त ऊ जहाँ भी रहस उहें चाहे कचहरी में, क्लब में आ चाहे द्वारिका से राजनितिक बहस होत होखे त अंग्रेजी में बोले लागस।।

एक दिन के बात ह ऊ दूनू बाप बेटा सबेरे सबेरे बरामदा में बइठ के दाढ़ी बनावत रहे लोग। ओहिबेरा घर के नौकर जेकरा के लोग मजाक में दही-चिउरा कहे आके कहले कि केहू मेन दरवाजा खटखटा रहल बा। दरवाजा खोलाइल त सामने नारायणी प्रसाद खड़ा रहले, उनका चेहरा पर चिंता साफ़ झलकत रहे। नारायणी प्रसाद द्वारिका के खास दोस्त रहले ऊ द्वारिका के दू गो अउर दोस्त हक़ साहेब आ गोपाल जी बाबू के साथे रोज शाम के बाजार में बइठस। बाद में द्वारिका बाबू मास्टरी छोड़ के व्यवसाय करे लगले तबो ऊ रोज शाम के बैठकी में आवस। उनकर व्यवसाय द्रोनापुर, अलियारा आ गोला गंज, तीनो जिला में फइलल रहे।

नारायणी प्रसाद के इतना सबेरे आवेके कारण ई रहे कि जाति के राजनीति के जे हवा चलल रहे इंद्रपुर में ओहिसे ऊ चिंतित रहले आ ओकर ताजा स्थिति के अपना दोस्त द्वारिका बाबू के बतावल ऊ बहुत जरूरी समझले। उनका पता लागल रहे कि एक ख़ास जाति के लोग सुरेन्द्र सुंदर के वोट देबे के निश्चय कईले रहे लोग जे कांग्रेस के उम्मीदवार रहले। बाकि लोग जे प्रतिबद्ध बा ओकर वोट पंडित मंगल दत्त आ सत्य बिहारी वर्मा के बीच में बट जाई। आ ओकर नतीजा ई होई कि सत्य बिहारी वर्मा भी ना जीत पईहें। बाबू कालिका चरण लाल सत्य बिहारी वर्मा के पक्षधर रहले आ द्वारिका बाबू पंडित मंगल दत्त के। कलिका बाबू आ द्वारिका में मित्रता के प्रति वफादारी के गुण कूट-कूट के भरल रहे। **(क्रमशः)**

www.bhojpurisahityangan.com

पाठक कोना

राउर बात

रोजे रोज चाहे हर एक दिन बिच कर के कउनो न कउनो नया अवतरित भइल पत्रिका भा स्मारिका में लिखे के फोन आवेला।लिखिना तो ना लेकिन सवाल खूब पुछिना । जइसे कि विषय बताइ । शब्द सीमा बताई । वगैरह वगैरह । अधिकाँश लोग-हे हे कई के दांत निपोर देबेला कि अजी विषय अउर शब्द सीमा का होला।जे विषय पर समझ में आवे,जेतना लमहर समझ में आवे,रगड़ दीं । ओह कुल नवहर पत्रिका के बिच में आखर भी बा । जेकर विषय के सूचि आवेला लिखेवाला लोग के बिच । डेड लाइन तय रहेला । शब्द सीमा भी । लेख लिखला के बाद एकर संपादक मंडल के लोग ओह लेख पर मेहनत करेला । सुधार करेला । संपादित करेला । जवन तरीका बा आखर पत्रिका के निकाले के,उ कउनो पेशेवर पत्रिका के पत्रकारिता लेखा बा । अउर एही वजह बा कि आखर में लिखे खातिर मन में उत्साह के भाव रहेला।आखर में लिखला के बाद मन में बहुत संतोष के भाव रहेला । आपन भाषा में पत्रकारिता अउर लेखन करे के संतोष अउर खुशी के विकल्प भी नइखे ।

● निराला

समीक्षा त बाद में होई, बाकिर एह पत्रिका में आपन माटी के खुशबू बा । विषय वस्तु चुने में भी बड़ा सावधानी बरतल गइल बा । "आखर" देख के हमार पुरान दुःख उभर गइल कि अबही ले हम M.A. ना कर पइनी. भोजपुरी से M.A. करे के हमार सपना फेर से हिलोर मारे लागल बा ।

● कौशल किशोर- न्यूज़ डेस्क, प्रभात खबर राँची

ये बहुत अच्छा प्रयास है. क्षेत्रीय भाषाओँ में अधिक से अधिक लिखा जाये, ताकि क्षेत्र की आम जनता भी उसे पढ़ सके ।

● बालेन्दु शेखर मंगलमूर्ति

आखर के जुन वाला अंक पढला के बाद से अईसन लागताहम जहाँ भी बानी उहा अपना घर बधार के साथ मिलकर बानी और उहे गवई स्वाद मिलता !

● रजनीश पाण्डेय, पुणे

आखर जून अंक में छपल बियाह गीत हमार बियाह में 1970 में ,गवाइल रहे ; भोजपुरी के मिठास याद दियावे ला आखर के धन्यवाद ।

● एस. के. चौबे , पटना

"आखर" , एक खूबसूरती, एक क्रांति, एक आंदोलन हो तुम । मैं कौन हूँ ? किस जिम्मेदारी से इस दुनिया में भेजी गई हूँ ? इसका जवाब हो तुम !

● कल्पना पटवारी, भोजपुरी गायिका

भोजपुरी साहित्य के संभारे खाती आ नया ऊंचाई देवे खाती राउर सहयोग के जरूरत बा । भोजपुरी में लिखीं आ "आखर" के साथे भोजपुरी साहित्य के बढ़ावे में सहयोग करीं ।

~आखर परिवार

लेखक कोना

निहोरा

जय भोजपुरी,

माई, मातृभाषा आ मातृभूमि के कवनो विकल्प नइखे। इनका आँचर के नीचे जवन सुख के अनुभुति होखेला ऊहे स्वर्गिक सुख हऽ। रोजी-रोटी के मजबूरी में ना चाहते करीब सभे अपना माई आ माटी से दूर बा। एह कमी के तऽ ना भरल जा सकेला बाकि मातृभाषा से दूरी के पाटे के काम आखर करत बा।

आखर के नींव भी एही उद्देश्य के पूरा करे खाति रखल गइल बा। आखर रउआ सभे से बा, रउआ सभे खाति बा। इ राउर आपन मंच हऽ जहाँ रउआ आपन माई, माटी आ मातृभाषा भोजपुरी से जुड़ल अनुभव यथा -कथा कहानी, व्यंग्य, संस्मरण, रिपोतार्ज, गीत-ग़ज़ल, कविता, चित्रकारी भेज सकत बानी।

भोजपुरिया क्षेत्र , समाज आ भोजपुरी भाषा , आजादी के पहिले से भारत के स्वतंत्रता खाति भारत देस के आजादी खाति हर मोर्चा प तन मन धन से समर्पित रहे आ आजूओ समर्पित बावे । भोजपुरी भाषा मे देस के आजादी खाति कतने लोकगीत लिखाईल बा , ओह लोकगीतन के तासीर अईसन कि 1857 से ले 1947 ले भोजपुरिया माटी एक से बढ के एक क्रांतिकारियन के जन्म देहलस ।एकरा बादो भोजपुरी भाषा के संवैधानिक रुप से आजू ले मान्यता ना मिलल । अगस्त महीना मे परेला एगो बहुत पावन आ पवित्र त्योहार " राखी (रक्षा बंधन) " । भाई बहिन के अथाह मित्रता नेह छोह प आधारित ई त्योहार जहा भाई बहिन के रिश्ता के एगो बड़हन आ पवित्र उंचाई देला ओजुगे बहिन खाति भाई के फर्ज के भी मन परावेला ।

आखर के अगिला अँक (अगस्त 2015) , भारत के स्वतंत्रता मे भोजपुरी भाषा , भोजपुरिया क्षेत्र आ भोजपुरिया माटी के योगदान प रही , संगे संगे एगो भाषा के रुप मे भोजपुरी के अभी ले संविधान मे आपन स्थान ना मिलल एह प आधारित रही । भोजपुरी संविधान के सुची , आखिर कब ? भोजपुरी के संविधान मे शामिल भईला से का फायदा रही आ भोजपुरी भाषा संविधान मे आई त एकर का का सकारात्मक असर भोजपुरिया क्षेत्र आ लोगन प होई । भोजपुरिया क्षेत्र मे राखी के पवित्र बंधन आ एकर महत्व एहि कुल्हि मुद्दन प आखर के अगस्त अंक केंद्रित बा । रउवा सभ से निहोरा बा कि आपन अगिला लेख एहि बिंदुअन प केंद्रित कई के लिखी जवना से बेसी से बेसी लोग भोजपुरी भाषा आ क्षेत्र के इतिहास आ वर्तमान से आपन परिचय करा सको

रचना भेजे के कुछ जरूरी नियम -

- आपन मौलिक रचना युनिकोड फॉन्ट/कृतिदेव फॉन्ट में टाइप करके भेजीं ।
- रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार अपने से प्रूफ रीडिंग जरुर कर लीं । कौमा, हलंत, पूर्णविराम पे विशेष ध्यान दीं । रचना में डॉट के जगहा सिर्फ पूर्णविराम राखीं ।
- ध्यान रहे राउर रचना में कवनो असंसदीय आ अश्लील भाषा भा उदाहरण ना होखे ।
- राउर रचना के स्वीकृति के सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
- रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज के फोटो आ आपन परिचय (नाम, पता, कार्य आ आपन प्रकाशित किताबन के बारे में यदि होखे त) जरुर भेजीं ।
- रचना भेजे के पता बा- aakharbhojpuri@gmail.com
- पत्रिका खातिर राउर हाथ के खींचल फोटोग्राफ, राउर बनावल रेखाचित्र, कार्टून जे विभिन्न विषय के अनुरूप होखे, उहो भेजीं |
- छोट-छोट लईकन के कलाकारी के भी प्रोत्साहित करे खातिर स्थान दियाई | ओहनी के लिखल रचना भा चित्र भेजीं |

www.bhojpurisahityangan.com

आखर

भोजपुरी ई -पत्रिका

ISSN 2395-7255
9 772395 725004

ISSN 2395-7255